CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1996

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1996

Contents

29 February 1996 Vol. 9 No. 1

31 March 1996 Vol. 9 No. 2

31 May 1996 Vol. 9 No. 3

30 June 1996 Vol. 9 No. 4

31 August 1996 Vol. 9 No. 5

30 September 1996 Vol. 9 No. 6

30 November 1996 Vol. 9 No. 7

31 December 1996 Vol. 10 No. 8

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

खंड-9 अंक-1 29 फरवरी '1996 10 फाल्गुन, शक 1917



राष्ट्रीय मनवाधिकार आयोग के अध्यक्ष श्री रंगनाथ मिश्रा, के.रि.पु. बल द्वारा मानवअधिकारों पर आयोजित सेमिनार को संबोधित करते हुए



के.रि.पु. बल के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 25वें बैच की दीक्षांत परेड का निरीक्षण करते हुए मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री मोहम्मद शफी कुरैशी

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-9 अंक-1
29 फरवरी, 1996
10 फाल्गुन, शक 1917

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र संकलन
एस.के. खन्ना

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय-सूची



सम्पादकीय

गणतंत्र दिवस ’96 परेड में बल के दस्ते

के.रि.पु. बल की 56वीं वार्षिक परेड

के.रि.पु. बल कल्याण प्रदर्शनी

“पुलिस समाज के दोस्त के रूप में कार्य करे”

के.रि.पु. बल अधिकारियों की दीक्षांत परेड

श्री ताशी दावा, बिहार सेक्टर के नए महानिरीक्षक

संक्षिप्त समाचार

सम्पादकीय

मानव अधिकार किसी भी मनुष्य को एक सम्मान भरी जिंदगी जीने के अधिकार का ही दूसरा नाम है। इसमें संविधान प्रदत्त मूल अधिकार तथा मानव होने के नाते मिले नैसर्गिक अधिकार स्वत: शामिल हो जाते हैं। इनमें से किसी भी एक अधिकार का हनन, व्यक्ति के सम्मान, उसकी सुरक्षा और नागरिक होने की उसकी गरिमा का हनन है।

किंतु प्रश्न यह है कि क्या मानवअधिकारों के नाते हर नागरिक, हर व्यक्ति अपने इन अधिकारों का किसी भी तरह, किसी भी प्रकार प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र है। क्या एक जिसे अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है, उससे किसी दूसरे के अधिकार का हनन तो नहीं होता। जीवित रहने के अधिकार, सम्मान के साथ जीवित रहने के अधिकार का जब मानव अधिकारों से संबंधित बहस इस बिंदु पर पहुंचती है, तब ही देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था में व्यस्त तथा आतंकवादी गतिविधियों से निबटने में लगी देश की पुलिस तथा अर्द्धसैनिक बलों की भूमिका चर्चा का विषय बनना शुरू हो जाती है। मानव अधिकार किसी भी प्रकार की हिंसा से मुक्त एक समाज की स्थापना का स्वप्न है। किंतु हिंसा में बुरी तरह लिप्त तत्वों से निबटने में व्यस्त सुरक्षा बल क्या अहिंसक रह कर इस स्वप्न को पूरा कर सकते हैं।

जब मानव अधिकारों की चर्चा यहां आ कर अटकती है, तभी आवश्यकता पैदा होती है-मानव अधिकार-पुलिस तथा केंद्रीय अर्द्ध सैनिक बलों की भूमिका-जैसे विषयों पर विचार गोष्ठियां आयोजित करने की।

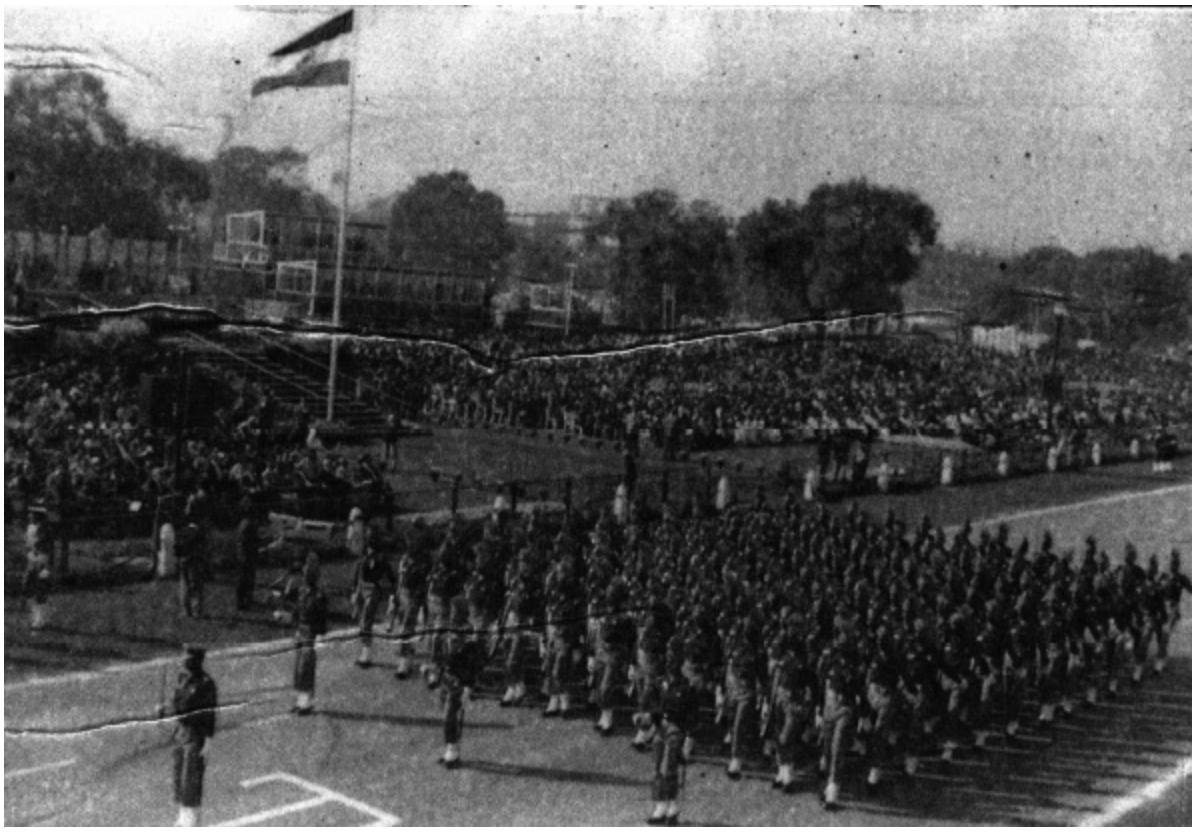
इस संवेदनशील तथा सामयिक विषय पर विचार करने के लिए फरवरी के आखिरी हफ्ते में के.रि.पु. बल ने दिल्ली में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया। गोष्ठी में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष श्री रंगनाथ मिश्रा, अल्प संख्यक आयोग के अध्यक्ष मोहम्मद सरदार अली खान तथा प्रभाष जोशी, मशीरुल हसन, वेद मारवाह, न्यायमूर्ति राजिंद्र सच्चर और डा. प्रोमिला कपूर को सुनना जहां सुखद लगा वहीं उनके विचारों ने श्रोताओं को कहीं गहरे तक उद्वेलित भी किया। आशा है इस गोष्ठी द्वारा अर्जित ज्ञान के प्रकाश में विकट स्थितियों में कार्य कर रहे हमारे कार्मिकों के लिए एक नए आलोक पथ का सृजन होगा।

पूरी विचार गोष्ठी का सार न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्रा की इस टिप्पणी में समाहित किया जा सकता है-कि पुलिस को समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को हर सूरत में याद रखना चाहिए, भले ही वह कितनी ही विपरीत स्थितियों में कार्य क्यों न कर रही हो। उनका कहना था कि पुलिस का उद्देश्य कम से कम बल प्रयोग द्वारा समाज में अनुशासन तथा शांति बनाए रखना है। उन्होंने कहा कि दो बातों को हमेशा याद रखे-एक अपने व्यवहार में सहृदयता लाएं तथा हर व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध करें क्योंकि हमारा काम इस समाज तथा उन आदर्शों को

बनाए रखना है, जिनके दम पर भारतीय समाज खड़ा है।

इस गोष्ठी के दूरगामी परिणाम हासिल होंगे इसकी हमें आशा है। महिला बटालियन तथा आर.ए.एफ. के गठन के बाद स्थितियों से जिस मानवीय आधार पर निबटने की महारत हमें हासिल है, उतनी शायद देश में किसी और बल को नहीं, मगर फिर भी समाज तथा उसके संगठित स्वरूप को बनाए रखने के लिए व्यस्त सुरक्षा बलों को लगातार मानव अधिकारों पर संवेदनशील बनाए रखने की जरूरत है, और यह जरूरत ही इस प्रकार की विचार गोष्ठियों की सार्थकता भी सिद्ध करती है।

गणतंत्र दिवस - 1996 परेड में के.रि.पु.बल के दस्ते



गणतंत्र दिवस *'96* परेड के दौरान सलामी मंच के सामने से गुजरता के.रि.पु. बल का दस्ता

अपनी भारी पारिचालनिक व्यस्तताओं के बावजूद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के तीन दस्तों ने इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया। इनमें एक दस्ता रेपिड एक्शन फोर्स महिला कर्मियों का, एक के.रि.पु. बल जवानों तथा एक दस्ता बैंड वादकों का

था।

के.रि.पु.बल के पहले दस्ते में बल की रेपिड एक्शन फोर्स की 144 महिलाकार्मियों का नेतृत्व डिप्टी कमान्डेन्ट राखी साही तीन सब इंस्पेक्टरों के साथ कर रही थीं। इस दस्ते में शामिल बल की महिला कर्मियों का औसत कद 5.6 फुट था। ये महिला कार्मिक नीले छापे वाली डांगरी पहने थीं, जिसकी बांयी बाजू पर आर.ए.एफ. का प्रतीक चिह्न बना था। वे काली बेल्ट, सफेद कलगी वाली नीली बैरेट कैप पहने थीं। बल के इस दस्ते के लिए पूरे देश में फैली आर.ए.एफ. युनिटों से महिला कर्मियों का चुनाव किया गया था।

बल के आर.ए.एफ. महिला दस्ते के पीछे बैंड दस्ते में इंस्पेक्टर मस्तराम के नेतृत्व में 105 बैंड़ वादक थे। श्री मस्तराम गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने की अपनी रजत जयंती पूर्ण कर चुके हैं।

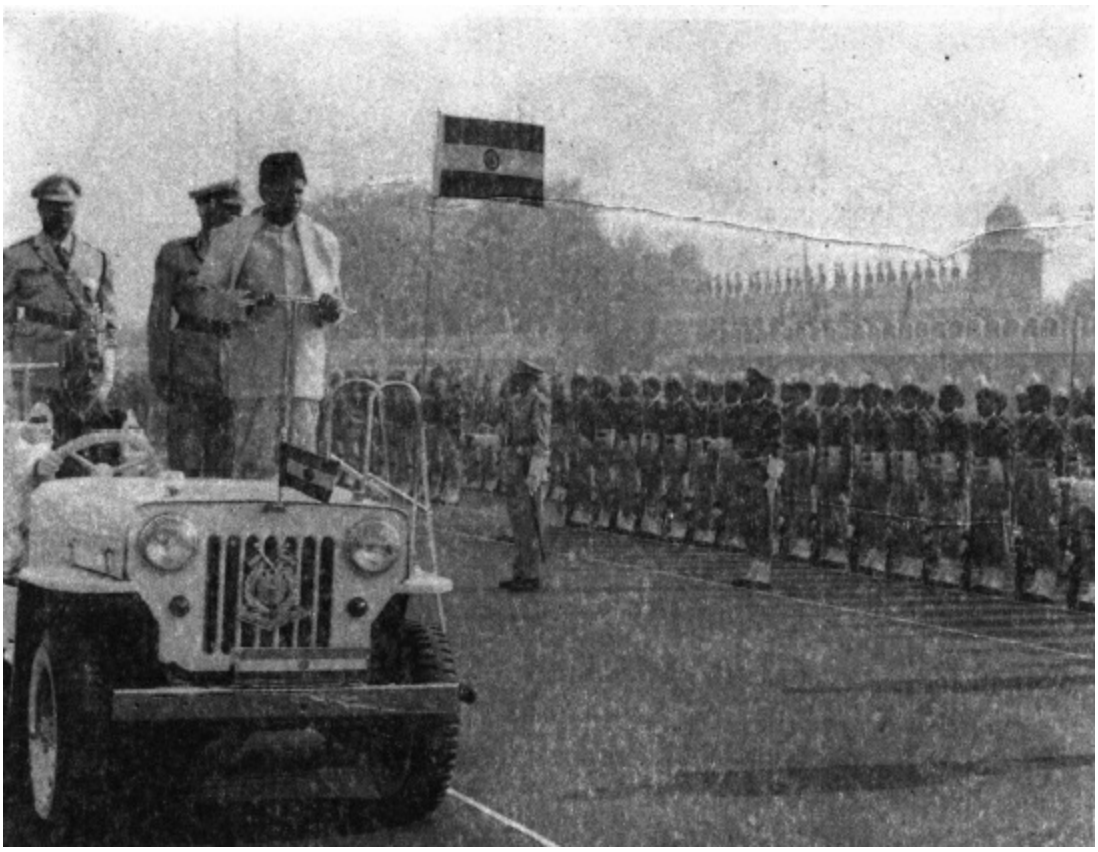
के.रि.पु.बल बैंड के पीछे सहायक कमान्डेन्ट पी.आर. जामबोलकर के नेतृत्व में तीन उपनिरीक्षकों तथा 144 अन्य रैंकों के जवानों का एक माचिंग दस्ता था। इस दस्ते में शामिल जवानों का औसत कद छ: फुट था।

अंगोला कमीजों तथा खाकी पैंटों में सज्जित बल की मार्चिंग टुकड़ी के जवानों की गहरी नीली पगड़ियों पर आसमानी रंग का तुर्रा था, जिस पर सुनहरे रंग की झालर थी। हर जवान की कमीज की बांयी बाजू पर के.रि.पु.बल का हल्के नीले रंग का प्रतीक चिह्न बिना था और नीले कमरबंद पर सफेद चमड़े की पेटी बंधी थी। वे गले में बल के प्रतीक चिह्न वाला नीले रंग का स्कार्फ भी बांधे थे।

बल के ये दस्ते राजपथ से के.रि.पु. बल के कथानक गीत “सेवा भक्ति का यह प्रतीक सी.आर.पी.एफ कहाता है” की धुन पर मार्च करते हुए गुजरे। मार्चिंग दस्तों के कमांडरों के हाथों में चमचमाती तलवारें थीं, जबकि दस्ते के अन्य सदस्यों के हाथों में एस.एल.आर. रायफलें थी।

के.रि.पु.बल की 56वीं वर्षगांठ

84 कार्मिकों को पदक



परेड का निरीक्षण करते हुए श्री रामलाल राही



बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी मुख्य अतिथि श्री रामलाल राही को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 56वीं वर्षगांठ के अवसर पर 28 दिसंबर, 95 को ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री राम लाल राही ने बल के 84 कार्मिकों को शौर्यवीरता, विशिष्ट सेवाओं तथा सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किये। राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्राप्त करने वाले चार कार्मिकों में से तीन को यह पदक मरणोपरांत प्रदान किये गये।

इस मौके पर अधिकारियों और जवानों को सम्बोधित करते हुए श्री राम लाल राही ने उन्हें भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहने को कहा। उन्होंने कहा कि तेजी से बदलते सामाजिक तथा आर्थिक समीकरणों के कारण महत्वकांक्षाएं बढ़ेगी। कुछ तत्व धर्म व भाषा के नाम पर अलगाववादी शक्तियों को बढ़ावा देंगे। लेकिन उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि बल हमेशा की भांति चुनौतियों का सफलतापूर्वक दृढ़ता से सामना करता रहेगा।

चुस्त तथा आकर्षक परेड के लिए अधिकारियों और जवानों को बधाई देते हुए श्री राही ने कहा कि यह बल की उच्च परम्पराओं के ही अनुकूल थी। देश में कानून और व्यवस्था बनाये रखने तथा आतंकवादी गतिविधियों से निपटने में के.रि.पु.बल द्वारा निभाई जा रही भूमिका की भी उन्होंने प्रशंसा की।

श्री राही ने कहा कि वे बल के कार्मिकों की समस्याओं से अवगत हैं। सरकार इन

समस्याओं पर गंभीरता से विचार कर रहा है ताकि बल की प्रशिक्षण एवं परिचालनिक दक्षता को और बढ़ाया जा सके। बल के कार्मिकों के परिवारों के कल्याण से संबंधित सभी प्रस्तावों पर सहृदयता से विचार किया जायेगा। बल के कार्मिकों के लिए एक पांच वर्षीय आवास योजना तैयार की गई है। इस पर 297 करोड़ रुपये की लागत आने की संभावना है। इस योजना के क्रियान्वित हो जाने पर बल के सदस्यों की आवासीय समस्या काफी हद तक हल हो जायेगी।

इससे पूर्व मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने कहा कि बल की निरंतर गतिशीलता के कारण बल के कार्मिकों के परिवारों की सुरक्षा तथा उनके बच्चों की शिक्षा को दृष्टि में रखते हुए और अधिक आवासों की आवश्यकता है। महानिदेशक ने मख्य अतिथि को आश्वासन दिया कि बल के कार्मिक भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना भी उसी प्रकार सफलतापूर्वक करते रहेंगे जैसे कि विगत में करते रहे हैं।

इससे पूर्व श्री राही ने परेड का निरीक्षण किया तथा उसकी सलामी ली। बल की महिला बटालियन तथा आर.ए.एफ. की टुकड़ियों सहित कुल छः टुकड़ियों ने के.रि.पु.बल बैंड की ओज पूर्ण धुनों पर आकर्षक मार्च प्रस्तुत किया। मार्च में रेपिड एक्शन फोर्स के दंगों पर काबू पाने वाले दस्ते तथा बल में आधुनिक संचार व्यवस्था का प्रदर्शन करने वाली झांकी भी शामिल थी।



कर्त्तव्य पर मृत बल के एक कार्मिक की विधवा को पदक प्रदान करते हुए श्री रामलाल राही



अस्पताल में भर्ती एक जवान से उस के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी लेते हुए श्री रामलाल राही

शौर्यवीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक के अतिरिक्त दो कार्मिकों को पुलिस पदक बार, 21 को शौर्यवीरता के पुलिस पदक, सात कार्मिकों को राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक तथा 50 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक भी प्रदान किये गये।

इस मौके पर ग्रुप केन्द्र गांधी नगर को सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र, 104 बटालियन को सर्वश्रेष्ठ बटालियन, 130 बटालियन को सर्वश्रेष्ठ कोस्ट इफेक्टिव तथा फाइनेशियल ट्राफी तथा 71 बटालियन को उत्तर पूर्व में तैनात सर्वश्रेष्ठ परिचालनिक बटालियन ट्राफी प्रदान की गई।

बाद में गृह राज्य मंत्री श्री रामलाल राही झड़ौदा कलां स्थित बल के बेस अस्पताल में भी गये तथा वहां इलाज के लिए भर्ती घायल जवानों से उनके कल्याण कार्यक्रमों के बारे में जानकारी ली।

के.रि.पु.बल कल्याण प्रदर्शनी

एक विधवा का विवाह

के.रि.पु.बल अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था द्वारा संचालित आर.के.पुरम स्थित शापिंग काम्पलैक्स पूर्ति स्थल पर आयोजित एक भव्य समारोह में के.रि.पु. बल के एक जवान देशराज की विधवा श्रीमती रेखा देवी का पुर्नविवाह 30 दिसम्बर, 95 को सम्पन्न हुआ। इस मौके पर केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण की पत्नी

श्रीमती कुसम ताइ चव्हाण भी नव दम्पति को अपना आशीवाद प्रदान करने के लिए उपस्थित थीं।

दो वर्षीय बेटी की मां रेखा देवी के इस पुनर्विवाह का आयोजन के.रि.पु. बल अधिकारियों की कल्याण संस्था कावा ने किया था।

इस मौके पर बोलते हुए श्रीमती चव्हाण ने कावा द्वारा बल के कार्मिकों के परिवारों के लिए चलाए जा रहे कल्याण कार्यक्रमों की प्रशंसा करते हुए विधवा विवाह जैसे आयोजनों की पहल करने के लिए कावा की अध्यक्षा श्रीमती इंदु त्रिपाठी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि ऐसे कल्याण कार्यों से पूरे समाज की सेवा होगी।

इससे पूर्व मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए श्रीमति इंदु त्रिपाठी ने कावा के उद्देश्यों और उसके कार्य कलापों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि दिल्ली आर.के.पुरम में चलाए जा रहे पूर्ति शापिंग काम्पलेक्स से होने वाली आय को गरीब कार्मिकों की लड़कियों की शिक्षा, विकलांग बच्चों की सहायता तथा विधवा विवाह जैसे आयोजनों पर खर्च किया जाता है।

इस मौके पर श्रीमती कुसमताई चव्हाण ने परिवार कल्याण केंद्र नीमच को वर्ष 1995 के लिए प्रथम तथा हैदराबाद कल्याण केंद्र को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया। इनके अतिरिक्त बल के एक कार्मिक की विकलांग बच्ची को पहिए वाली कुर्सी तथा एक को वाकर प्रदान किया। पूर्ति की आय में से दो कार्मिकों की बेटियों की शिक्षा के लिए वजीफे के चैक सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के प्रिसीपल को प्रदान किए गए।

इससे पूर्व श्रीमती चव्हाण ने एक परिवार कल्याण प्रदशर्नी तथा एक जलपान कैंटीन तृप्ति का भी उद्घाटन किया।



कल्याण प्रदर्शनी का उद्घाटन करती हुई श्रीमती चव्हाण



प्रदर्शनी के एक स्टाल का निरीक्षण करती हुयी श्रीमती चव्हाण



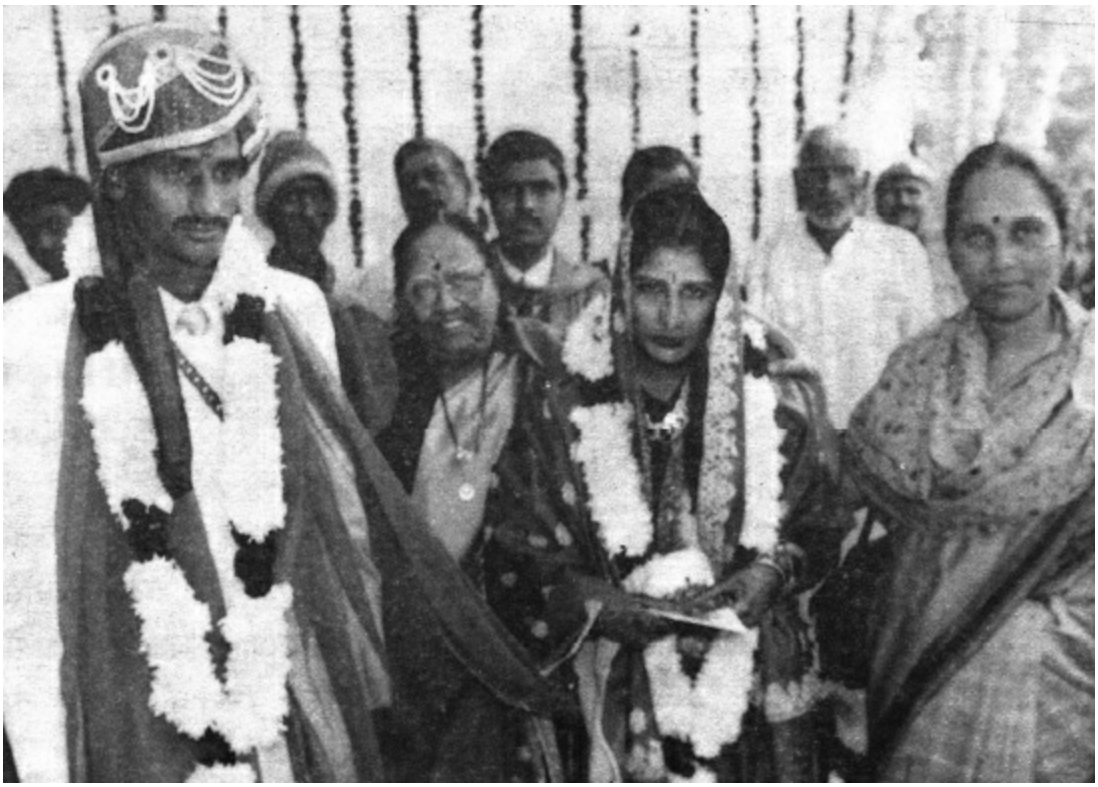
विवाह सूत्र में बंधते हुए सुश्री रेखा देवी

इस प्रदर्शनी में पूरे देश से आए के.रि.पु.बल के दस सेक्टरों ने अपने अपने स्टाल

लगाए। 04 जनवरी, 96 तक चली इस प्रदर्शनी में कुल 12 लाख रुपये की बिक्री हुई। इसमें सबसे ज्यादा बिक्री बल के उत्तरी सेक्टर के स्टाल पर हुई। इस स्टाल में कुल 2.28 लाख रुपए की बिक्री हुई। दक्षिण सेक्टर का स्टॉल दूसरे स्थान पर रहा। "कावा" की अध्यक्ष श्रीमती इंदु त्रिपाठी ने प्रदर्शनी के अंतिम दिन सर्वाधिक बिक्री करने वाले स्टॉलों को ट्राफियां तथा अन्य पुरस्कार प्रदान किये।

इस मौके पर बोलते हुए श्रीमती इंदु त्रिपाठी ने अपनी कल्याण संस्था की विभिन्न सेक्टरों की सदस्याओं का आह्वान किया कि वह अपने अपने क्षेत्रों में बच्चों विशेष पर विकलांग बच्चों के कल्याण कार्यक्रमों तथा कर्त्तव्य पर मारे गये कम उम्र के जवानों की विधवाओं के पुनर्विवाह के कार्य को प्राथमिकता के आधार पर आगे बढ़ाये।

इससे पूर्व बल के उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.पी. सिन्हा ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया तथा बाद में कावा सचिव श्रीमती राज सिन्हा ने उनके प्रति आभार प्रकट किया।



नव दम्पति को आशीर्वाद प्रदान करती हुयी श्रीमती चव्हाण

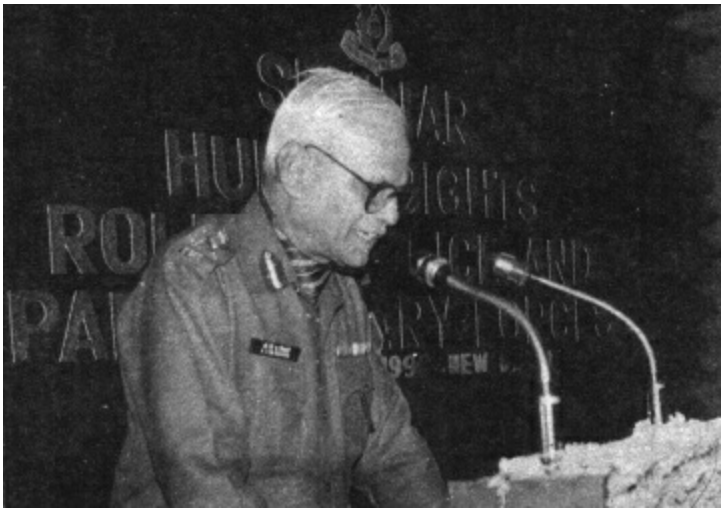
"पुलिस समाज के दोस्त के रूप में कार्य करे"

न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्रा

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्रा का कहना है कि पुलिस को अनुशासित तरीके से कार्य करते हुए समाज के दोस्त के रूप में कार्य करना चाहिए।



सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री रजनी रंजन साहू



सम्मेलन के उद्देश्यों एवं मानवधिकारों के संबंध में के.रि.पु. बल की भूमिका की जानकारी देते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

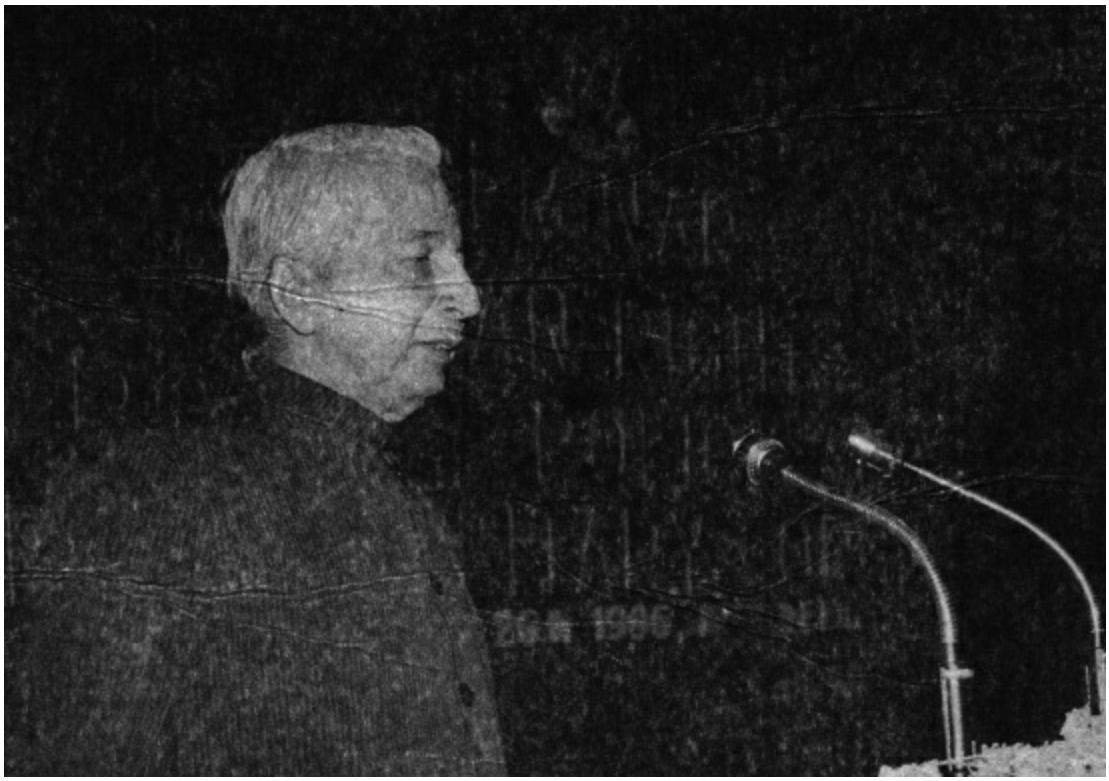


साम्प्रदायिक स्थितियों एवं हिंसा से निबटने में पुलिस तथा अर्द्धसैनिक बलों की भूमिका पर बोलते हुए जनसत्ता दैनिक के संपादक श्री प्रभाष जोशी

श्री मिश्रा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा "मानवाधिकार-पुलिस तथा केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों की भूमिका" विषय पर आयोजित एक दिवसीय सेमिनार के समापन के अवसर पर 26 फरवरी, 96 को नई दिल्ली स्थित स्कोप काम्पलेक्स में बोल रहे थे। श्री मिश्रा ने कहा कि हम मानवाधिकार आयोग में एक मानव की तरह मानवीय रहने तथा समाज के हर व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने सेमिनार में उपस्थित पुलिस अधिकारियों का आह्वान किया कि वे उनके इस कार्य में उनके साथ शामिल हों।

श्री मिश्रा ने कहा कि वे समाज में एक खामोश परिवर्तन देख रहे हैं। उन्होंने पुलिस बलों का आह्वान किया कि वे इस परिवर्तन में भागीदार बनें। समाज का एक सदस्य होने के नाते उनका कर्तव्य है कि वे समाज के संगठित रूप को बनाये रखें। उसे विघटित होने से रोंके।

उन्होंने कहा कि हम मानवाधिकारों के बारे में समाज के हर व्यक्ति की संवेदना को जगाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस बलों के अधिकारी इस संबंध में संवेदनशील है तथा स्थितियों की नाजुकता को समझते हैं, मगर स्थितियों से सीधे निपटने वाले एक सिपाही को इस संबंध में शिक्षित तथा जागरूक करने की आवश्यकता है। इसके लिए उन्होंने पुलिस में कार्य अवधि के दौरान तथा पहले दिए जाने वाले प्रशिक्षण में मानवाधिकारों से संबंधित विषयों को शामिल करने पर जोर दिया।



सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित करते हुए न्यायमूर्ति श्री रंगनाथ मिश्रा

उन्होंने कहा कि हम हर नागरिक के सम्मान तथा अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं।

न्यायमूर्ति मिश्रा के प्रति आभार व्यक्त करते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने कहा कि बल के परिवार में महिला बटालियनों तथा रेपिड एक्शन फोर्स के शामिल होने से स्थितियों से और अधिक मानवीय आधार पर निपटने में मदद मिली है।

इस एक दिवसीय सेमिनार का उद्घाटन गृह मंत्रालय की संसदीय समिति के अध्यक्ष संसद सदस्य श्री रजनी रंजन साहू ने किया। इस मौके पर बोलते हुए श्री साहू ने कहा कि प्रत्येक नागरिक की गरिमा और स्वाभिमान की रक्षा पुलिस का पहला कर्तव्य है।

उन्होंने कहा कि पुलिस का कर्तव्य है कि वह देखे कि समाज के सबसे कमजोर तबके के मूल अधिकारों की रक्षा हो। उन्होंने कहा कि समाज इस समय एक बदलाव के दौर से गुजर रहा है जिसमें लोगों की जागरूकता बढ़ी है। ऐसे में कानून तथा जन सामान्य के बीच एक कड़ी के रूप में पुलिस की भूमिका बढ़ जाती है।

दो सत्रों में विभक्त इस सेमिनार के पहले सत्र की अध्यक्षता अल्प संख्यक आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति मोहम्मद सरकार अली खान ने की। इस सत्र के मुख्य वक्ता जामिया मिलाया विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति मशीरूल हसन तथा जनसत्ता दैनिक के संपादक श्री प्रभाष जोशी थे।

इस सत्र में चर्चा का मुख्य विषय साम्प्रदायिक हिंसा तथा स्थितियों से निपटने में पुलिस तथा अर्द्ध सैनिक बलों की भूमिका था।

श्री मंशीरूल हसन ने जहां साम्प्रदायिकता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों, स्थितियों, कारणों तथा इसमें शामिल निहित स्वार्थों की भूमिका पर प्रकाश डाला, वहीं श्री प्रभाष जोशी ने विषय के मर्म को छूते हुए भारतीय समाज की परंपराओं के परिप्रेक्ष्य में मानव अधिकारों की चर्चाओं की सार्थकता की बात उठायी। उन्होंने भारतीय समाज में सह अस्तित्व तथा भाई-चारे की भावना को विशेष रूप से रेखांकित किया।

न्यायमूर्ति श्री सरदार अली खान ने सत्र के समापन भाषण में दोनों वक्ताओं तथा सेमिनार में शामिल डेलीगेटों के विचारों का सार प्रस्तुत करते हुए कहा कि जब हम मानवाधिकारों की बात करते हैं तो दरअसल हम अपने संविधान प्रदत्त मूल अधिकारों के सम्मान की ही बात करते हैं। उन्होंने साम्प्रदायिक स्थितियों से निबटने में रेपिड एक्शन फोर्स की विशेष रूप से प्रशंसा की।

सेमिनार के दूसरे सत्र की अध्यक्षता न्यायमूर्ति राजेंद्र सच्चर ने की। इस सत्र में समाज के कमजोर वर्गों विशेषकर महिलाओं, बच्चों के मानवाधिकारों की रक्षा से संबंधित विषय पर चर्चा हुई।

इस वार्ता में मुख्य वक्ता जम्मू कश्मीर सरकार ने पूर्व सलाहकार श्री वेद मारवाह तथा इंटेग्रेटेड ह्यूमन डेवलपमेंट सर्विसेज फांउडेशन की निदेशक डा. श्रीमती प्रोमिला कपूर थीं।

जहां श्री मारवाह ने सीधे भीड़ से सामना होने पर पुलिस द्वारा किए जाने वाली कार्रवाईयों तक अपने विचारों को सीमित रखा, वहीं श्रीमती कपूर ने हमारे समाज में महिलाओं की जन्म से ले कर मृत्यु तक चलने वाली प्रताड़ना और मानवीय त्रासदी को अपने विचारों का केंद्र बनाये रखा।

पूरे सेमिनार के सभी वक्ताओं ने एक मत से समाज के सबसे कमजोर तबके के मूल अधिकारों, उसके सम्मान तथा गरिमा की हर सूरत में सुरक्षा के मुद्दे को पूरे जोर शोर से उठाया।

के.रि.पु.बल अधिकारियों की दीक्षांत परेड सम्पन्न

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में राजपत्रित अधिकारियों के पद पर सीधे भर्ती 80 पुलिस उपाधीक्षकों के 25वें बैच की आंतरिक सुरक्षा अकादमी विस्तार शाखा, नीमच (मध्य प्रदेश) में 31 जनवरी, 96 को एक भव्य समारोह में दीक्षांत परेड सम्पन्न हुई। मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री मौहम्मद शफी कुरैशी ने परेड की सलामी ली।

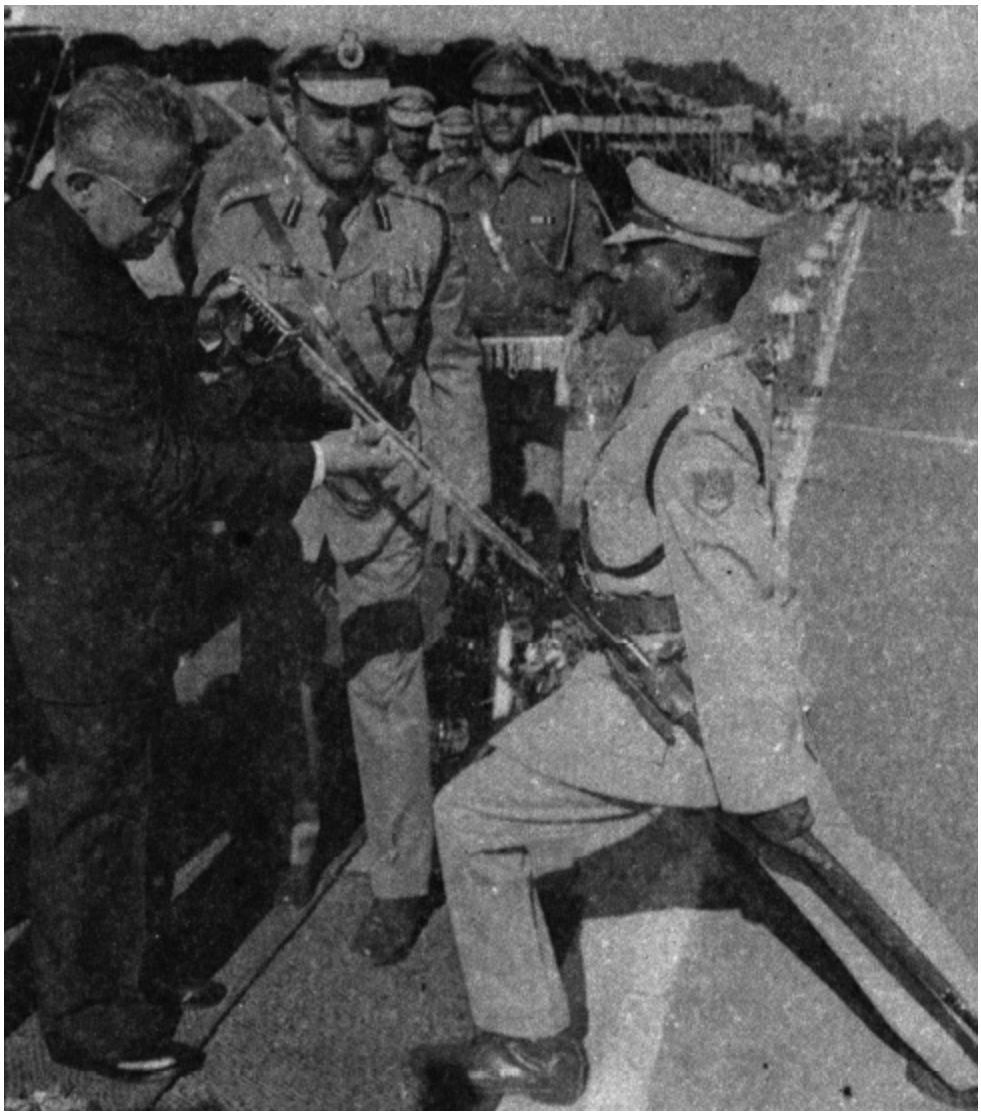
सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी अशोक स्वामी को "स्वार्ड आफ आनर" से सम्मानित किया गया। श्री स्वामी को आंतरिक विषयों, ड्रिल तथा शूटिंग में भी सर्वश्रेष्ठ रहने के लिए चार ट्राफियां प्रदान की गई। पांच अन्य प्रशिक्षार्थियों को छः अन्य क्षेत्रों में श्रेष्ठ रहने के लिए पुरस्कार प्रदान किये गये।

राज्यपाल श्री कुरैशी ने इस अवसर पर प्रशिक्षार्थियों को उनकी उच्च स्तर की परेड के लिए बधाई दी और कहा कि के.रि.पु. बल ने हमेशा मुश्किल से मुश्किल वक्त में हालत का समझदारी से मुकाबला किया है। उन्होंने कहा कि यह बड़े संतोष की बात है कि किसी क्षेत्र में इस बल या आर.ए.एफ. को तैनाती के बाद लोग अपने आप को सुरक्षित महसूस करने लगते हैं।

राज्यपाल महोदय ने बल कर्मियों को सावधान करते हुए कहा कि अनेक धर्मों तथा भाषाओं वाले इस विशाल देश के भीतर के शत्रुओं के प्रति सजग रहना है जो भाषा, धर्म या क्षेत्र के नाम पर झगड़े करवाते हैं। ऐसे तत्वों के साथ पूरी कड़ाई, ईमानदारी तथा तटस्थ भाव से तत्काल निपटा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि बल के अनेक कर्मी ड्यूटी के समय शहीद होते हैं। सरकार द्वारा उनके परिवारों के कल्याण के लिए हर संभव प्रयास किया जाये।

इससे पहले बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने राज्यपाल का स्वागत किया तथा कहा कि के.रि.पु. बल में देश के सब राज्यों का अनुपातिक प्रतिनिधित्व है। बल के कार्मिकों के परिवारों का कल्याण इन राज्यों की भी जिम्मेदारी है। बल कार्मिकों के बच्चों के लिए व्यवसायिक संस्थाओं में सीटें निर्धारित कर और कल्याण कोष में योगदान दे कर राज्य कल्याण कार्यों में भाग ले सकते हैं।

प्रारम्भ में राज्यपाल महोदय को सलामी दी गई और उन्होंने परेड का निरीक्षण किया। बल की विभिन्न टुकड़ियों तथा सीधे नियुक्त रापजत्रित अधिकारियों ने धीमी तथा तेज गति में मार्च पास्ट प्रस्तुत किया। राज्यपाल महोदय ने श्रेष्ठ प्रशिक्षार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये । बल के महानिदेशक ने इस अवसर पर राज्यपाल को एक स्मृति चिह्न भेंट किया।



श्री अशोक स्वामी को स्वोर्ड आफ आनर प्रदान करते हुए श्री कुरेशी

श्री ताशी दावा

महानिरीक्षक बिहार सेक्टर



श्री ताशी दावा

1969 बैच के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी श्री ताशी दावा ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिरीक्षक बिहार सेक्टर का कार्यभार दिनांक 20 फरवरी, 96 से संभाल लिया है। दिसम्बर, 95 में के.रि.पु. बल परिवार में महानिरीक्षक के रूप में शामिल होने से पूर्व श्री दावा कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं। अपना प्रशिक्षण समाप्त करने के बाद हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में सहायक पुलिस अधीक्षक के रूप में 1971 में पहली नियुक्ति के बाद श्री दावा 1972 में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के ए.डी.सी. नियुक्त किए गए। 1976 से 1979 तक श्री दावा किन्नौर, 1979 से 1982 तक चम्बा, 1982 से 1984 तक हमीरपुर, 1984 से 1985 तक सिरमौर तथा नाहन तथा 1985 से 1986 तक शिमला में पुलिस अधीक्षक के पद पर तैनात रहे।

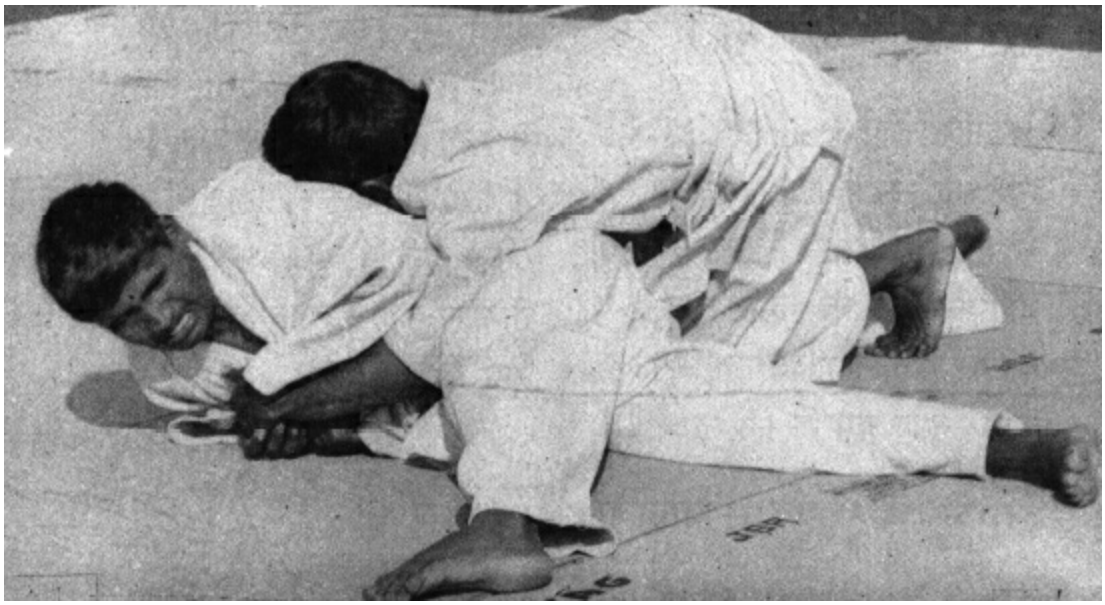
जून, 1986 में उप महानिरीक्षक के पद पर पदोन्नत होने के बाद श्री दावा अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति विकास निगम सोलन के प्रबंध निदेशक नियुक्त किये गये।

1988 में श्री दावा डी.आई.जी. इनफोर्समेंट नियुक्त किये गये। इस बीच कुछ समय के लिए डी.आई.जी.सी.आई.डी. भी नियुक्त रहे। उप महानिरीक्षक पद पर रहते हुए उन्होंने दक्षिण रेंज, सशस्त्र पुलिस तथा प्रशिक्षण व सी.आई.डी. विभागों का कार्य भार भी संभाला।

श्री दावा 1994 में महानिरीक्षक पद पर पदोन्नत। हुए के.रि.पु.बल परिवार में शामिल होने से पूर्व तक श्री दावा महानिरीक्षक सी.आई.डी. पद पर तैनात थे।

श्री दावा ने प्रबंध तथा प्रशिक्षण से संबंधित विभिन्न कोर्सों में हिस्सा लिया है। श्री दावा को 1986 में सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

100 बटालियन ने आर.ए.एफ. जूडो प्रतियोगिता जीती



प्रतियोगिता के दौरान एक रोचक मुकाबला

100 आर.ए.एफ. बटालियन ने चौथी आर.ए.एफ. इंटर बटालियन जूडो प्रतियोगिता जीत ली है। 103 बटालियन तथा 101 बटालियन क्रमश: दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रहीं।

प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले 16 फरवरी, 96 को 103 आर.ए.एफ. बटालियन स्थल वजीराबाद, दिल्ली में हुए। आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्दकी इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को ट्राफियां तथा अन्य पुरस्कार प्रदान किये।

इस तीन दिवसीय मुकाबले में आर.ए.एफ. की 10 बटालियनों की टीमों ने भाग लिया।

रामपुर में लान तथा फूल प्रदर्शनी

प्रदूषण मुक्त वातावरण के विकास तथा बागवानी के प्रति लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए ग्रुप केन्द्र रामपुर में विभिन्न संस्थाओं तथा राजपत्रित अधिकारियों द्वारा लान व्यवस्था तथा फूलों की प्रदर्शनी से संबंधित एक प्रतियोगिता का आयोजन 24 फरवरी, 96 को किया गया।

प्रतियोगिता के संस्थाओं तथा कार्यालयों वाले खंड में खूबसूरत लान तथा पुष्पों की प्रदर्शनी में प्रथम स्थान पुलिस उप महानिरीक्षक कार्यालय रामपुर को मिला। दूसरे स्थान पर केंद्रीय हथियार भंडार रहा तथा प्रतियोगिता का तीसरा स्थान ग्रुप केन्द्र रामपुर को मिला।

प्रतियोगिता के राजपत्रित अधिकारियों वाले खंड में प्रथम स्थान ए. डब्ल्यू.एस. रामपुर के उप कमान्डेन्ट एन.के.भारद्वाज, दूसरा स्थान केंद्रीय हथियार भंडार के उप

कमांडेट जी.एस. चंदेल तथा तीसरा स्थान केंद्रीय हाथियार भंडार के कमांडेट आर.के. वत्स को मिला।

संक्षिप्त समाचार

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

134 बटालियन के कमान्डेन्ट श्री टी बी.राव को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की गई है। श्री राव को यह सम्मान 56वीं वार्षिक परेड के कमांडर के रूप में निभाई गई उनकी अद्वितीय भूमिका के लिए प्रदान किया गया है।

आश्रितों के लिए आवास योजना

कर्तव्य पर मारे गए बल के कार्मिकों की विधवाएं या अन्य आश्रित भी अब सरकार की इंदिरा आवास योजना के अंर्तगत आवासीय सुविधाओं का लाभ उठा पाएंगे।

इस संबंध में विधवाओं या अन्य आश्रितों को अपने आवेदन संबधित महानिरीक्षकों या अपर उप महानिरीक्षकों द्वारा नामित ग्रुप केन्द्रों को भेजने चाहिए।

ग्रुप केन्द्र इन आवेदनों को राज्यों के ग्रामीण विकास विभाग के सचिव के पास भेजेंगे। इन आवेदनों की एक प्रति संबंधित जिला अधिकारी या डिप्टी कमीशनर को भेजेंगे। आवेदकों की सूची समय समय पर पुर्नमूल्यांकित की जानी चाहिए।

कोयम्बतूर में आवासीय भवनों की आधारशिला

बल के दक्षिणी सेक्टर के अपर महानिदेशक श्री डी.आर. कार्तिकेयन ने 12 फरवरी, 96 को केंद्रीय प्रशिक्षण विद्यालय-2 में 125 आवासीय खंडों के एक काम्पलैक्स की आधारशिला रखी। इससे पूर्व 11 फरवरी, 96 को श्री कार्तिकेयन ने इस आवासीय काम्पलैक्स के लिए भूमि पूजन किया। इस प्रोजेक्ट के लिए सरकार ने 3,33,97,000 रुपयों की मंजूरी दी है। आवासीय खंडों का निर्माण केंद्रीय लोक निर्माण विभाग कर रहा है।

ज्ञातव्य है कि आवड़ी, मद्रास स्थिति सी.टी.सी. 2 को कोयम्बतूर में स्थानांतरित कर दिया गया है। इसके लिए यहा 400 एकड़ भूमि अधिग्रहित की गयी है। इसी भूमि पर ये आवासीय खंड निर्मित किये जा रहे हैं।

इस मौके पर श्री कार्तिकेयन ने दक्षिण सेक्टर के 13 कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क तथा प्रशंसा पत्र भी प्रदान किए।

इस मौके पर सी.टी.सी. 2 के कार्मिकों ने कई आकर्षक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये।

जोखिम निधि लाभ

माह जनवरी, 96 में मृत्यु के 23 मामलों में केंद्रीय जोखिम निधि से कुल 9,29,000 रुपये देने स्वीकृत किये गए। इनमें प्रति मामला 12,500 रुपये की केंद्रीय कल्याण निधि की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के सात मामलों में कुल 1,05,000 रुपये देने स्वीकृत किये गए।

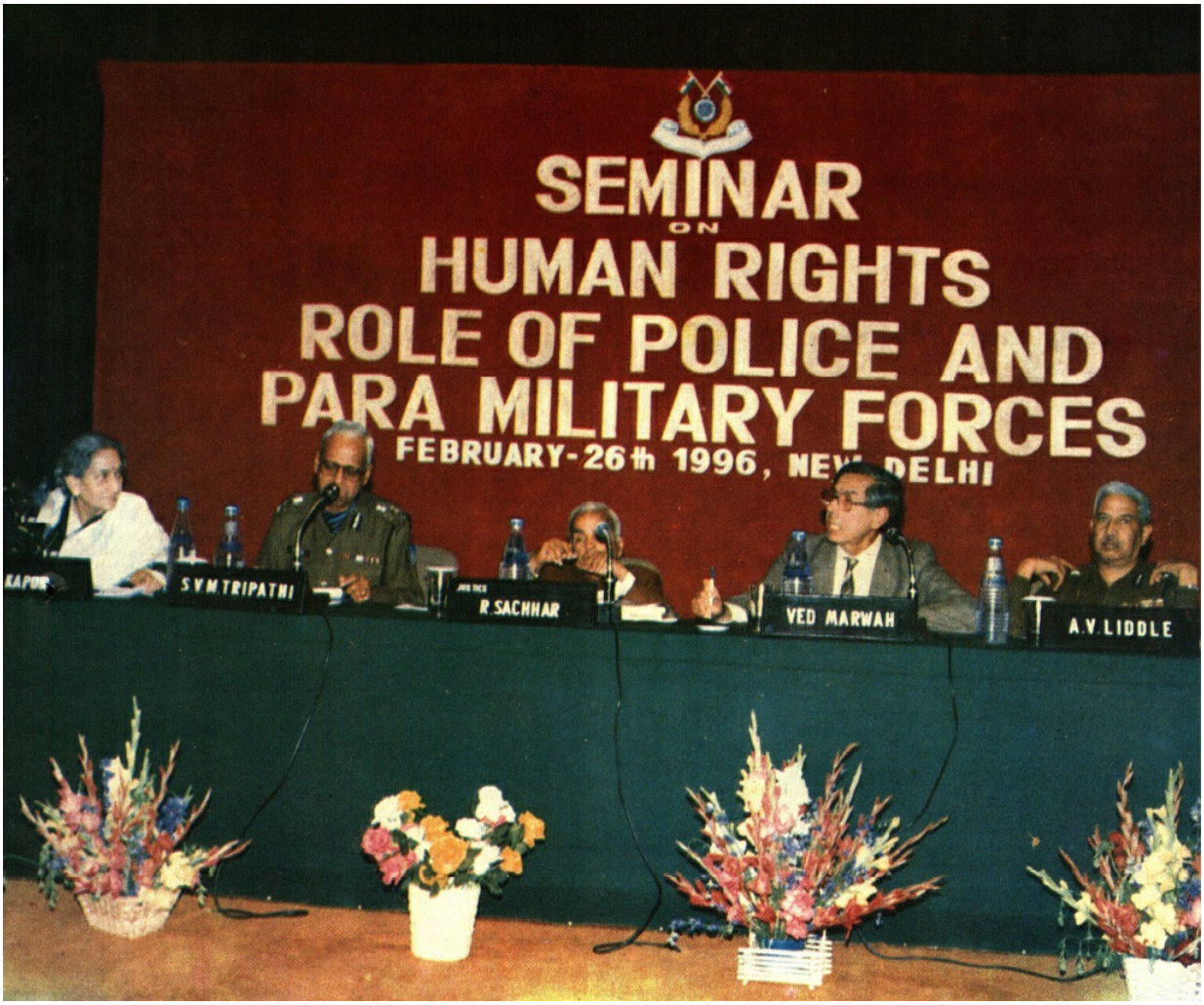
जोखिम निधि "बी" स्पेशल कल्याण निधि से भी इसके पांच सदस्यों के मृत्यु के मामले में कुल 1,75,00 रुपये प्रदान किये गए।

माह जनवरी, 96 में बल के मृत कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक जनवरी, 96 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नायक टी.एच. रामो सिंह (2 बटा.), स.उ.नि. (एम) पवन कुमार (134 बटा.), हवलदार उदय प्रकाश (33 बटा.), लांस नायक भीमा माणे (74 बटा.), नायक श्याम बहादुर (ग्रुप केन्द्र मोकामाघट), सिपाही देशराज (प्रथम बटा.), सिपाही बिगुवा ओरेन (ग्रुप केन्द्र जमशेदपुर), हवलदार किशन पाल सिंह (ग्रुप केन्द्र इम्फाल), उप निरीक्षक दिनेश सिंह (76 बटा.), हवलदार तपन जी. इसो (128 बटा.), हवलदार संकटमोचन पाठक (119 बटा.), लांस नायक विजय कुमार (128 बटा.), हवलदार जे.एल. पाण्डे (128 बटा.), नायक नवल किशोर शर्मा (128 बटा.), सिपाही जेम्स पी.ए. (128 बटा.), सिपाही नगमा ओरेन (128 बटा.), सिपाही बाबू लाल मीणा (128 बटा.), उप निरीक्षक जानकी प्रसाद (96 बटा.), लांस नायक विजय सिंह (96 बटा.), सिपाही ए. शरत सिंह (23 बटा.), नायक राम स्वरूप (123 बटा.), निरीक्षक नागाभूषणम (39 बटा.), सिपाही/ड्राईवर सुभाष चन्द्र (39 बटा.), उप निरीक्षक ध्यान चन्द्र शर्मा (127 बटा.), सिपाही सी.एन. शोलापुर (127 बटा.), वार्ड ब्वाय बबलू चौधरी (112 बटा.)।

देर से प्राप्त हुई सूचना के अनुसार 64 बटालियन के हवलदार टी. एम. वेणुगोपाल भी अगस्त 1995 में मृत्यु को प्राप्त हुए।



के.रि.पु. बल द्वारा आयोजित मनवाधिकार सम्मेलन के दूसरे सत्र को संबोधित करते हुए श्री वेद मारवाह

रजि. नं. 4767/87



गणतंत्र दिवस '96 की परेड के अवसर पर सलामी मंच के सामने से गुजरती हुई आर.ए.एफ. की महिला टुकड़ी

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

खंड - 9 | अंक - 2 | 31 मार्च, 1996 | 11 चैत्र, शक 1918



103 आर.ए.एफ. बटालियन स्थल वजीरा बाद नई दिल्ली में 19 मार्च, 1995 को आर.ए.एफ. इंटर बटालियन राइट



बेस अस्पताल-2 हैदराबाद में पल्स पोलियो कार्यक्रम के तहत मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा.डी.एन. कार एक बच्चे को पालियो ड्राप्स देते हुए

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-9 अंक-2
31 मार्च, 1996
11 चैत्र, शक 1918

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

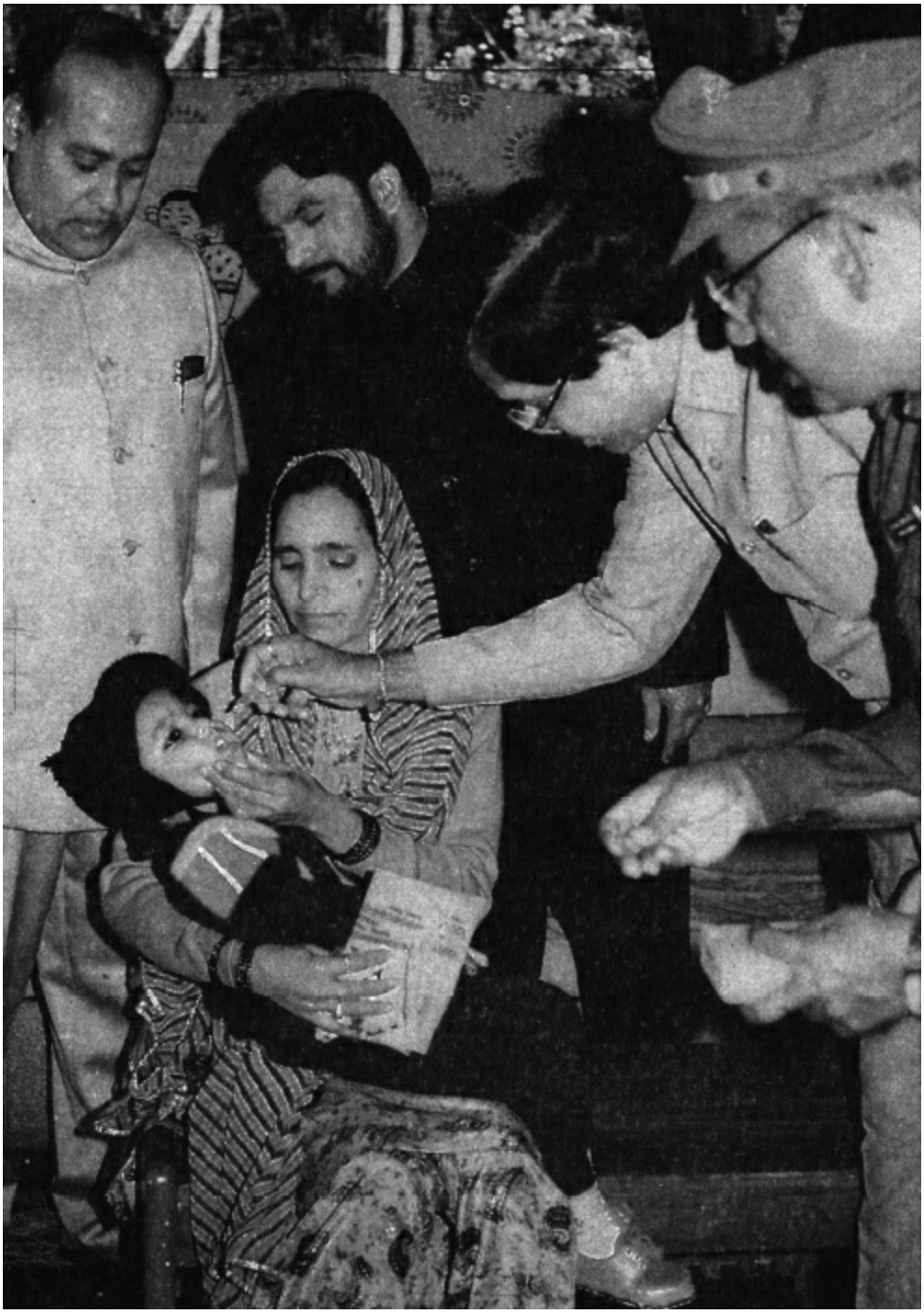
चित्र संकलन
एस.के. खन्ना

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय-सूची



सम्पादकीय

ग्रुप केंद्र आवड़ी ने एक गांव गोद लिया

कोयम्बतूर में आवासीय भवनों का शिलान्यास

पल्स पोलियो कार्यक्रम

फोटो फीचर

खेल के क्षेत्र में उपलब्धियां

बनतलाब में विधवा कल्याण दिवस

संक्षिप्त समाचार

सम्पादकीय

देश के अंदर कानून व व्यवस्था बनाए रखने तथा विपरीत स्थितियों में शांति स्थापना के लिए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा दी जाने वाली सेवाएं आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए बल के जवानों ने भारी तादाद में अपने प्राणों की आहुति दी है। देश के कई हिस्से जो कभी हिंसा और आतंक की आग में जल रहे थे आज वहां स्थापित शांति के.रि.पु. बल तथा देश के अन्य सुरक्षा बलों की समर्पित सेवाओं का प्रमाण है।

चाहे अशांति तथा उथल पुथल से भरा कर्तव्य क्षेत्र हो या फिर शांति काल, बल के जवानों के लिए विश्राम का कोई क्षण नहीं है। शांति व्यवस्था बनाए रखने के अतिरिक्त समाजोत्थान तथा समाज सेवा की एक और अघोषित जिम्मेदारी उन पर है। अपनी इसी जिम्मेदारी के निर्वाह के लिए बल के जवान समय समय पर रक्तदान तथा ग्रामीण क्षेत्रों में प्रौढ़ शिक्षा एवं चिकित्सा कैंप जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करते रहते हैं।बल्कि आर.ए.एफ. ने तो बचाव और राहत कार्यों के क्षेत्र में विशेष रूप से ख्याति अर्जित की है। गुजरात में प्लेग की महामारी तथा फिरोजाबाद में रेल दुर्घटना के बाद उसके द्वारा प्रदत्त सेवाएं इसी अघोषित जिम्मेदारी के ही निर्वाह की ताजा मिसाल हैं।

किंतु बल ने इस क्षेत्र में एक कदम और आगे बढ़ा कर अपनी युनिटों के कार्यक्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले पिछड़े गांवों को अंगीकृत कर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व उठाने का बीड़ा उठाया है। यह प्रयास बल की युनिटों ने अपने स्तर पर शुरू किया है। हालांकि आर.ए.एफ. की बटालियनें जहां जहां तैनात रही हैं, उन्होंने आस पास के गांवों में व्यापक कल्याण कार्यक्रम चलाएं हैं। ऐसा ही बल की अन्य यूनिटें भी करती रही हैं, किंतु हाल ही में आर.ए.एफ. की 107 बटालियन ने भोपाल के तीन गांवों के सर्वांगीण विकास के लिए उन्हें गोद लिया। आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री सिद्दीकी ने रायसेन जिले के हिनोतिया कस्बे में इन तीन गांवों को गोद लेने की घोषणा करते हुए कहा कि आर.ए.एफ. के जवान इन गांवों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करेंगे। उन्होंने शीघ्र ही एक ऐसे कस्बे को भी गोद लेने का ऐलान किया, जहां सांप्रदायिक तनाव का इतिहास रहा है। आर.ए.एफ. की 107 बटालियन ने जनवरी माह के अंत में इन गांवों को अंगीकृत किया।

जिस दिन श्री सिद्दीकी इन गांवों को गोद लेने की घोषणा कर रहे थे, उससे ठीक एक दिन पहले मद्रास में बल का आवड़ी केंद्र अपने स्टेशन से तीन कि.मी. दूर स्थित मोराई गांव को गोद ले कर उसके विकास का संकल्प ले चुका था।

इन दो घटनाओं के जिक्र का आशय यह नहीं है कि ये अपने आप में अनूठी हैं, बल के कार्मिकों के लिए यह सामान्य घटनाएं हैं और समाज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का ही एक हिस्सा हैं, इस तरह की न जाने कितनी योजनाएं, इस विशाल बल की युनिटें अपने अपने कर्तव्य क्षेत्र में चला रही हैं। क्योंकि वे प्रतिबद्ध है अपने

कर्तव्य के प्रांते, अपने परिवेश के प्रांते, अपने समाज के प्रांते और सबसे ऊपर अपने देश के प्रति, हर पल, हर क्षण, हर तरह से।

ग्रुप केन्द्र आवड़ी ने एक गांव गोद लिया

के.रि.पु. बल ग्रुप केन्द्र आवड़ी ने अपने स्टेशन से तीन किलोमीटर दूर स्थित गांव मोराई के सर्वांगीण विकास का दायित्व उठाते हुए उसे गोद लिया है। अत्यधिक पिछड़े हुए इस गांव के लगभग 1000 ग्रामीण गरीबी की रेखा से नीचे रह रहे हैं। इस गांव को मुख्य सड़क से जोड़ने के लिए पक्की सड़क का न होना इसके विकास की सबसे बड़ी बाधा है।

इस गांव को अंगीकृत करने के लिए 18 जनवरी, 96 को एक समारोह का अयोजन किया गया, जिसमें जिला कलेक्टर श्री पी. रामामोहन राव ने इस प्रोजेक्ट की शुरूआत की। मोराई गांव में आयोजित इस समारोह में मोराई तथा आसपास के गांवों के ग्रामीण भारी संख्या में उपस्थित थे। ग्रुप केन्द्र आवड़ी के अपर उप महानिरीक्षक श्री जोर्ज.सी. पोडीपारा ने इस अवसर पर मोराई में चलाई जाने वाली योजनाओं की जानकारी भी दी। जिला कलेक्टर महोदय ने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि वह गांव के विकास के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। उन्होंने इस मौके पर एक नारियल का पेड़ भी लगाया।



जिले के कलेक्टर श्री राम मोहन राव का मोराई गांव में स्वागत करते हुए बल के कार्मिक

इस गांव को अंगीकृत कर के.रि.पु. बल यहां मुख्यत: अपनी महिला डाक्टरों की मदद से गांव की महिलाओं तथा बच्चों के लिए समुचित चिकित्सा सुविधाओं को उपलब्ध कराएगा, ग्रामीणों को गांव में टिम्बर तथा फलों के वृक्ष लगाने में मदद देगा, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चलाएगा, उनकी समस्याओं को जिला प्रशासन तक पहुंचाने में उनकी मदद करेगा तथा स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए मार्शल आर्ट तथा खेलों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करेगा।



श्री राम मोहन राव मोराई गांव में नारियल का एक पौधा लगाते हुए

इस मौके पर बल के जवानों ने आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा बैंड प्रदर्शन भी किया।

कोयम्बतूर में आवासीय भवनों का शिलान्यास

सितम्बर, 1969 में आवड़ी में शुरू किया गया सी.टी.सी. 2 कोयम्बतूर की पश्चिमी घाट की पहाड़ियों की तलहटी में स्थित एकं आकर्षक स्थल पर स्थानांतरित कर दिया गया है। कुर्दोमलाई के नाम से जाने जाने वाले इस स्थल पर सी.टी.सी. 2 के लिए 400 एकड़ भूमि अधिगृहित की गयी है।

बल के दक्षिण सेक्टर के अपर महानिदेशक श्री डी. आर. कार्तिकेयन ने 12 फरवरी; 96 को इस नवस्थापित कैंप में 125 आवासीय भवनों की आधारशिला रखी। इससे पहले 11 फरवरी, 96 को यहां भूमिपूजन का आयोजन किया गया।



आवासीय भवनों का शिलान्यास करने के बाद श्री कार्तिकेयन

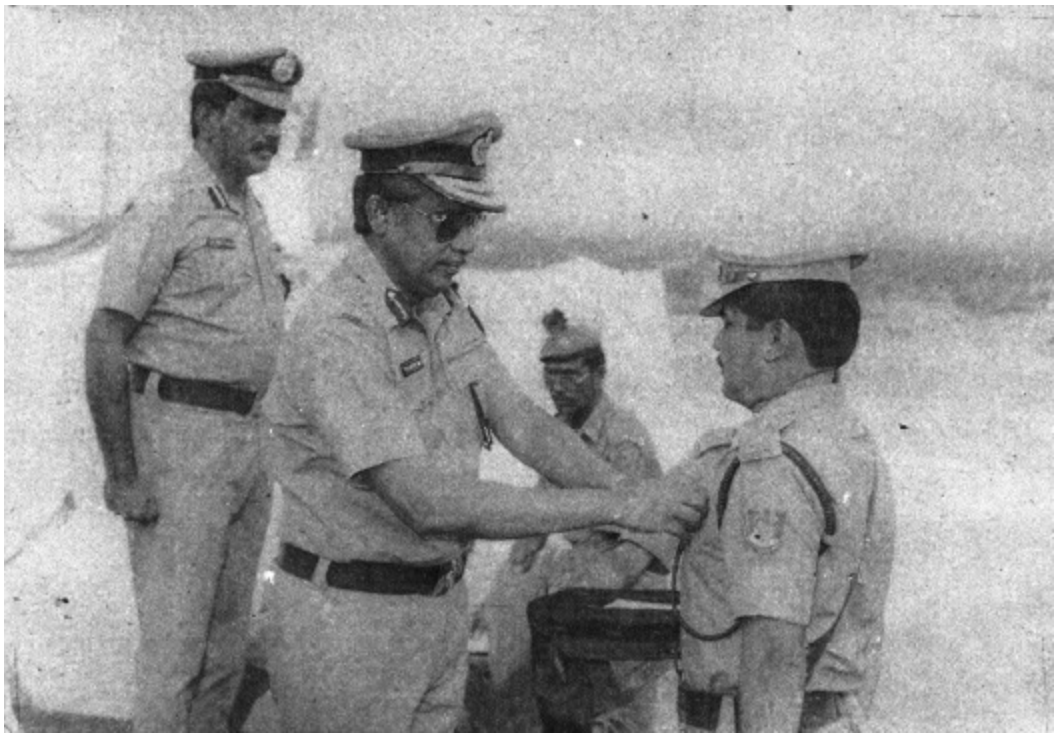
इन आवासीय भवनों के निर्माण के लिए सरकार ने 3,33,97,000 रूपयों की स्वीकृति प्रदान की है। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग प्राथमिकता के आधार पर इन आवासों का निर्माण शुरू करने जा रहा है।

इस मौके पर श्री कार्तिकेयन ने दक्षिण सेक्टर के 13 कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की। इस मौके पर बल के कार्मिकों ने कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

जोखिम निधि लाभ

माह फरवरी, 96 में केन्द्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के 57 मामलों में कुल 22,57,500 रूपये देने स्वीकृत किए गए।

इस अवधि में अक्षमता का कोई मामला प्रकाश में नहीं आया।



एक अधिकारी को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान करते हुए श्री कार्तिकेयन

इसी प्रकार स्पेशल कल्याण निधि, जोखिम निधि "बी" में भी इसके किसी सदस्य का मामला प्रकाश में नहीं आया।

बल में व्यापक स्तर पर पल्स पोलियो कार्यक्रम का आयोजन

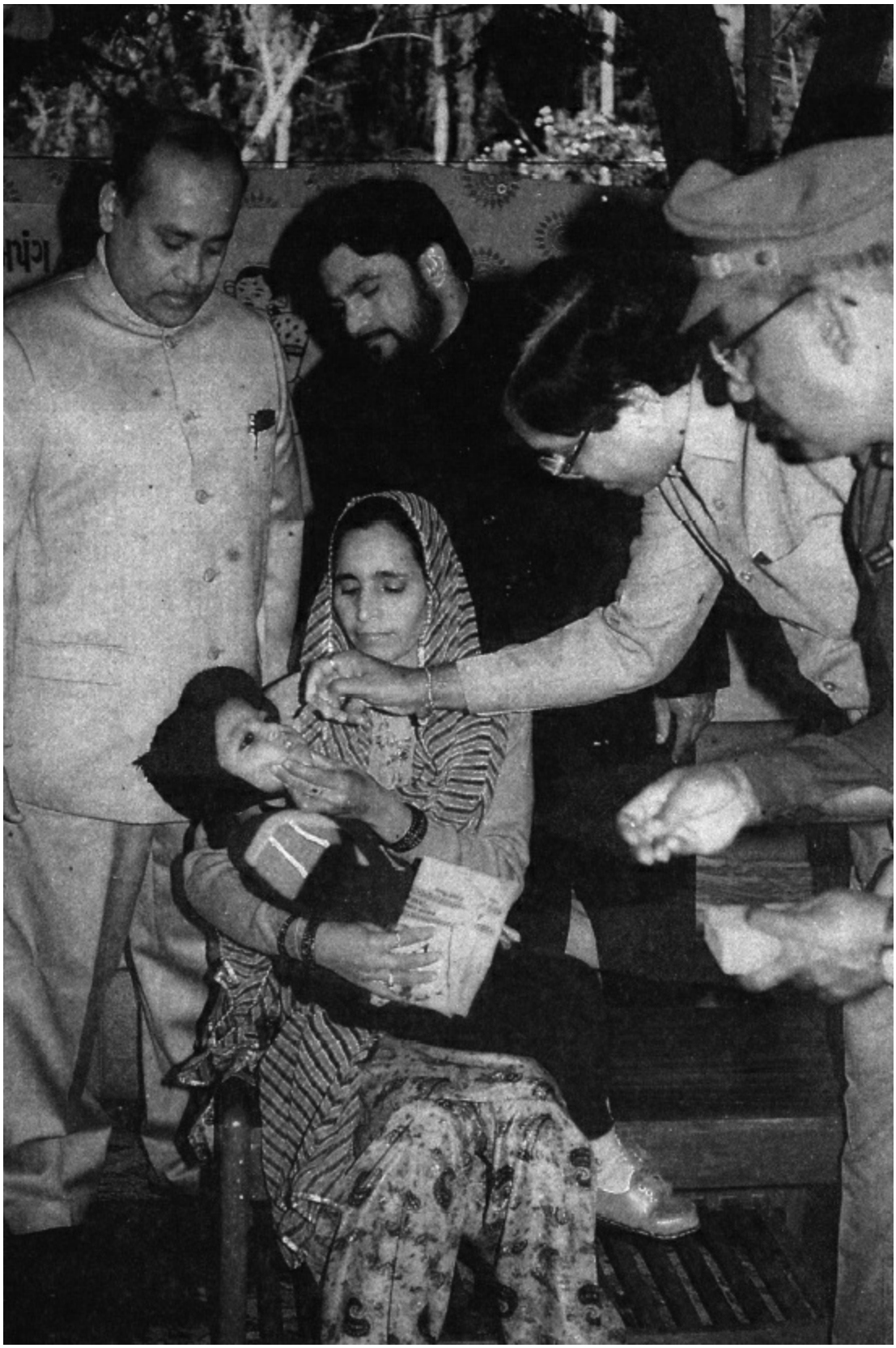
बल के लगभग सभी केंद्रों के अस्पतालों ने माह दिसंबर '95 तथा जनवरी '96 में देशव्यापी रूप में मनाए गए पल्स पोलियो कार्यक्रम में भाग ले कर सैकड़ों कार्मिकों तथा अन्य नागरिकों के बच्चों को पोलियो खुराक दी। प्रस्तुत हैं कुछ केंद्रों की रिपोर्ट :

गांधी नगर में पल्स पोलियो अभियान

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा चलाये जा रहे पोलियों निवारण विश्वव्यापी कार्यक्रम के अनुसरण में भारत सरकार ने इस सदी के अन्त तक देश से पालियो को जड़ से मिटाने का संकल्प लिया है जिसके अधीन समूचे देश में 09 दिसम्बर, 95 तथा 20 जनवरी 96 को देश के 3 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को पल्स पोलियो ड्राप्स दिये गए।

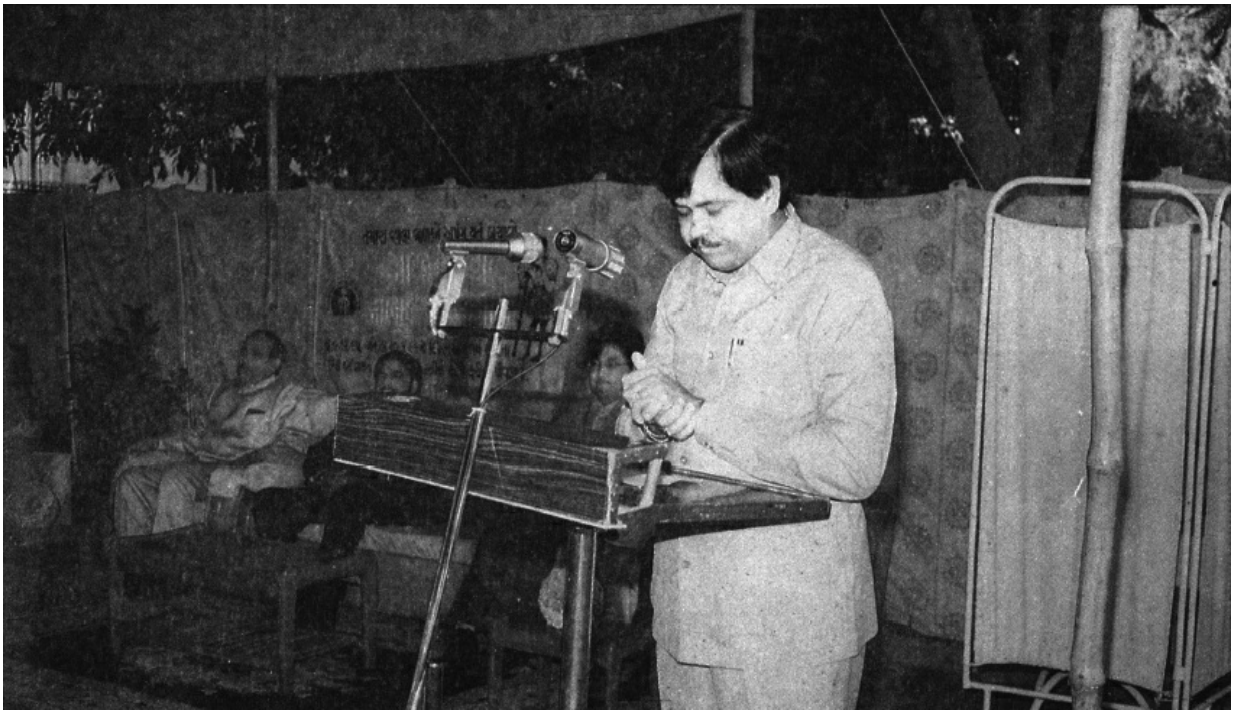
इस कार्यक्रम के अंतर्गत 09 दिसम्बर, 95 को गांधी नगर ग्रुप केन्द्र परिसर में जिला स्वास्थ्य कार्यालय, गांधी-नगर के सहयोग से पल्स पोलियो कार्यक्रम का विशाल

आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में गुजरात राज्य के कबीना मंत्री श्री जयनारायण व्यास उपस्थित थे, उन्होंने एक दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया तथा कुछ बच्चों को पल्स पोलियो ड्राप्स पिलाये। इस कार्यक्रम में गांधी नगर के कुछ विशिष्ट व्यक्ति भी उपस्थित थे जिनमें यूनीसेफ प्रमुख (गुजरात) श्री टोम होजीमा, जिलाधिकारी, अतिरक्त मुख्य सचिव, परिवार कल्याण तथा जिला स्वास्थ्य अधिकारी शामिल थे।



गुजरात राज्य के कबीना मंत्री श्री जयनारायण व्यास पल्स पोलियो कार्यक्रम के दौरान एक बच्चे को पोलियो खुराक

पिलाते हुए



पल्स पोलियो अभियान के दौरान ग्रुप केंद्र गांधीनगर में उपस्थित समुदाय को संबोधित करते हुए श्री जयनारायण व्यास

इस कार्यक्रम में के.रि.पु. बल के 242 तथा सीमा सुरक्षा बल के 53 बच्चों को पोलियो पल्स ड्राप्स पिलाये गये। उपरोक्त कार्यक्रम का समापन श्री प्रणय सहाय, पुलिस उप महानिरीक्षक, के.रि.पु. बल के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।



बेस अस्पताल हैदराबाद में बच्चों को पोलियो ड्राप्स दिलवाने के लिए उमड़ी भीड़

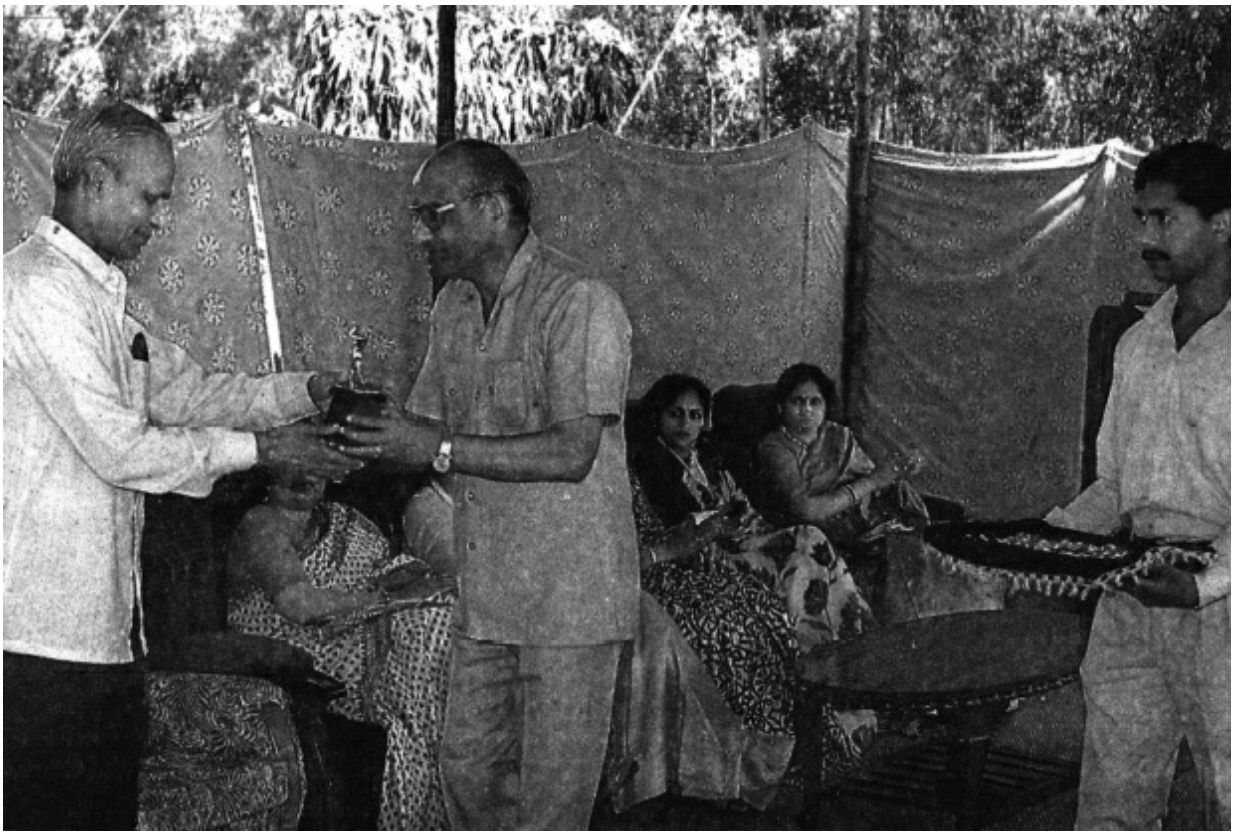


अजमेर में पोलियो खुराक अभियान डा. एस.सी. महापात्रा की निगरानी में चला

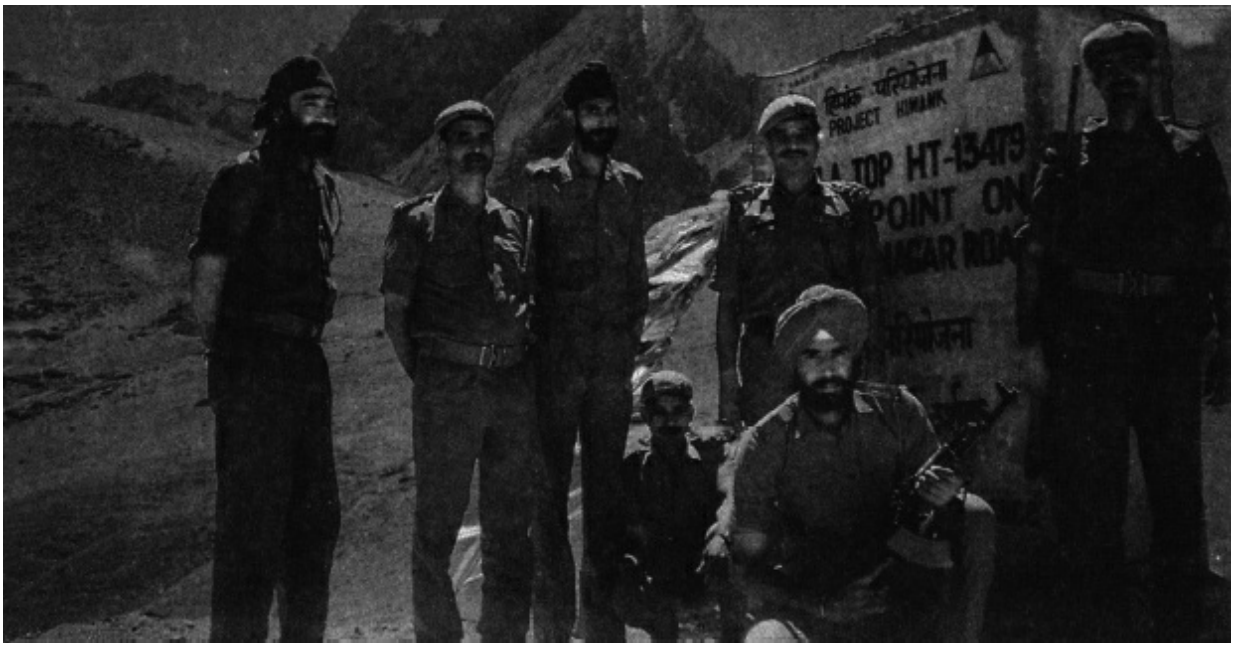
फोटो फीचर



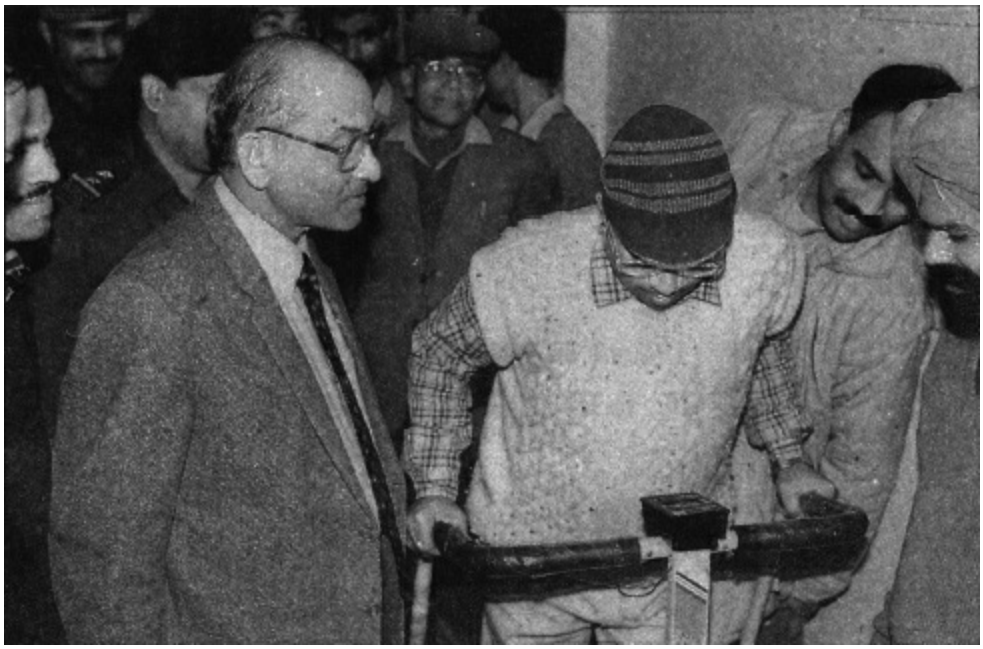
दिल्ली में *15* मार्च *1996* को आर.ए.एफ. की इंटर बटालियन राइट ड्रिल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इस प्रतियोगिता के दौरान आर.ए.एफ. के सदस्य दंगों पर काबू पाने के अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए



14 मार्च *1996* को बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी को उन के रामपुर दौरे के दौरान उन्हें गोल्फ कोर्स के मुख्य संरक्षक की हैसियत से एक स्मृति चिह्न भेंट करते हुए उप महानिरीक्षक श्री जे.एस. नेगी



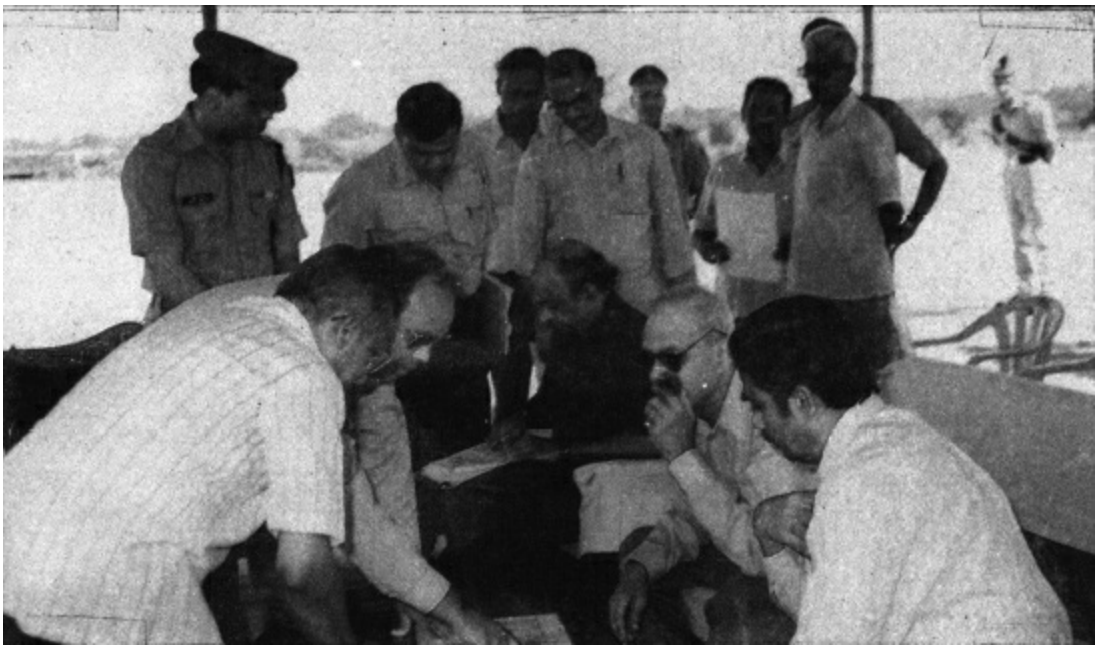
श्रीनगर से लेह की ओर जाते हुए *'94* बटालियन के सदस्य अपने कमांडेट श्री ए.एन. श्रीनिवासन के साथ लेह श्रीनगर राजमार्ग के सबसे उंचे स्थल फोतुला टोप पर। फोतुला टाप की समुद्र तल की ऊंचाई *13479* फुट है।



कार्मिकों के स्वास्थ्य संवर्द्धन की दृष्टि से ग्रुप केंद्र रामपुर में कम्प्यूटराइज्ड जोगर तथा अन्य उपकरणों की स्थापना की गयी है ,जोगर की कार्यप्रणाली का निरीक्षण करते हुए उप महानिरीक्षक श्री जे. एस. नेगी



ग्रुप केंद्र रामपुर स्थित केंद्रीय विद्यालय के वार्षिक उत्सव के अवसर पर फरवरी *'96* में एक छात्रा को सम्मानित करती हुयी उप महानिरक्षक श्री जे.एस. नेगी की धर्म पत्नी श्रीमती कला नेगी



बल के महानिदेशक श्री एस.वी. एम. त्रिपाठी ने माह दिसंबर *'95* में नव स्थापित सी.टी.सी.*-2* स्थल कोयम्बतूर का दौरा कर वहां की निर्माण गतिविधियों का जायजा लिया



ग्रुप केंद्र*-2* अजमेर में *22* फरवरी *'96* को इंटर सेक्टर क्रास कंट्री दौड़ का आयोजन किया गया जिसमें क्रमश: दक्षिण, उत्तर पश्चिम तथा स्पेशल सेक्टर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे। विजेताओं को पुरस्कार आंतरिक सुरक्षा अकादमी के उप निदेशक श्री आर.एम.एस. बरार ने प्रदान किये। बाद में श्री बरार ने प्रतियोगियों को संबोधित भी किया



ग्रुप केंद्र गुवाहाटी में माह दिसंबर *'95* में इंटर सेक्टर फुटबाल प्रतियोगिाता का आयोजन किया गया, जिसे पूर्वोत्तर सेक्टर ने जीत लिया। दक्षिण सेक्टर की टीम दूसरे स्थान पर रही। विजेता टीम के खिलाड़ी पूर्वोत्तर सेक्टर के महानिरीक्षक श्री के. लाल चुंगा के साथ

खेल के क्षेत्र में नई उपलब्धियां

18 से 27 दिसम्बर, 95 तक मद्रास में हुए चौथे दक्षिण एशियाई फेडेरेशन खेलों में बल के खिलाड़ियों ने तीन रजत तथा एक कांस्य पदक जीता। इंस्पेक्टर परमजीत सिंह ने 400 मीटर तथा 4 x 400 मीटर रिले में एक एक रजत पदक जीता तथा सब इंस्पेक्टर (महिला) रिग्जन अंगमो ने मैराथन में एक कांस्य पदक जीता, जबकि इंस्पेक्टर राजा राम टोकस ने 400 मीटर मेडले तैराकी प्रतियोगिता में एक रजत प्राप्त किया।

11 से 20 जनवरी, 1996 नई दिल्ली में हुई लाल बहादुर शास्त्री स्वर्ण कप हाकी प्रतियोगिता सी.आर.पी.एफ. ने बी.एस.एफ. को हरा कर जीत ली।

24 से 29 फरवरी, 96 तक त्रिचूर में हुयी 11वीं राष्ट्रीय महिला भारोत्तोलन प्रतियोगिता में बल के भारोत्तोलकों ने भी भाग ले कर कई पदक प्राप्त किए।

50 कि.ग्रा. श्रेणी में इंस्पेक्टर एन. कुंजारानी देवी ने तीन स्वर्ण, 70 कि.ग्रा. में सब इंस्पेक्टर जीवन ज्योति ने तीन स्वर्ण, 64 कि.ग्रा. श्रेणी में सब-इंस्पेक्टर एन. लक्ष्मी ने तीन स्वर्ण, 54 कि.ग्रा. श्रेणी में सब इंस्पेक्टर एन. मनीतोम्बी देवी ने एक रजत तथा एक कांस्य, 59 कि.ग्रा. श्रेणी में हैड कांस्टेबल एस. नानसीता देवी ने एक रजत तथा एक कांस्य, 76 कि.ग्रा. श्रेणी में हैड कांस्टेबल यू. उत्तम रावमाने ने तीन रजत, 64 कि.ग्रा. श्रेणी में नायक एन.पी. रजिता ने दो रजत तथा एक कांस्य तथा 59 कि.ग्रा.

श्रेणी में नायक प्रातेमा कुमारी ने दो रजत तथा एक कांस्य पदक जीता।

22 से 24 जनवरी, 96 तक नयी दिल्ली में हुयी 35वीं. राष्ट्रीय ओपन एथेलेटिक्स चैंपियनशिप में भाग ले कर बल के कांस्टेबल सुनी जोसफ ने 4 x 400 मीटर रिले में एक कांस्य पदक जीता। प्रतियोगिता में शामिल बल की महिला टीम 4 x 400 मीटर रिले मुकाबले में चौथे स्थान पर रही।

03 मार्च, 96 को बम्बई में हुयी पहली ए.ए.एफ.आई. कप राष्ट्रीय क्रास कंट्री चैंपियनशिप में शामिल बल की महिला टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

45 वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों की कुश्ती, जूडो तथा जिमनास्टिक प्रतियोगिताएं 09 से 12 फरवरी, 96 तक नयी दिल्ली में हुयी।

कुश्ती प्रतियोगिताओं में 68 कि. ग्रा. श्रेणी में कांस्टेबल राम बहल ने एक रजत पदक जीता। इन प्रतियोगिताओं में बल को पांचवा स्थान प्राप्त हुआ।

जिमनास्टिक प्रतियोगिताओं के वाल्टिग होर्स मुकाबले में सब-इंस्पेक्टर चंदू कोले ने स्वर्ण तथा कांस्टेबल प्रबीर मोदक ने रजत पदक जीत कर बल को तीसरा स्थान दिलाया।

भारोत्तोलन प्रतियोगिता में भी बल की टीम दो स्वर्ण तथा दो कांस्य पदक जीत कर तीसरे स्थान पर रही। नायक लालू शाहू ने 54 कि.ग्रा. श्रेणी तथा हैड कांस्टेबल राजेंद्र सिंह ने 76 कि.ग्रा. श्रेणी में स्वर्ण पदक जीते, जबकि लांस नायक प्रदीप कुमार ने 108 कि.ग्रा. श्रेणी और इंस्पेक्टर कमलदीप सिंह ने 108 प्लस श्रेणी में कांस्य पदक जीते।

---

49 बटालियन ने जूडो प्रतियोगिता जीती

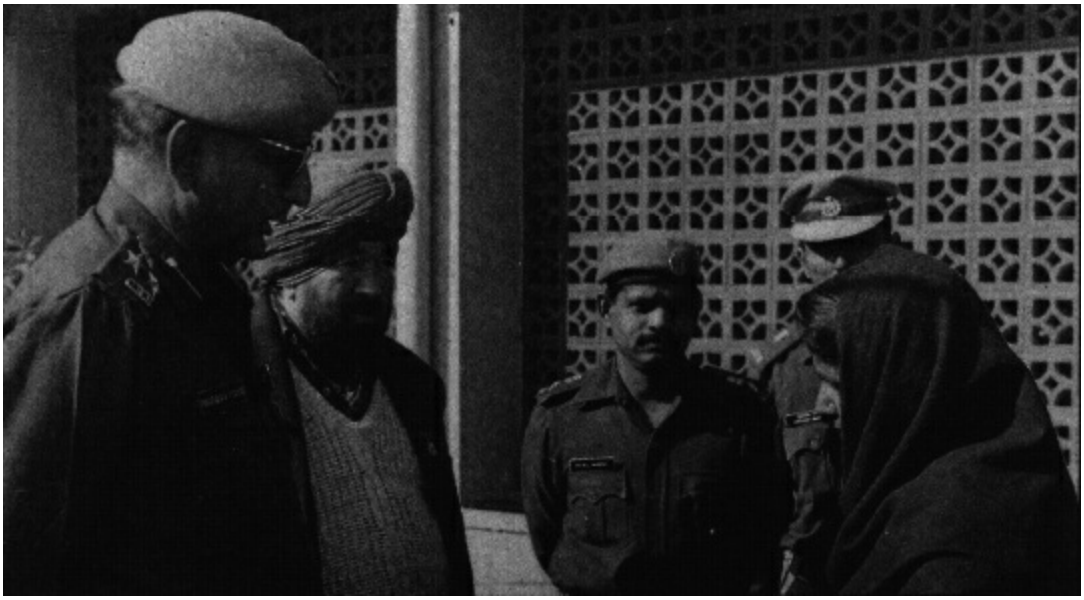
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की पूर्वोत्तर सेक्टर की चतुर्थ अंतर बटालियन जूडो प्रतियोगिता 49 बटालियन ने 15 अंक प्राप्त कर जीत ली।

प्रतियोगिता में 23 बटालियन 9 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रही, जबकि 8 अंक प्राप्त करने पर 35 बटालियन को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

इस पांच दिवसीय प्रतियोगिता का उद्घाटन उत्तर सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.पी. सिन्हा ने 09 मार्च, 96 को किया। जबकि समापन के अवसर पर 13 मार्च 96 को सहायक निदेशक (प्रशिक्षण) श्री जय प्रकाश मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये।

नई दिल्ली कालका जी स्थित 53 बटालियन स्थल पर हुए इन मुकाबलों में पूर्वोत्तर सेक्टर की 12 टीमों ने भाग लिया।

बनतलाब में विधवा कल्याण दिवस



एक विधवा की समस्या सुनते हुए श्री महेंद्र प्रसाद

के.रि.पु. बल के दिवंगत जवानों की विधवाओं तथा निकटतम संबंधियों की समस्याओं तथा शिकायतों को सुनने तथा उनके समाधान के लिए 22 दिसम्बर, 1995 को ग्रुप केन्द्र बनतलाब में विधवा कल्याण दिवस का आयोजन किया गया। आयोजन में जम्मू कशमीर, तथा हिमाचल प्रदेश की 24 विधवाओं तथा उनके निकट संबंधियों ने भाग लिया।

अपर उप महानिरीक्षक श्री महेंद्र प्रसाद के अतिरिक्त ग्रुप केन्द्र के अन्य अधिकारियों ने उनकी समस्याएं सुनी तथा उनके समाधान के लिए यथासंभव कदम उठाने का उन्हें आश्वासन दिया।

आर.ए.एफ. ने गांव गोद लिए

रेपिड एक्शन फोर्स के महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिददकी ने 29 जनवरी, 96 को भोपाल के रायसेन जिले के हिनोतिया गांव में 107 बटालियन द्वारा समग्र, विकास की दृष्टि से तीन गांवों को गोद लेने की घोषणा की।

श्री सिददकी ने तरावली घाट, खड़ी और बाबुलिया गांवों को गोद लेने की घोषणा करते हुए आर.ए.एफ. के जवानों और अधिकारियों से कहा कि वे शासन की कल्याणकारी योजनाओं को लोगों तक पहुंचाएं ताकि वे उनका लाभ ले सकें।

उन्होंने घोषणा की कि आर.ए. एफ. द्वारा रायसेन जिले का एक ऐसा कस्बा जल्दी ही गोद लिया जाएगा, जहां साम्प्रदायिक तनाव का इतिहास रहा है वहां लोगों के बीच

विशेष अभियान चला कर सद्भाव निर्मित कर उसे एक आदर्श कस्बे के रूप में पूरे देश के सामने प्रस्तुत किया जाएगा। श्री सिद्दकी ने कहा कि 107 बटालियन की ही तरह देश के अन्य हिस्सों में तैनात आर.ए.एफ. की बटालियनें जल्दी ही अपने आसपास के पिछड़े गांवों को गोद लेने के कार्यक्रम को हाथ में लेंगी।

इस मौके पर 107 बटालियन के कमांडेट श्री नरेंद्र भारद्वाज ने बताया कि इससे पहले थाना और हिनोतिया गांवों को गोद ले कर वहां शिक्षा और चिकित्सा सुविधा मुहैया कराने के साथ साथ अन्य विकास कार्य भी शुरू किए गए हैं। रायसेन के जिला कलेक्टर डी.सी.राय ने आर.ए. एफ. द्वारा गोद लिए गांवों को दवाएं उपब्ध कराने के लिए रेड क्रास को पांच हजार का अनुदान देने की घोषणा के साथ साथ सड़क तथा पेयजल संबंधी समस्याओं के निराकरण का भी आश्वासन दिया।

आर.ए.एफ. द्वारा अयोध्या में राहत कार्य

26 मार्च, 1996 को अयोध्या में ऐतिहासिक हनुमान गढ़ी से श्री राम जन्म भूमि को जाने वाले मार्ग पर एक बड़ी दिवार के ढह जाने से तीन दर्जन श्रद्धालु मलबे में दब गए, जिनमें चार की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी, मृतकों में दो महिलाएं भी शामिल थीं। वहां चल रहे रामनवमी मेले के दौरान हुयी इस दुर्घटना से तीर्थयात्रियों से हड़कम्प मच गया।

इस दुर्घटना की सूचना मिलते ही हनुमानगढ़ी स्थित आर.ए.एफ. की 101 बटालियन की "बी" कम्पनी के जवान तत्काल घटनास्थल पर पहुंच कर बचाव और राहत कार्यों में जुट गए। इसके बाद सूचना मिलने पर अयोध्या स्थित 101 आर.ए.एफ. बटालियन की अन्य कम्पनियों के जवान भी घटनास्थल पर पहुंच गए। आर.ए.एफ. के जवानों द्वारा तत्काल दो मृतकों तथा 11 घायलों को मलबे में से निकल कर अस्पताल पहुंचा दिया गया।

आर.ए.एफ. द्वारा तत्काल एवं व्यापक स्तर पर चलाए गए इस बचाव एवं राहत कार्य के कारण अधिकाधिक घायलों को तत्काल उपचार सुविधा उपलब्ध हो जाने के कारण उनकी जान की रक्षा हो सकी। आर.ए.एफ. के इस मानवतावादी कार्य की जिला पुलिस तथा प्रशासन ने व्यापक रूप से प्रशंसा की।

संक्षिप्त समाचार

हिन्दी में कार्य के लिए सम्मान

के.रि.पु. बल ग्रुप केन्द्र पिंजौर के अपर उप महानिरीक्षक श्री स्वर्ण सिंह की हिंदी प्रयोग में बढ़ोत्तरी करने के संबंध में उनके सराहनीय प्रयासों तथा उत्कृष्ट योगदान के लिए 15 मार्च, 96 को नई दिल्ली के सपू हाउस सभागार में अधिकारी पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री स्वर्ण सिंह को यह पुरस्कार केंद्रीय महिला एवं बाल विकास

राज्य मंत्री कुमारी वमा ने दिया।

ज्ञातव्य है कि श्री स्वर्ण सिंह को राजभाषा नीति कर अनुपालन करने तथा अधिकाधिक काम हिंदी में करने के लिए गत वर्ष भी हरि बाबू धमार्थ ट्रस्ट द्वारा केंद्रीय सचिवालय, हिंदी परिषद् नई दिल्ली में सम्मानित किया गया था।

माह फरवरी, 1996 में बल के मृत कार्मिक

माह फरवरी, 1996 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

हैड कांस्टेबल दुर्गा बहादुर (26 बटा.), कांस्टेबल/रिक्रूट अजय मिश्रा (ग्रुप केन्द्र मुजफ्फरपुर), हैड कांस्टेबल पी.सी. तिवारी (20 बटा.), कांस्टेबल सैयद अमीर (98 बटा.), कांस्टेबल राजेन्द्र प्रसाद (113 बटा.), कांस्टेबल राम बच्चन चौधरी (53 बटा.), कांस्टेबल सुनील कुमार (28 बटा.), सब-इंस्पेक्टर एस. टीपनो (113 बटा.), बारबर के.के. बालाकृष्णन (आर.टी.सी. 3), कांस्टेबल मथी सिंह (67 बटा.), कांस्टेबल/ड्राईवर मजीद खान (ग्रुप केन्द्र बनतलाब), कांस्टेबल.एम. राजन सिंह (6 बटा.), कांस्टेबल आर.के. छत्तर (116 बटा.), नायक रोबिन तमंग (23 बटा.), कांस्टेबल/ड्राईवर जसवीर सिंह (23 बटा.), कांस्टेबल रामेश्वर कुश्वाहा (23 बटा.), कांस्टेबल सतेंद्र राय (23 बटा.), कांस्टेबल सनतिल कुमार (23 बटा.), सफाई कर्मचारी जी. गजेन्द्रन (आर.टी. सी. 2), नायक/आर.ओए के सुब्रह्मनियम (36 बटा.), हैड कांस्टेबल/ड्राईवर आर. नारायणन पिल्लई (77 बटा.), कांस्टेबल के. रोकप्पा (32 बटा.), हैड कांस्टेबल बीरबल शर्मा (16 बटा.) कांस्टेबल चेलापान्डी (ग्रुप केन्द्र आवड़ी), कांस्टेबल बलेन्द्र कुमार सिंह (36 बटा.), लांस नायक मोहम्मद लतीफ (113 बटा.), सहायक कमान्डेन्ट रोहित श्रीवास्तव (66 बटा.), हैड कांस्टेबल ताज मोहम्मद (66 बटा.), नायक/ड्राईवर सुबोध कुमार सिंह (66 बटा.), कांस्टेबल जोगेश्वर मलिक (66 बटा.), नायक/आर.ओ. विश्वकर्मा श्यामजी (66 बटा.), कांस्टेबल शंकर मोहंती (107 बटा.) और कांस्टेबल ई. बालसुभैया (18 बटा.)।

देर से प्राप्त सूचना के अनुसार जनवरी माह में हैड कांस्टेबल शिशुपाल सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए। .

के.रि.प. बल ने 72 आतंकवादी गिरफ्तार किए

माह फरवरी, 1996 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों तथा अन्य कार्रवाइयों में बल के जवानों ने 72 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस अवधि में आतंकवादियों के साथ हुयी नौ मुठभेड़ों में तीन आतंकवादी मारे गए।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 47 घातक हथियार भी बरामद किए। बरामद हथियारों में नौ ए.के. 47 रायफलें, पांच रायफलें, सात पिस्तौलें, एक.ए.के. 56 रायफल, तीन स्टेनगन, एक यू.पी.एम.जी., एक एस.एल. बार तथा 20 अन्य हथियार

शामिल हैं।

किंतु इस अवधि में आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों तथा आतंकवादियों द्वारा लगायी गयी घातों में बल के 11 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा आठ गंभीर रूप से घायल।



पूर्वोत्तर सेक्टर की अंतर बटालियन जूडो प्रतियोगिता में खिताब के लिए भिड़ते दो खिलाड़ी

पत्रिका सी.आर.पी.एफ. समाचार स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स सैंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

1. प्रकाशन का स्थान	- नई दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	- वर्ष में आठ बार
3. प्रिंटर का नाम	- जी.सी. द्विवेदी
4. नागरिकता	- भारतीय
5. पता	- ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110 003
6. प्रकाशक का नाम, नागरिकता और पता	- उपर्युक्त
7. संपादक का नाम, पता और नागरिकता	- उपर्युक्त
8. उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों।	- महानिदेशक, के.रि.पु. बल, ब्लाक-1 सी.जी.ओ. काम्पलेक्स लोधी रोड, . नई दिल्ली-110003

मैं जी.सी. द्विवेदी एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य हैं।
31 मार्च, 1996

ह.
जी.सी. द्विवेदी
प्रकाशक के हस्ताक्षर

रजि. न. 4767/87



राजधानी में होली मिलन के अवसर पर बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी भी महानिदेशालय स्टाफ कैंप में बल के अधिकारियों एवं जवानों के साथ होली मिलन में शामिल हुए

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

खंड - 9 अंक - 3 31 मई, 1996 10 ज्येष्ठ, शक 1918





लोक सभा चुनावों के दौरान दिल्ली में तैनात बल के कार्मिक

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-9 अंक-3
31 मई, 1996
10 ज्येष्ठ, शक 1918

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र संकलन
एस.के. खन्ना

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय-सूची



सम्पादकीय

विधवा सरिता का पुनर्विवाह

बल को दूसरी महिला बटालियन

फोटो फीचर

महिला भारोत्तोलक सम्मानित

सामाजिक न्याय के प्रति सजग रहे

संक्षिप्त खबरें

सम्पादकीय

135 बटालियन की गांधी नगर ग्रुप केन्द्र में हुयी कसम परेड के साथ ही बल की दूसरी महिला बटालियन भी कर्त्तव्य क्षेत्र में उतर गयी।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अंतर्गत 1986 में महिला बटालियन का गठन किया जाना अपने आप में एक अभूतपूर्व कदम था। अब से पहले देश के अंदर और संभवत: एशिया में यह अपनी तरह का अकेला प्रयास था। पुलिस बलों को विशेष कर अर्द्धसैनिक पलिस बलों को जिन विकट स्थितियों में कार्य करना पड़ता है, उन स्थितियों में महिला पुलिस कर्मियों की तैनाती की बात पर कई मनों में शंका पैदा हुयी थी। किंतु मेरठ में हुए सांप्रदायिक दंगों के दौरान अपनी पहली ही तैनाती के समय बल की इस बटालियन की लड़कियों ने साबित कर दिया कि कर्तव्य के निर्वाह में वह अपने पुरूष साथियों से कहीं कम नहीं पड़ती हैं। इन दंगों के दौरान और बाद में शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा राहत कार्यों में बल की इन लड़कियों ने जो भूमिका निभायी उसने रातों रात इन लड़कियों को देश व्यापी रूप में कर्मठ महिला सिपाहियों के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। उनकी बहादुरी की गाथा तब लगभग सभी पत्र पत्रिकाओं में लिखी गयी। स्वयं तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने उनके कार्यों की भरपूर प्रशंसा की।

इन लड़कियों द्वारा मेरठ में शुरू की गयी कर्त्तव्य यात्रा अब तक अनवरत रूप से जारी है। देश ही नहीं अपितु पड़ोसी देश श्रीलंका तक में भारतीय शांति रक्षक सेना की सहायक टुकड़ी के रूप में इस बटालियन की लड़कियों ने कई करतब दिखाए। यहां कांस्टेबल विमला देवी को सेना पदक से भी सम्मानित किया गया। उन्हें यह पदक प्राप्त करने वाली पहली महिला सिपाही होने का गौरव प्राप्त हुआ। उसके बाद श्रीनगर, अयोध्या, हर संवेदनशील स्थान पर बल की लड़कियां तैनात रही हैं।

मूलत: पुरूषों के जिम्मे आने वाले सुरक्षा कार्यों में महिलाओं की भागीदारी के पीछे भी एक इतिहास है। यों राज्यों की पुलिस में जांच कार्यों में सहायता के लिए महिला पुलिस दस्ता भी होता है, लेकिन आज के अव्यवस्थित और अराजकतापूर्ण माहौल में जहां आये दिन घेराव, आंदोलन, जुलूस, हिंसा और दंगों का माहौल रहता है, वहां इन महिला पुलिस दस्तों से बहुत अपेक्षाएं नहीं की जा सकती। खास कर जब सामाजिक जागृति एवं शिक्षा के प्रसार ने इन आंदोलनों में महिलाओं क़ी भागीदारी काफी बढ़ा दी हो। इसीलिए एक ऐसी प्रशिक्षित महिला बटालियन की आवश्यकता महसूस की जा रही थी जो महिला दंगाइयों और उपद्रवियों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित कर सके, क्योंकि कई बार महिला आंदोलनकारियों के आगे पुलिस प्रशासन ने अपने आप को असहाय पाया है। इन्हीं सब कारणों की पृष्ठभूमि में देश की पहली महिला पुलिस बटालियन का गठन हुआ।

देश में हर राज्य से लगातार बढ़ती इस बटालियन की मांग इसकी सफलता का

प्रतीक है। ये महिलाएं यह साबित कर चुकी हैं कि चाहे कितनी ही खतरनाक स्थिति क्यों न हो, वे हर स्थिति का सामना करने के लिए न केवल तैयार हैं, अपितु पूर्णतया: सक्षम भी।

उनकी इस सफलता ने इस नयी बटालियन के गठन का रास्ता प्रशस्त किया है; हम उम्मीद करते हैं कि यह बटालियन भी अपनी पूर्ववर्ती बटालियन की राह पर चलते हुए नए कीर्तिमान स्थापित कर और महिला बटालियनों के गठन का मार्ग प्रशस्त करते हुए यह साबित कर देगी कि वर्दी केवल पुरूषों की बपौती नहीं।

विधवा सरिता का पुनर्विवाह

के.रि.पु. बल वाइव्ज वेलफेयर ऐसोसिएशन (कावा) के तत्वावधान में 37 बटा. के स्वर्गीय कान्स्टेबल धरमबीर सिंह की पत्नी श्रीमती सरिता का विवाह 21 अप्रैल, 1996 को रवीन्द्र रंगशाला प्रांगण में रनबीर सिंह के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह रस्म के अन्त में कावा अध्यक्षा श्रीमती इंदु त्रिपाठी ने नवदम्पति को आशीर्वाद दिया। उन्होंने एसोसिएशन की ओर से पांच हजार रूपये का एक चैक और घरेलू उपयोग का सामान भी उन्हें भेंट किया।

दो वर्षीय पुत्र और चार साल की बेटी की मां सरिता का विवाह उसके स्वर्गीय पति कांस्टेबल धरमबीर के छोटे भाई रनबीर से कराया गया है और उसे के.रि.पु. बल में कांस्टेबल पद पर भर्ती किया जायेगा।

कावा अध्यक्षा श्रीमती इन्दु त्रिपाठी ने इस अवसर पर एसोसिएशन द्वारा बल कर्मियों के परिवारों के कल्याण के लिए चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि इनमें सबसे अधिक प्राथमिकता कर्त्तव्य की बलिवेदी पर मृत कर्मियों की विधवाओं के पुनर्विवाह को दी जा रही है जिससे उन्हें समाज में सम्मान का स्थान मिल सके।

कावा द्वारा यह दूसरी विधवा का विवाह कराया गया है। इससे पहले 30 दिसम्बर, 95 को श्रीमती रेखा का विवाह प्रवीन कुमार से कराया गया था।



सरिता को वरमाला पहनाते हुए रनबीर

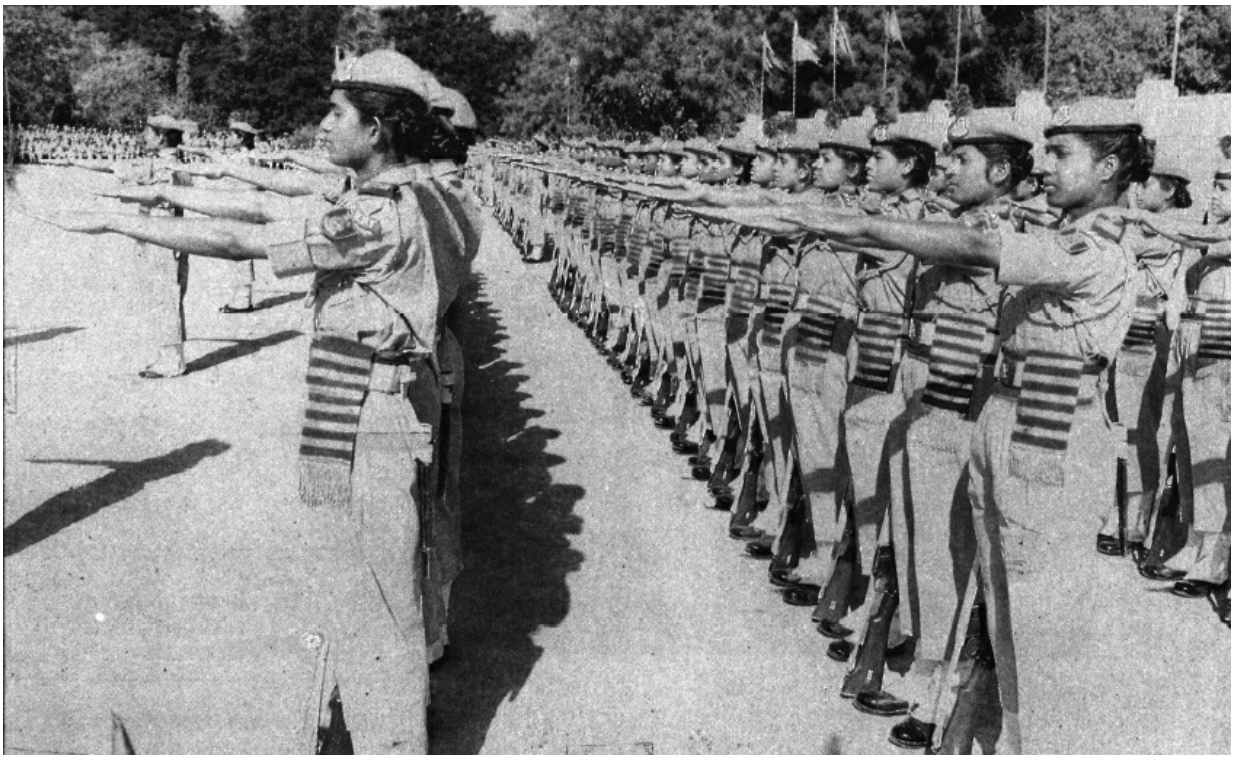
बल की दूसरी महिला बटालियन कर्त्तव्य

क्षेत्र में

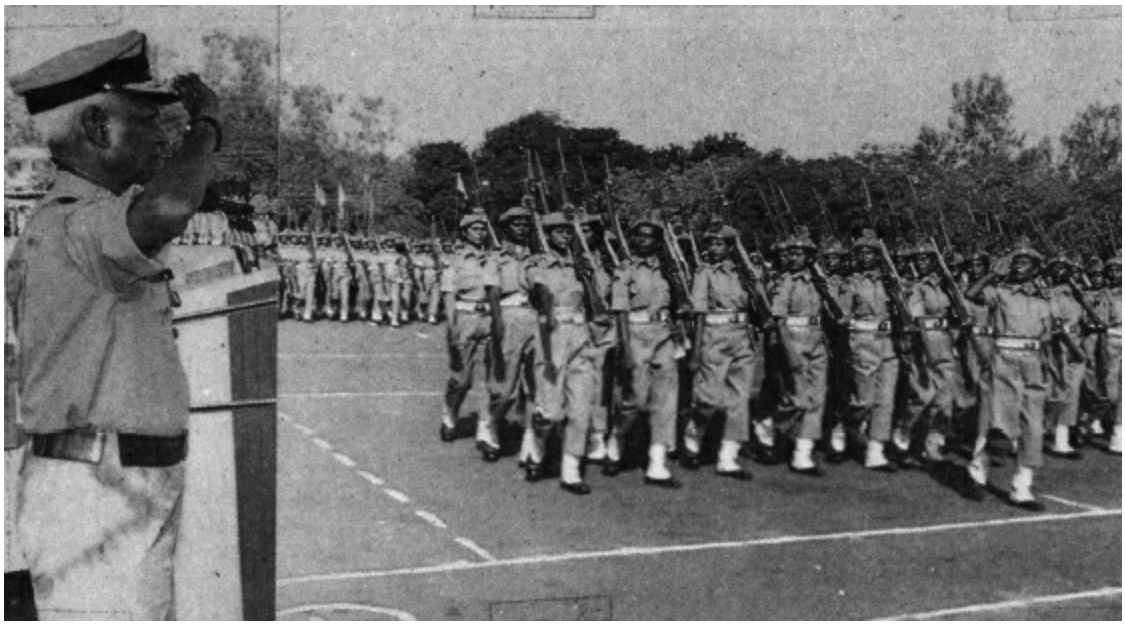
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की नवगठित दूसरी 135 महिला बटालियन की 744 महिला कांस्टेबलों ने 06 अप्रैल, 1996 को अपना 40 हफ्ते का प्रशिक्षण पूर्ण कर कर्तव्य के प्रति निष्ठा की शपथ ली। बटालियन हैडक्वार्टर गांधीनगर में हुई शानदार पासिंग आउट परेड में बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने परेड की सलामी ली तथा उत्कृष्ट प्रशिक्षार्थियों को पुरस्कार भी प्रदान किये। विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए ललिता कालौनी, आभा कुमारी, पी. नागमणि, सुशीला कुजुर तथा तनुश्री सिन्हा को सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी घोषित किया गया।

इस मौके पर बोलते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने महिला कांस्टेबलों को अपना प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने पर बधाई दी तथा आह्वान किया कि वो अपने कर्तव्य का पालन पूर्ण निष्पक्षता धैर्य तथा संयम के साथ करें। उन्होंने कहा कि उनकी व्यावसायिक दक्षता का परीक्षण भविष्य में चुनौतियों का सामना करते वक्त होगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि 135 महिला बटालियन की सदस्य बल की उच्च परम्पराओं के अनुरूप अपेक्षाओं पर खरी उतरेंगी।

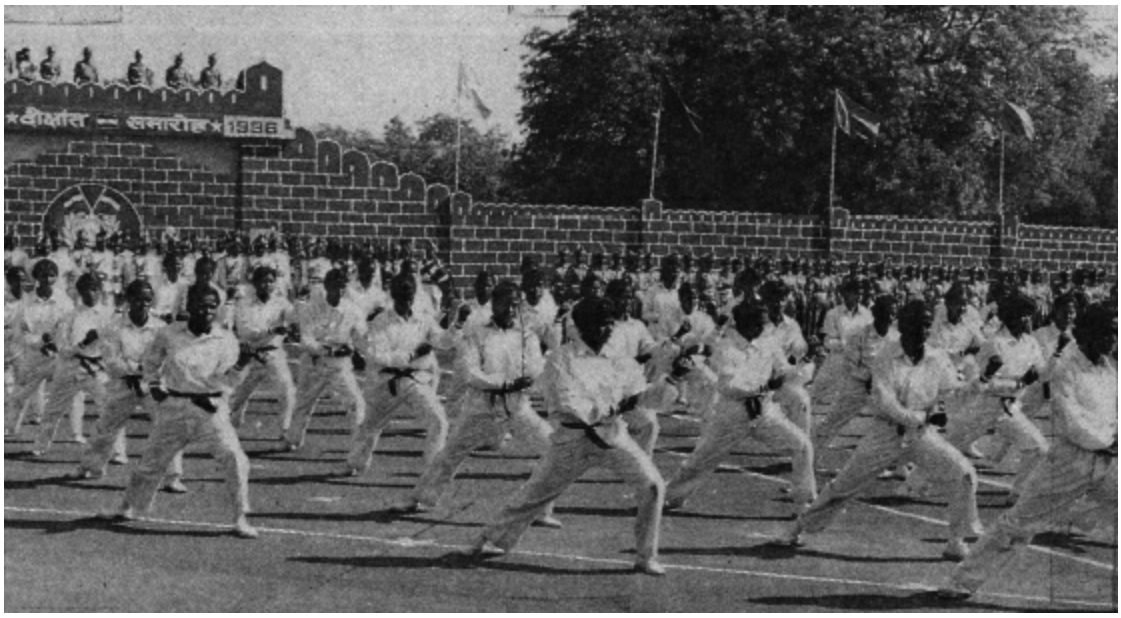
श्री त्रिपाठी ने कहा कि 1986 मे खड़ी की गई बल की पहली महिला बटालियन ने देश और विदेश में जहां कहीं भी उसे तैनात किया गया, अपनी कार्यकुशलता से लोगों का हृदय जीता है तथा अपनी कार्य निपुणता के लिए कई पुरस्कार भी जीते हैं। उन्होंने न केवल साम्प्रदायिक दंगों के दौरान स्थितियों को सामान्य बनाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है अपितु कानून व व्यवस्था की स्थिति बनाये रहने के लिए कश्मीर जैसे प्रदेश तथा भारतीय शांति रक्षक सेना के एक अंग के रूप में श्री लंका में उनकी भूमिका प्रशंसनीय रही है।



कर्तव्य के प्रति निष्ठा और समर्पण की शपथ लेती हुयी *135* महिला बटालियन की सदस्य



परेड की सलामी लेते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी



पी.टी. का प्रदर्शन करते हुए *135* महिला बटालियन की सदस्य



इस मौके पर बटालियन की कार्मिकों ने लोक नृत्य भी प्रस्तुत किये

इससे पूर्व महानिदेशक श्री त्रिपाठी ने परेड का निरीक्षण किया तथा उसकी सलामी ली। डिप्टी कमान्डेन्ट श्रीमती राखी साही के नेतृत्व में 135 महिला बटालियन की कांस्टेबलों ने एक आकर्षक मार्च पास्ट प्रस्तुत किया। शपथ ग्रहण के बाद उन्होंने बिना हथियार के लड़ाई, मास पी.टी., लेजियम तथा विभिन्न प्रांतों के लोकनृत्यों का भी प्रदर्शन किया।

महानिदेशक महोदय ने कांस्टेबल सुशीला कुजूर को बिना हथियार की लड़ाई के लिए, पी. नागमणि को फायरिंग के लिए, ललिता कालौनी को आउट डोर विषयों के

लिये तथा आभा कुमारी को इनडोर विषयों के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थियों के खिताब प्रदान किये।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से माह अप्रैल, 1996 में मृत्यु के 25 मामलों में कुल 10,24,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए। इसी प्रकार अक्षमता के 7 मामलों में कुल 1,05,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए।

जोक्षिम निधि "बी" स्पेशल कल्याण निधि से भी इसके 2 सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 70,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए।

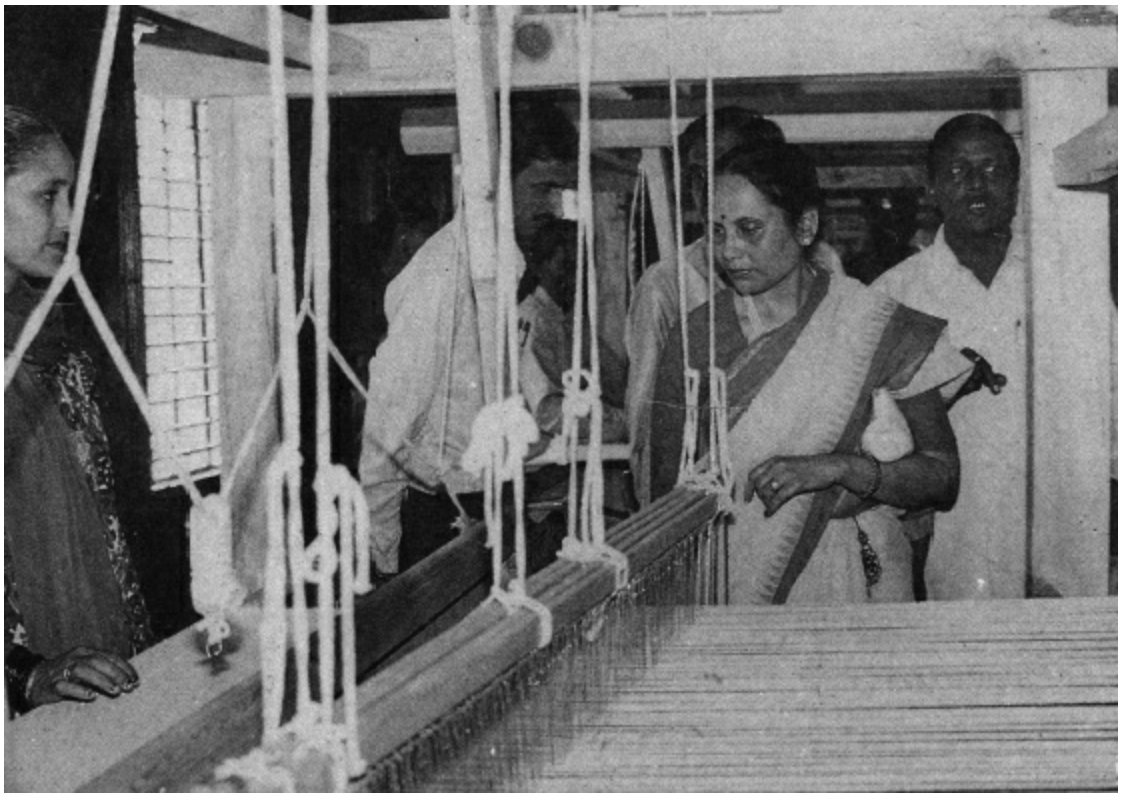
फोटो फीचर

कुंजारानी पदोन्नत



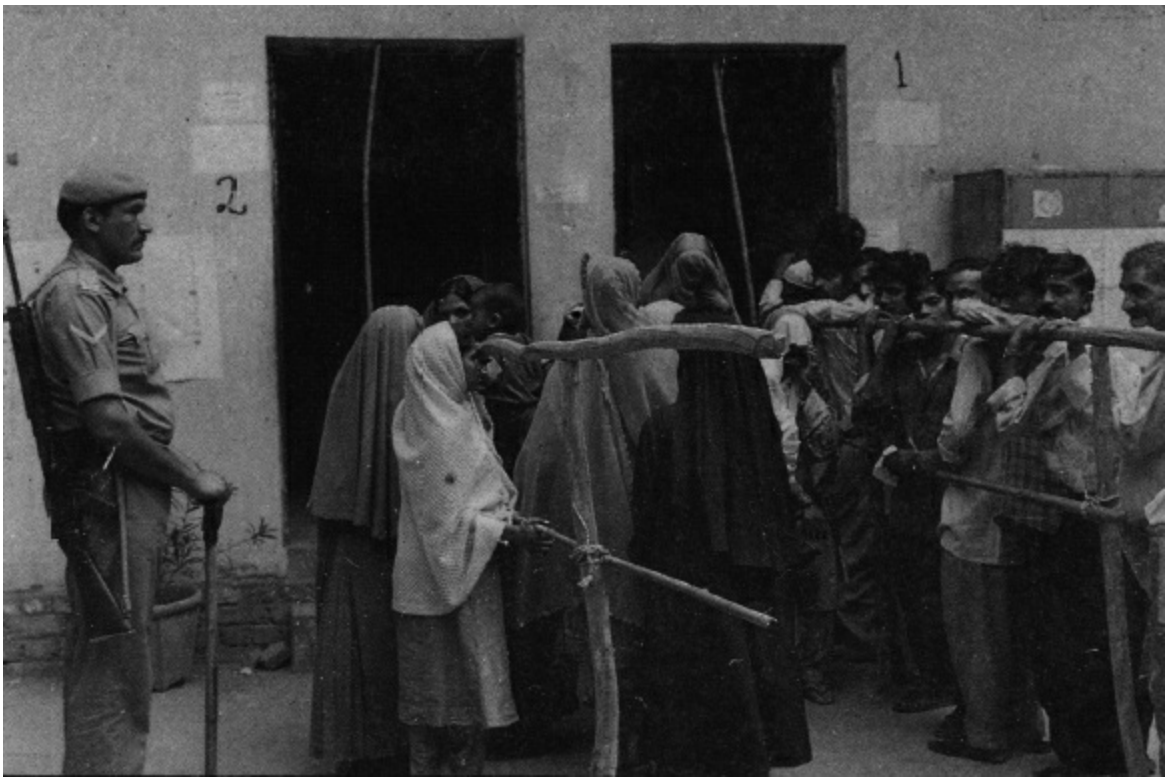
भारोत्तोलन के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियां हासिल करने पर इंस्पेक्टर एन, कुंजारानी को सहायक कमांडेट पद पर पदोन्नत करते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

103 बटालियन में कल्याण केंद्र

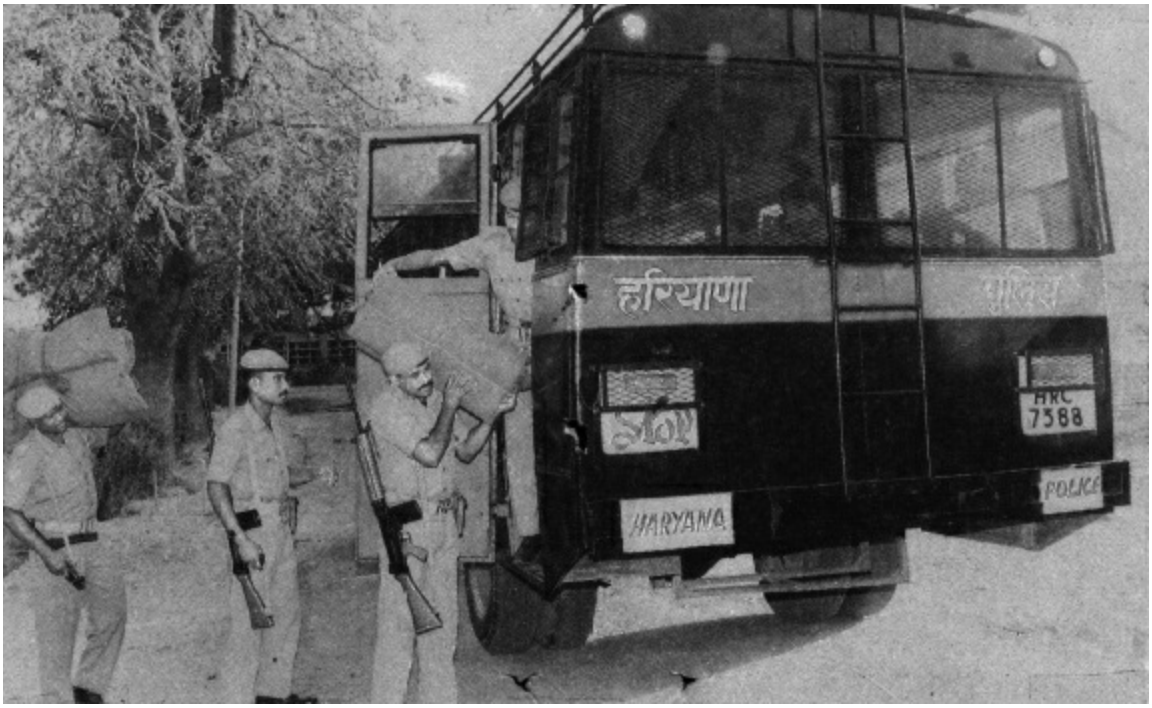


103 आर.ए.एफ. बटालियन में एक कल्याण केंद्र की स्थापना की गयी। केंद्र का निरीक्षण करती हुयीं श्रीमती इंदु त्रिपाठी

दिल्ली में चुनाव



दिल्ली में हुए लोक सभा चुनावों के दौरान एक मतदान केंद्र पर तैनात बल का एक कार्मिक

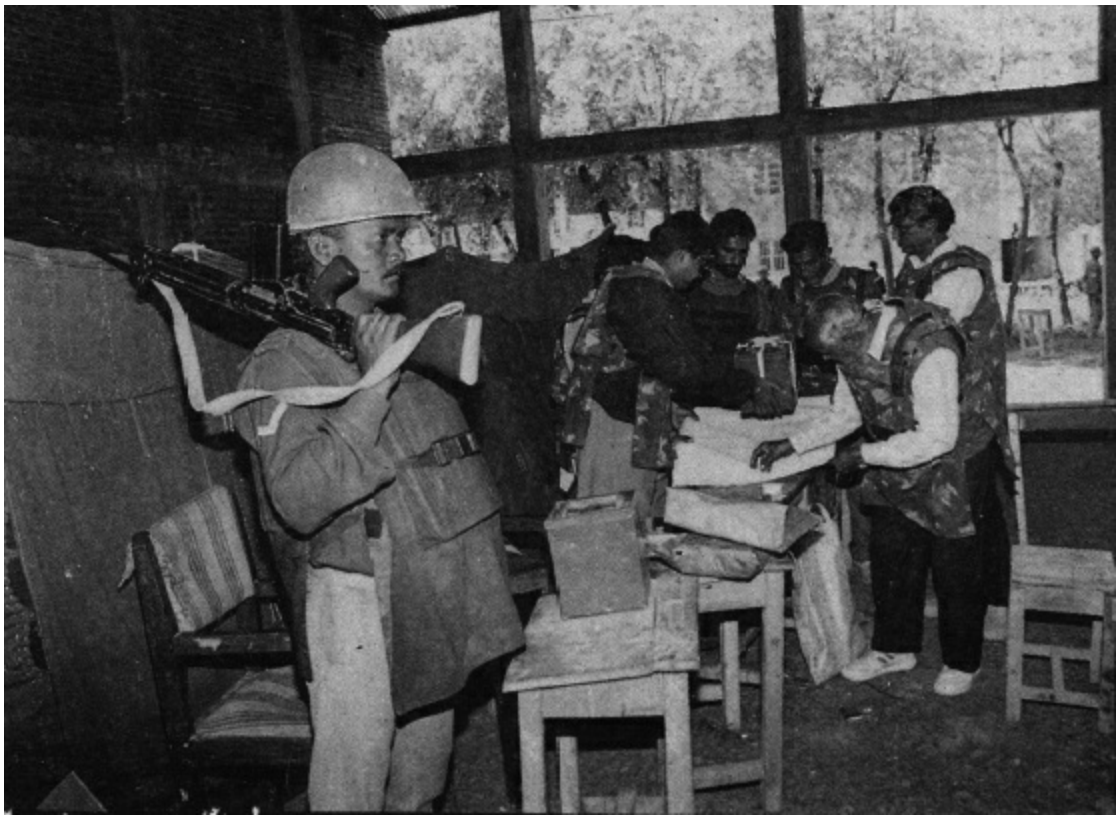


लोक सभा चुनावों के दौरान के.रि.पु. बल की टुकड़ियां तेजी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर तैनात की गयी।
गुड़गांव में चुनाव के बाद अगले गंतव्य के लिए प्रस्थान करती बल की एक टुकडी

जम्मू-कश्मीर चुनावों में बल की तैनाती

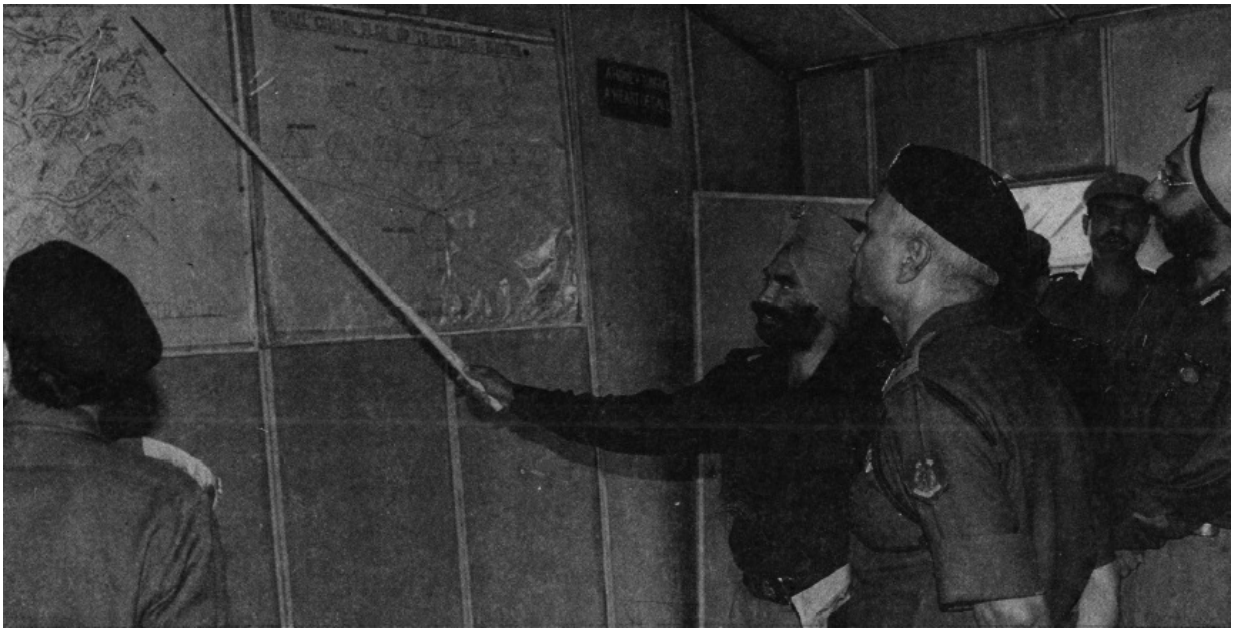


कश्मीर में मतदान को सुचारू ढंग से संपन्न कराने के लिए तैनात बल के कार्मिक



श्रीनगर में बल के कार्मिकों की निगरानी में मतदान कर्मचारी

महानिदेशक का कश्मीर दौरा



चुनाव पूर्व गतिविधियों का जायजा लेने के लिए कश्मीर दौरे पर गए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी घाटी में बल की संचार व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए



कश्मीर में बल के जवानों द्वारा बरामद हथियारों का अवलोकन करते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

महिला भारोत्तोलक सम्मानित



सम्मानित पदक विजेताओं के साथ महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की तीन महिला भारोत्तोलकों इंस्पेक्टर कुंजारानी देवी, सब इंस्पेक्टर जीवन ज्योति तथा सब इंस्पेक्टर मनीतोम्बी देवी को बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने 10 अप्रैल, 96 को बल के महानिदेशालय में आयोजित एक अनौपचारिक समारोह में याचियो (जापान) में हुयी नवीं एशियायी महिला भारोत्तोलन प्रतियोगिता में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने के लिए सम्मानित किया। इस मौके पर बल के अपर महानिदेशक सहित बल के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इससे पूर्व जापान से लौटने पर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर इन महिला भारोत्तोलकों का अभूतपूर्व स्वागत किया गया।

इस मौके पर बोलते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने बताया कि इंस्पेक्टर कुंजारानी को सहायक कमान्डेन्ट पद पर पदोन्नत करने के लिए गृह मंत्रालय से सिफारिश की गयी है। उन्होंने दो अन्य सब इंस्पेक्टरों जीवन ज्योति तथा नीलम लक्ष्मी को इंस्पेक्टर पद पर पदोन्नत करने की घोषणा की।

इन तीनों ही महिला भारोत्तोलाकों ने 04 से 09 अप्रैल, 1996 तक याचियो (जापान) में हुयी एशियायी महिला भारोत्तोलन प्रतियोगिता में भाग ले कर पदक प्राप्त किये थे। इंस्पेक्टर कुंजारानी देवी ने 46 किलोग्राम भार श्रेणी में कांस्य पदक प्राप्त किया, जबकि मनीतोम्बी देवी 50 किग्रा श्रेणी में पांचवे स्थान पर रही। इस प्रतियोगिता में विभिन्न एशियायी देशों की 54 महिला प्रतियोगियों ने भाग लिया।

अर्जुन अवार्ड विजेता कुंजारानी देवी ने अब तक विश्व प्रतियोगियों में 15 रजत पदक तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में 40 पदक जीते हैं। मनीतोम्बी देवी ने 1995 में चीन में हुयी विश्व प्रतियोगिता में चौथा स्थान हासिल किया था। वो 1995 की राष्ट्रीय चैंपियन भी है। जीवन ज्योति 1994, 1995 तथा 1996 में राष्ट्रीय खिताब जीत

चुकी हैं। सब इंस्पेक्टर नीलम लक्ष्मी 1995 में चीन में हुयी विश्व प्रतियोगिता में तीन रजत पदक जीत चुकी हैं। हाल ही में त्रिचुर में हुए राष्ट्रीय मुकाबलों में उन्हें सर्वश्रेष्ठ भारोत्तोलक घोषित किया गया है।

सामाजिक न्याय के प्रति सजग रहे

-न्यायमूर्ति सरदार अली खान



कोर्स की समाप्ति पर एक अधिकारी को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए कुलपति प्रो. ताकवले

भारतीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति मोहम्मद सरदार अली खान ने पुलिस बलों का आह्वान किया कि वे कर्तव्य निर्वाह के दौरान सामाजिक न्याय के प्रति सजग रहें। उन्होंने कहा कि अगर वो पूर्वाग्रहों से मुक्त हो कर कार्य करेंगे, तो यह उनके लिए कठिन नहीं होगा।

न्यायपूर्ति मोहम्मद सरदार अली खान 08 अप्रैल, 1996 को रेपिड एक्शन फोर्स के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए आयोजित एक सात दिवसीय ओरियंटेशन कोर्स का समापन भाषण देते हुए बोल रहे थे। इस कोर्स का संचालन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के विस्तार केंद्र ने किया था।

इस मौके पर बोलते हुए न्यायमूर्ति मोहम्मद सरदार अली खान ने आर.ए.एफ. की प्रशंसा करते हुए कहा कि आर.ए.एफ. ने साम्प्रदायिक दंगों से प्रभावी ढंग से निबटने के कारण देश व्यापी रूप से एक निष्पक्ष बल की छवि बनायी है। उन्होंने कहा कि आज जबकि विश्व बहुत नजदीक आ रहा है, यह देख कर कष्ट होता है कि आज साम्प्रदायिक हिंसा लोगों को बांट रही है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान अर्जित करने के लिए हमें स्वयं को एक संगठित देश के रूप में प्रस्तुत करना होगा।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामजी ताकवले ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि जैसे जैसे हमारा समाज पेचीदा होता जा रहा है वैसे-वैसे पुलिस की भूमिका भी बदलती जा रही है। रेपिड एक्शन फोर्स का उदय शांति स्थापित करने वाले एक ऐसे बल के रूप में हुआ है जो कि साम्प्रदायिक दंगों के शिकार लोगों के घावों पर मरहम लगाने का काम करता है। यह बात खुद बताती है कि अर्द्ध-सैनिक बलों की भूमिका में क्या बदलाव आया है। किन्तु ऐसे हालात का मुकाबला करने के लिए अपने क्षेत्र में प्रशिक्षत होने के साथ-साथ इन जवानों के लिए यह भी जरूरी है कि वे अलग-अलग तरह के लोगों के साथ सम्पर्क करने की जिम्मेदारी को समझें और उसमें कुशलता लाएं। उनकी संस्कृति, परम्परा, रीति-रिवाज और जिसे कि हम में सामाजिक वास्तविकता तथा जन परिपेक्ष्य कहते हैं इनसे जुड़े हुए दूसरे पक्षों को भी समझने का प्रयास करें। जरूरी है कि वे समाज में इस तरह की बुराइयां फैलाने वाले निहित स्वार्थी तत्व जो तरीके और रणनीति अपनाते हैं उनको भी समझे।

कुलपति ने यह भी कहा कि रेपिड एक्शन फोर्स के अधिकारियों और जवानों के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय शीघ्र ही एक शैक्षिक पैकेज तैयार करने वाला है, जिसमें वर्तमान सामाजिक वास्तविकताओं से जुड़े हुए अन्य मुददों जैसे वैज्ञानिक मानसिकता का निर्माण, साम्प्रदायिकता की बुराइयां, सांस्कृतिक विभिन्नताएं, राष्ट्रीय एकजुटता, व्यावहारिक पहलू आदि शामिल किए जाएंगे।

विस्तार केंद्र के निदेशक प्रो. कपिल कुमार ने इस मौके पर बोलते हुए कहा कि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्व विद्यालय अपने विस्तार शिक्षा कार्यक्रमों के द्वारा साम्प्रदायिकता के खिलाफ जन चेतना जागृत करने में अहम भूमिका निभा सकता है। आज मामला साम्प्रदायिक दंगों को नियंत्रित करने का ही नहीं है बल्कि ऐसा माहौल बनाने का भी है, ताकि ऐसी घटनाएं फिर घटित न हों। इसके साथ ही दंगा पीड़ितों की मदद करने के लिए लोगों को तैयार भी करना है।

इससे पूर्व 02 अप्रैल, 96 को कोर्स का उद्घाटन करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने जोर देकर कहा कि पुलिस को मात्र कानून लागू करने वाली तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने वाली एजेंसी की अपेक्षा अपनी पहचान समाज में शांति रक्षक के रूप में बनानी चाहिए। इससे न केवल जनता में पुलिस की छवि निखरेगी अपितु इससे जनता के बीच पुलिस के प्रति विश्वास में भी बढ़ोतरी होगी। हालांकि इसके लिए पुलिस को अंग्रेजों द्वारा स्थापित अपने पुराने स्वरूप को बदलने

के लिए गम्भीर प्रयास करने होंगे।

साम्प्रदायिक हिंसा के संबंध में बोलते हुए श्री त्रिपाठी ने कहा कि आंतरिक सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था की जिम्मेदारी दो भिन्न स्थितियां है तथा इस संबंध में स्थिति पूरी तरह स्पष्ट होनी चाहिए कि कौन सी स्थिति से निपटने की जिम्मेदारी पुलिस को दी जाएगी तथा कौन सी स्थिति से निपटने की जिम्मेदारी अन्य एजेंसियों को। उन्होंने कहा कि साम्प्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के लिए पुलिस तथा प्रेस को एक जुट हो कर काम करना चाहिए।

श्री त्रिपाठी ने उस समय रेपिड एक्शन फोर्स द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका की प्रशंसा की जबकि साम्प्रदायिक तनाव से हमारे मूलभूत सामाजिक ढांचे के चरमराने का खतरा पैदा हो जाता है। उन्होंने कहा कि पुलिस के लिए आत्म विश्लेषण का यह सही अवसर है। इस विश्लेषण द्वारा पुलिस को अपनी खामियों को पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

इस कार्यक्रम में 21 वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। इन अधिकारियों से बातचीत करने के लिए माने हुए विद्वान और पत्रकारों को आमंत्रित किया गया था जिनमें कुछ मुख्य है : प्रो. योगेन्द्र सिंह, प्रो रणधीर सिंह, प्रो. महेंद्र सिंह, प्रो. एस.एन.झा, श्री प्रफूल किदवई, श्री असद जैदी, श्री अभय दुबे, डॉ. अचिन बिनायक, डॉ. ए.एस. नारंग, प्रो. मिहिर भट्टाचार्य, डॉ. जवरीमल्ल पारख, प्रो. मुशीरूल हसन एवं प्रो. जोया हसन।

धनपत राय यादव सेनानिवृत्त

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उप निदेशक (प्रशासन) श्री धनपत राय यादव ने अपनी 33 वर्षों की सेवा के बाद बल के महानिदेशालय से 30 अप्रैल, 1996 को अवकाश ग्रहण किया। उन्हें बल के अधिकारियों तथा अन्य कार्मिकों ने 02 मई, '96 को भावभीनी विदाई दी।

श्री यादव बल के उप निदेशक (प्रशासन) के पद पर 30 अगस्त, 1994 से कार्यरत थे। उससे पहले वह उप महानिरीक्षक चंडीगढ़ पद पर तैनात थे। पंजाब विश्वविद्यालय से एम.ए. श्री यादव 27 सितम्बर, 1963 को सेना की रेजीमेंट आर्टीलरी में शामिल हुए तथा 23 सितम्बर, 1967 को सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी के रूप में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में शामिल हो गए। श्री डी.आर. यादव यादव अधिकारियों के उस पहले बैच से संबंध रखते हैं, जिन्होंने मणिपुर में भूमिगत तत्वों से निबटने के लिए ग्रामीण स्वैच्छिक बल (विलेज वालंटियर फोर्स) का गठन, प्रशिक्षण तथा संचालन किया।



डी.आर. यादव

श्री यादव को राष्ट्रपति के विशिष्ट तथा उल्लेखनीय सेवाओं के पुलिस पदकों तथा महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क तथा पत्र से सम्मानित किया जा चुका है।

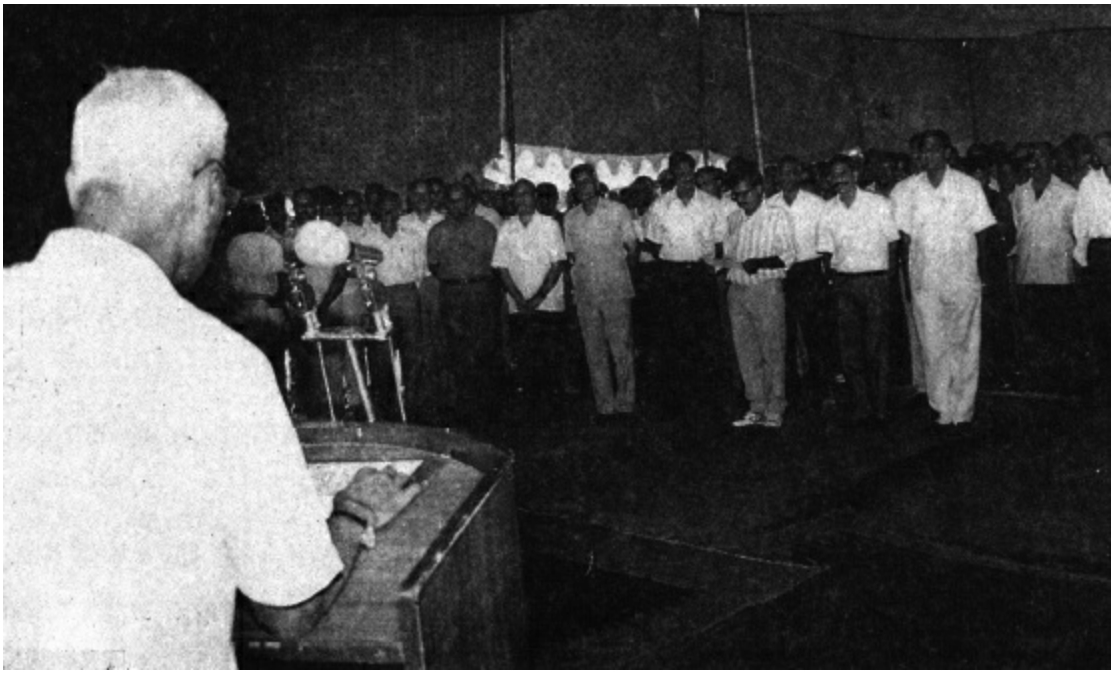
संक्षिप्त खबरें

माह अप्रैल, 1996 में बल के मृत कार्मिक

माह अप्रैल, 1996 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतृप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

हैड कांस्टेबल/डाईवर सरजीत सिंह (125 बटा.), कांस्टेबल/फिटर नरेंन शाह (41 बटा.), कांस्टेबल एम. मुरलीधरण (13 बटा.), सब इंस्पेक्टर सुच्चा सिंह (40 बटा.), नायक दुर्गा राय (45 बटा.), नायक मामन राम (8 बटा.), कांस्टेबल अशोक कुमार (21 बटा.), हैड कांस्टेबल/कारपेंटर राम बिलास मिस्त्री (87 बटा.), लांस नायक वी.आर. माली (74 बटा.), इंस्पेक्टर (एम) राकेश कुमार शर्मा (ग्रुप केन्द्र जालंधर), कांस्टेबल विजय कुमार राय (133 बटा.), कांस्टेबल प्रकाश सिंह यादव (133 बटा.), कांस्टेबल यू. जलगनन्दन (133 बटा.), कांस्टेबल/ड्राईवर हरजिंद्र सिंह (ग्रुप केन्द्र पिन्जौर), कांस्टेबल बलवंत राय (119 बटा.), कांस्टेबल प्रदीप कुमार सरकार (116 बटा.), कांस्टेबल/ड्राईवर राज कुमार सिंह (104 बटा.), सब-इंस्पेक्टर विश्वनाथ प्रसाद (121 बटा.), कांस्टेबल सिया राम राय (ग्रुप केन्द मुजफ्फरपुर), कांस्टेबल प्रकाश राय (109 बटा.), हैड कांस्टेबल के.बी. बेनी (53 बटा.), सहायक कमान्डेन्ट विरेन्द्र सिंह (ग्रुप केन्द्र भोपाल), कांस्टेबल राम केवल (8 बटा.), सफाई कर्मचारी बलबीर सिंह (बस अस्पताल-1), सब इंस्पेक्टर बहादुर सिंह (93 बटा.), हैड कांस्टेबल नन्द जी यादव (93 बटा.), कांस्टेबल पी.के. बेहरा (83 बटा.), हैड कांस्टेबल देवी दत्त (74 बटा.)।

आतंक के विरूद्ध संघर्ष की शपथ



21 मई *1996* को पूरे देश में फैली बल की युनिटों ने आतंकवाद के विरूद्ध सतत संघर्ष की शपथ ली। महानिदेशालय में बल के कार्मिकों को यह शपथ महानिदेशक महोदय ने दिलायी।

---

149 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अप्रैल, 96 में देश भर में 149 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी 15 मुठभेड़ों में आठ आतंकवादी मारे गए।

इस दौरान बल के कार्मिकों ने 68 हथियार तथा भारी मात्रा में गोली बारूद बरामद किया। बरामद हथियारों में सात ए.के. 47 राइफलें, 10 ए.के. 56 रायफलें, तीन रायफलें, 23 पिस्तौले, एक स्टेनगन, एक ए.के. 76 रायफल, एक यू. एम.जी, एक एल.एम.जी. तथा 21 अन्य हथियार शामिल हैं।

इस दौरान हुयी मुठभेड़ों तथा आतंकवादियों द्वारा लगायी गयी घातों में बल के पांच जवान मारे गए तथा 19 गंभीर रूप से घायल हुए



रेपिड एक्शन फोर्स के अधिकारियों के लिए आयोजित ओरियंटेशन कोर्स के समापन के अवसर पर अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति सरदार अली खान

रजि. न. 47167/87



135 महिला बटालियन की सदस्य अपनी पासिंग आउट परेड के दौरान कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा की शपथ लेते हुए

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

खंड - 9 | अंक - 4 | 30 जून, 1996 | 9 आषाढ़, शक 1918



केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 45वीं अखिल भारतीय पुलिस हाकी चैम्पियनशिप की रनर अप ट्राफी प्रदान करते हुए केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री तस्लीमुद्दीन



महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी को *30* जून *1996* को उनकी सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई दी गयी

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-9 अंक-4
30 जून, 1996
9 आषाढ़, शक 1918

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

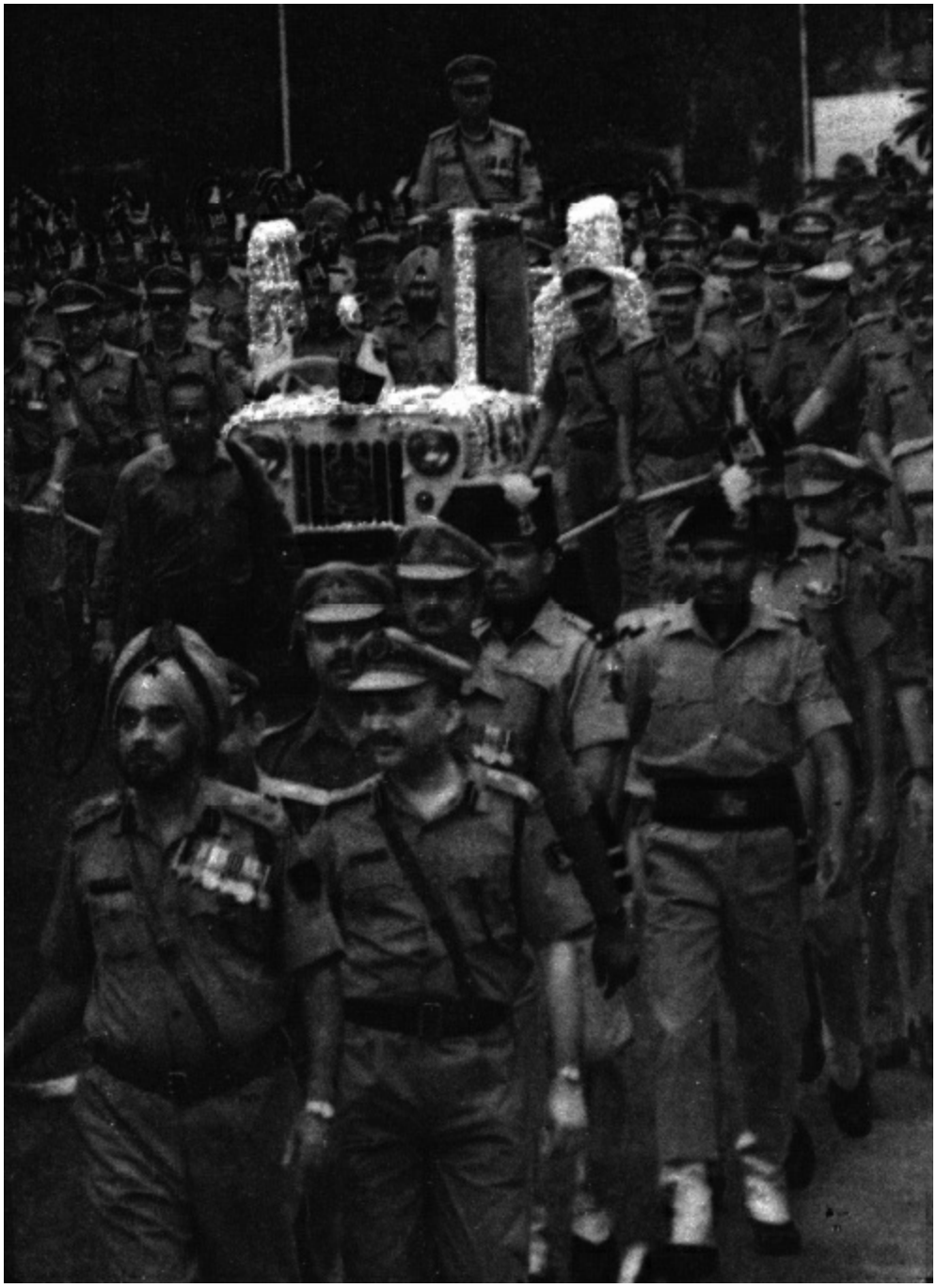
चित्र
एस.के. खन्ना
ए.एन. सिंह
डी.एन. तिवारी

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल - ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय-सूची



सम्पादकीय

बल के चार कार्मिकों को-शौर्यता पदक

लोक सभा चुनाव

एक और विधवा का विवाह

45वीं अखिल भारतीय पुलिस हाकी

महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी को सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई

संक्षिप्त खबरें

फुरसत में

सम्पादकीय

चुनाव आयोग के मुताबिक इस बार के आम चुनाव में उम्मीद से कहीं कम हिंसा हुयी। चुनाव आयोग का दावा है कि यह चुनाव अब तक का सबसे शांत और व्यवस्थित आम चुनाव था। मतदान के तीसरे चरण में बिहार में जरूर कुछ हिंसा हुयी, किंतु जम्मू और कश्मीर में हुआ शांतिपूर्ण मतदान अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। लद्दाख में 75 से 80 फीसदी और जम्मू में 53 से 60 फीसदी तक मतदान हुआ। विश्व में सबसे बड़े लोकतंत्र में अब तक के सबसे बड़े चुनाव को अब तक का सबसे शांत व व्यवस्थित चुनाव बनाने का काफी कुछ श्रेय चुनाव के दौरान शांति व्यवस्था के लिए तैनात मुस्तैद सुरक्षा बलों को भी जाता है। इन सुरक्षा बलों में के.रि.पु. बल की खासी बड़ी भागीदारी थी।

जम्मू कश्मीर में हुए शांतिपूर्ण मतदान ने विशेष रूप से सुरक्षा बलों और प्रशासन की विश्वसनीयता और कारगरता को देश के साथ साथ पूरे विश्व के समक्ष सिद्ध किया है। यह अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। जम्मू कश्मीर में चुनावों को असफल करने के लिए पाकिस्तान घोषित और अघोषित रूप से हर संभव प्रयास करता रहा है। किंतु के.रि.पु. बल सहित अन्य सुरक्षा बलों की सजगता से उसकी यह योजना कार्यान्वित नहीं हो पायी। मतदाताओं को डराने के लिए मतदान के दिन सीमापार से फायरिंग की जाती रही, मगर हमारे सुरक्षा बलों की सजगता के कारण उसका कोई भी मनसूबा सफल नहीं हो पाया।

भिन्न-भिन्न तरह की स्थितियों से निबटने और उन पर काबू पाने में सिद्धहस्त हमारे सुरक्षा बलों के लिए चुनाव के दौरान निभायी जाने वाली भूमिका उनके बहुआयामी स्वरूप का ही एक हिस्सा है।

आतंकवाद से ग्रस्त पंजाब में पिछले चुनाव के बाद कायम हुयी शांति से पंजाब के साथ साथ पूरे देश ने राहत की सांस लेते हुए, कृतज्ञता के साथ वहां तैनात सुरक्षा बलों को इस उपलब्धि के लिए धन्यवाद दिया था। ठीक यही आशा पूरा देश उनसे कश्मीर के मामले में भी कर रहा है। चुनाव तो उस मंजिल की पहली सीढ़ी है। असली कार्य तो अब वहां से आतंकवाद का जड़ से सफाया कर जनता का राज स्थापित करने का है। कार्य थोड़ा सा कठिन है, किंतु असंभव नहीं। फिर हमारे सुरक्षा बल ऐसी कठिनाइयों पर विजय पाने में सिद्धहस्त हैं, यह निश्चित है कि सफलता उन्हें ही मिलेगी। आखिर पूरे देश की शुभकामनाएं उनके साथ हैं।

के.रि.पू. बल के चार कार्मिकों को शौर्यता पदक

कर्त्तव्य के प्रति समर्पण तथा अद्वितीय शौर्य एवं साहस के लिए केंद्रीय रिजर्व पुलिस

बल के चार कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया है। इनमें से एक कार्मिक को राष्ट्रपति का शौर्यवीरता का पुलिस पदक तथा तीन को शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्रदान किये गए हैं।

राष्ट्रपति का शौर्यवीरता का पदक



लांस नायक एस.पी. चौबे*(109* बटा.*)*

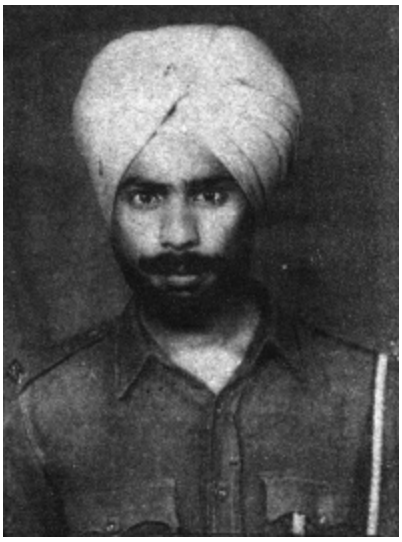
शौर्यवीरता के पुलिस पदक



लांस नायक/ड्राईवर अब्राहम जोर्ज *(7* बटा.*)*



कांस्टेबल कुलदीप सिंह *(49* बटा.*)*



कांस्टेबल बलविंदर सिंह *(16* बटा.*)*

आम चुनाव - 1996

आम चुनाव किसी भी लोकतंत्र की मूल धुरी है। ये आम चुनाव कितने निष्पक्ष, निर्भय और शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हो रहे हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वहां लोकतंत्र कितना परिपक्व हैं। इन स्थितियों में इन चुनावों को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने का दायित्व उठाने वाली सुरक्षा एजेंसियों की जिम्मेदारी बहुत ज्यादा बढ़ जाती है।

आतंकवाद के एक लम्बे दौर के बाद जम्मू कश्मीर में भी आम चुनाव हुए। इन चुनावों को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराना सुरक्षा बलों के लिए एक कड़ी चुनौती थी।

चुनाव हुए और सफलता से हुए। विश्व ने इस आम चुनाव को अब तक का सबसे कम हिंसा के साथ सम्पन्न हुआ चुनाव माना। ये इन चुनावों के दौरान तैनात सरक्षा वालों की एक बड़ी उपलब्धि है।

इन चुनावों के दौरान बल के महानिदेशक सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने कई बार जम्मू-कश्मीर सहित देश के अन्य संवेदनशील क्षेत्रों का दौरा कर बल की तैनाती से संबंधित योजनाएं बनायी व उन्हें क्रियान्वित किया।



पुलवामा में मतदान के दौरान तैनात बल के कार्मिक

जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा बलों की तैनाती में विशेष सावधानी और सतर्कता बरती गयी। यही नहीं जम्मू-कश्मीर में के.रि.पु.बल ने अन्य सुरक्षा बलों के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में भी काम किया।

इन चुनावों के दौरान अकेले जम्मू कशमीर में सीमा सुरक्षा बल, भारत तिब्बत सीमा पुलिस के अलावा के.रि.पु. बल की लगभग ढाई सौ से अधिक कम्पनियों को चुनावों के दौरान सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया। ये कम्पनियां जम्मू-कश्मीर में पहले से तैनात सुरक्षा कर्मियों के अतिरिक्त थीं। जम्मू-कश्मीर के लिए 10,500 मतदान कर्मचारियों को तैनात किया गया। इन कर्मचारियों की सुरक्षा व उनके आवास आदि की व्यवस्था भी के.रि.पु. बल के ही पास थी। के.रि.पु. बल इन चुनावों के दौरान सभी सौंपे गए दायित्वों को सफलतापूर्वक निभाने में सफल रहा है। इन चुनावों के बाद के.रि.पु. बल को देश के शांति प्रहरी के साथ साथ लोकतंत्र का सजग पहरेदार का भी तमगा मिला है।



श्रीनगर में बल के कार्मिकों की निगरानी में मतदान

एक और विधवा का विवाह

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अधिकारियों की पत्नियों की कल्याण संस्था (कावा) की अध्यक्षा श्रीमती इंदु त्रिपाठी ने 30 जून, 1996 को सहायक उप निरीक्षक स्वर्गीय अशोक कुमार की पत्नी उर्मिला को उसके विवाह के उपलक्ष्य में कावा की ओर से 5000 रुपये का.चेक भेंट किया। श्रीमती उर्मिला का विवाह उनके स्वर्गीय पति अशोक कुमार के छोटे भाई राजेश कुमार से कराया गया है। विवाह की रस्म के.रि.पु. बल की 88 महिला बटालियन स्थल झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में हुयी थी। कावा अध्यक्षा ने नवदम्पति को के.रि.पु. बल केन्द्रीय कल्याण निधि की ओर से 5000 रुपये की गृहोपयोगी वस्तुएं भी भेंट कीं।



विवाह के पश्चात एक दूसरे का मुंह मीठा कराते हुए उर्मिला एवं राजेश



नवदम्पति राजेश और उर्मिला

यह कर्तव्य पर मारे गए बल के चौथे कार्मिक की विधवा का विवाह था। कावा की स्थापना जून, 1995 में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य बल के कार्मिकों विशेषकर कर्तव्य पर मारे गए बल के कार्मिकों के परिवारों के कल्याण कार्यक्रमों को चलाना है। इन कार्यक्रमों में कर्तव्य पर मारे गए कार्मिकों की विधवाओं के विवाह को प्राथमिकता दी गयी है।

45वीं अखिल भारतीय पुलिस हाकी

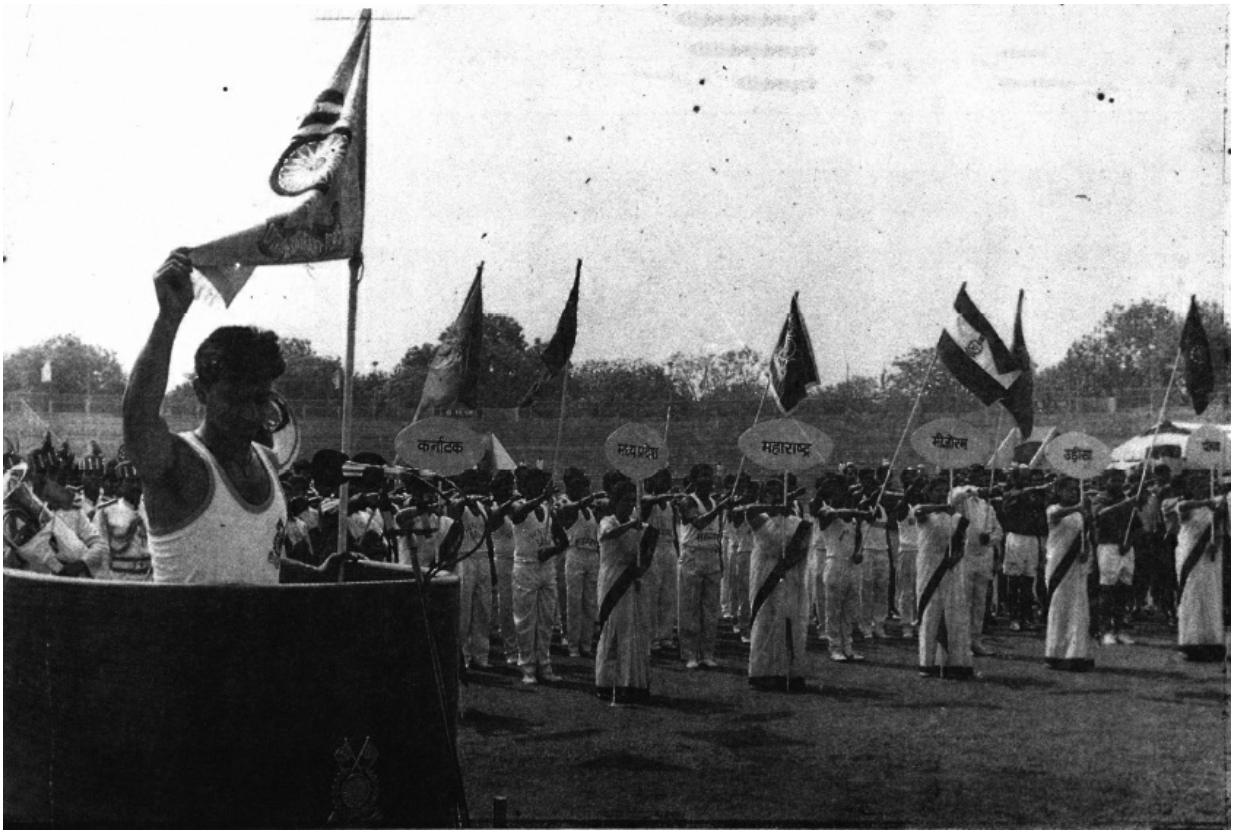
पंजाब पुलिस ने प्रतियोगिता जीती

45वीं अखिल भारतीय पुलिस हाकी चैंपियनशिप के 22 जून, 1996 को नेशनल स्टेडियम, नई दिल्ली में खेले गए फाइनल मुकाबले में पंजाब पुलिस ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पर 3-1 से विजय प्राप्त कर चैंपियनशिप ट्राफी जीत ली। केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री तस्लीमुद्दीन इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

उन्होंने विजेताओं को ट्राफियां तथा पुरस्कार बांटे। पंजाब पुलिस के बलजीत सिंह व दलजीत सिंह तथा केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जी. वी. खाका को इस 14 दिवसीय टूर्नामेंट के दौरान सर्वाधिक 13-13 गोल दागने के लिए पुरस्कृत किया गया। फाइनल मैच में मध्यांतर तक स्कोर 1-1 था।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम को रनर अप ट्राफी प्रदान की गयी। उड़ीसा और सीमा सुरक्षा बल के बीच हुए हार्ड लाइन मैच में सीमा सुरक्षा बल ने उड़ीसा को 4-1 से पराजित कर प्रतियोगिता में तीसरा स्थान हासिल किया।

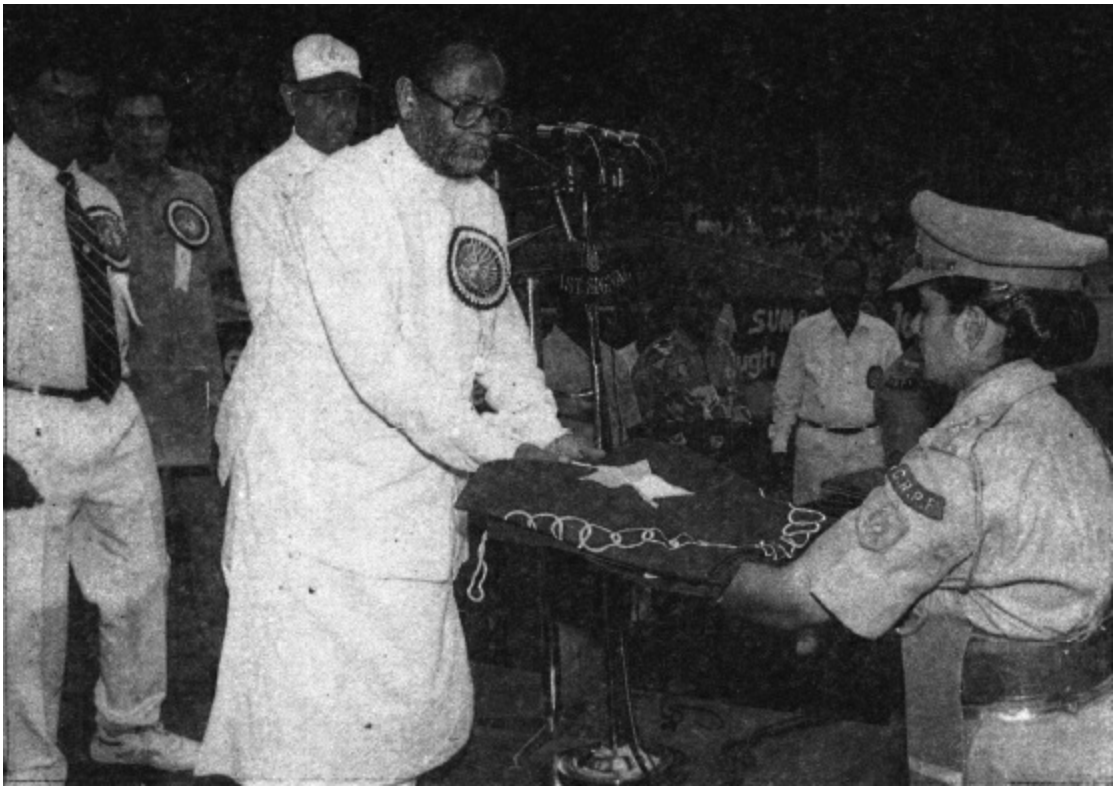
इस मौके पर बोलते हुए गृह राज्य मंत्री श्री तस्लीमुद्दीन ने भारतीय हाकी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने में पुलिस बलों की टीमों द्वारा दिए गए सहयोग की सराहना की। उन्होंने पुलिस बलों में खेल गतिविधियों को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि हाकी की उन्नति के लिए पंजाब पुलिस, सीमा सुरक्षा बल तथा के.रि.पु. बल ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।



खेलों के दौरान खेल भावना बनाए रखने की शपथ लेते हुए खिलाड़ी



अपनी ट्राफी के साथ विजेता पंजाब पुलिस



अखिल भारतीय पुलिस खेलों का ध्वज ग्रहण करते हुए गृहराज्य मंत्री श्री तस्लीमुद्दीन

के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने मुख्य आतिथि को एक स्मृति चिह्न भेंट किया। इससे पूर्व महानिदेशक श्री त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि का परिचय जूरी आफ आनर एंड अपील, आयोजन समिति के सदस्यों तथा प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीमों के मैनेजरों से कराया।

इससे पूर्व इस 14 दिवसीय प्रतियोगिता का उद्घाटन एक भव्य समारोह के बीच 08 जून, 1996 को प्रात: दिल्ली के उप राज्यपाल श्री पी.के. दवे ने किया।

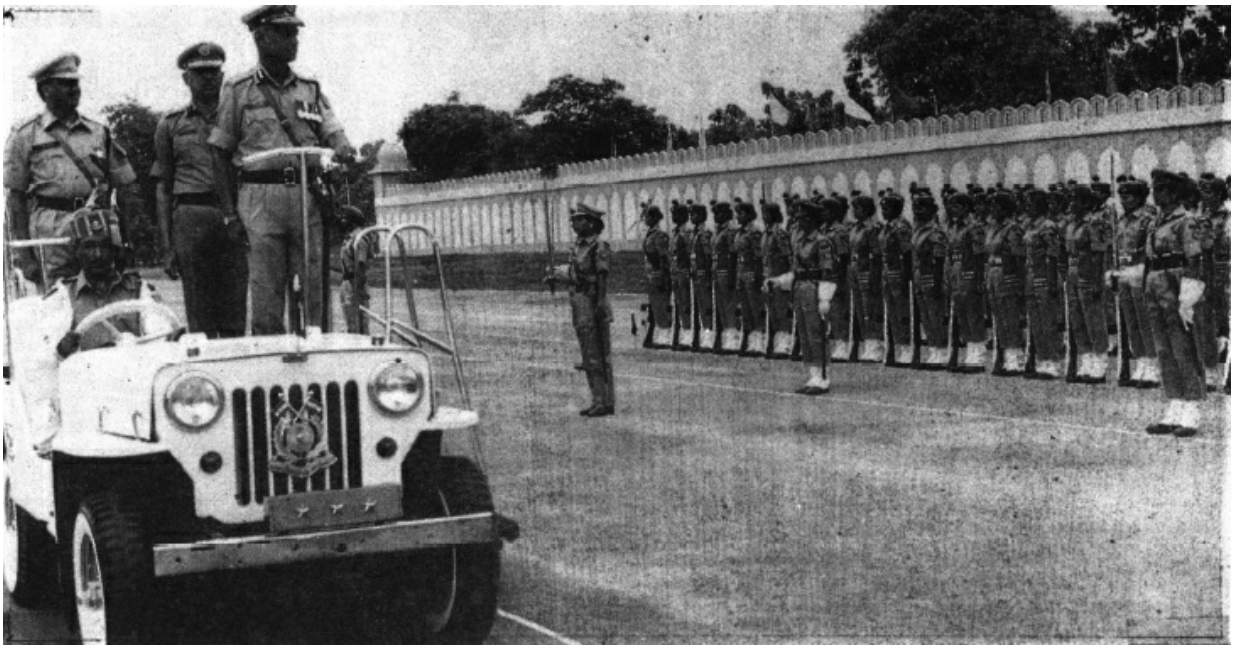
08 से 22 जून, 96 तक चले इस टूर्नामेंट में राज्यों और केंद्रीय पुलिस संगठनों की 20 टीमों ने भाग लिया। 1995 में हुयी 44वीं अखिल भारतीय हाकी प्रतियोगिता में पंजाब पुलिस विजेता रही थी। उप विजेता का खिताब भारत तिब्बत सीमा पुलिस को मिला था।

प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीमों में सीमा सुरक्षा बल, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, भारत तिब्बत सीमा पुलिस, रेलवे सुरक्षा बल, दिल्ली पुलिस तथा आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मिजोरम, उड़ीसा, पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम बंगाल राज्यों की टीमों के साथ साथ मेजबान के.रि.पु. बल की टीमें शामिल थीं।

प्रतियोगिता के मैच लीग कम नाक आउट आधार पर खेले गए। प्रतियोगिता के लिए सभी टीमों को चार पूलों में विभाजित किया गया था।

प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में पहुंची पंजाब पुलिस ने सेमी फाइनल मुकाबले में सीमा सुरक्षा बल को सडन डैथ के जरिये 10-11 से पराजित किया। जबकि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने उड़ीसा पुलिस को 4-1 से पराजित कर फाइनल में अपना स्थान सुनिश्चित किया था।

के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री त्रिपाठी को सेवा निवृत्ति पर भावभीनी विदाई



अपने सम्मान में आयोजित परेड का निरीक्षण करते हुए श्री त्रिपाठी



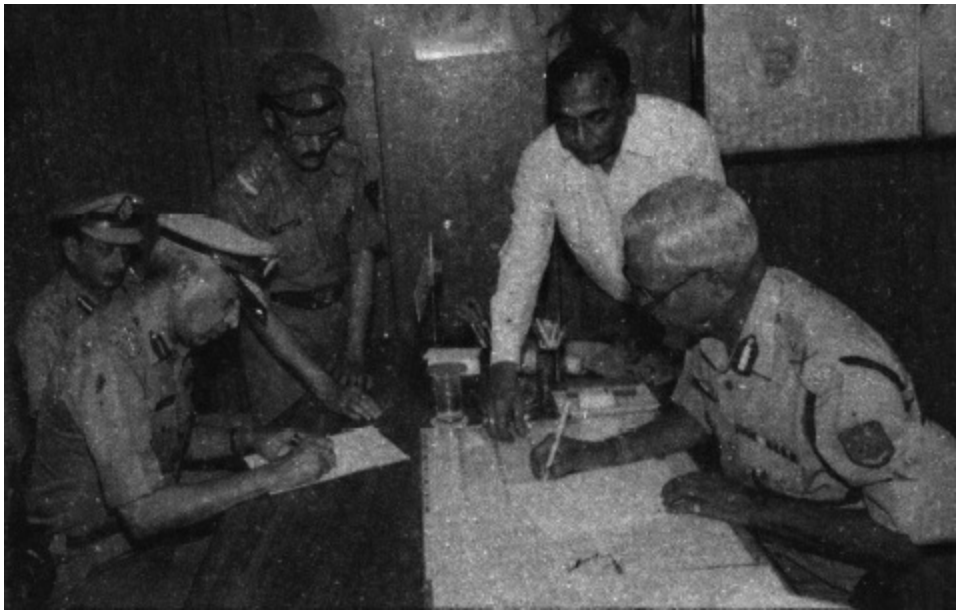
श्री त्रिपाठी को विदाई देते हुए महानिदेशालय के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी को उनकी 35 सालों की उत्कृष्ट सेवा के बाद उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर महानिदेशालय, नई दिल्ली के अधिकारियों व अन्य कार्मिकों ने 30 जून, 96 को समारोह पूर्व विदाई

दी।

इससे पूर्व श्री त्रिपाठी ने सुबह झड़ौदा कलां, नई दिल्ली स्थित बल के ग्रुप केन्द्र में अपने सम्मान में आयोजित एक भव्य परेड की सलामी ली। परेड में आर.ए.एफ. तथा महिला बटालियन की टुकड़ियां भी शामिल थी।

इस मौके पर बोलते हुए श्री त्रिपाठी ने बल के सदस्यों का आह्वान करते हुए उन्हें बल, समाज तथा देश के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि इससे बल की परिचालनिक दक्षता में बढ़ोतरी होगी। उन्होंने कहा कि परिचालनिक दक्षता ही के.रि.पु. बल की मुख्य शक्ति है और इसे अभी और अधिक बढ़ाये जाने को भरपूर संभावनाएं हैं।



सेवानिवृत्ति के पूर्व अपना पदभार सौंपते हुए श्री त्रिपाठी



अपर महानिदेशक (मुख्यालय) श्री ए.वी. लिड्ल श्री त्रिपाठी को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए



श्री त्रिपाठी को आर.ए.एफ. की ओर से एक स्मृति चिह्न भेंट करते हुए आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्दीकी

श्री त्रिपाठी ने कहा कि बल के कार्मिकों की आवास की समस्या में संतोषजनक ढंग से सुधार हो रहा है। उनके कार्यकाल के दौरान आवासीय सुविधाओं में 5.5 से 9.11 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हुयी है। नये हथियारों की उपलब्धता तथा मानव अधिकारों के संबंध में दिए जाने वाले प्रशिक्षण में बढ़ोत्तरी हुयी है। उन्होंने कहा कि बटालियनों को दी जाने वाली रोटेशनल ट्रेनिंग जरूर तैनाती के कारण कुछ अंवरूद्ध हुयी है।

भारतीय पुलिस सेवा के 1961 बैच के अधिकारी श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने 31 दिसम्बर, 1993 को बल के महानिदेशक का पदभार संभाला था। उत्तर प्रदेश कैडर के अधिकारी श्री त्रिपाठी जनवरी, 1993 में बल के परिवार में अपर महानिदेशक के रूप में शामिल होने से पूर्व पुलिस तथा अन्य प्रशासनिक सेवाओं के कई महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके थें।

श्री त्रिपाठी को सराहनीय सेवाओं तथा विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदकों से सम्मानित किया जा चुका है।

संक्षिप्त समाचार

के.रि.प. बल का नया कैंप बवाना में



बवाना कैम्प का उद्घाटन करते हुए श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

दिल्ली के रिज क्षेत्र में रह रही के.रि.पु. बल की इकाइयां बवाना में स्थाई रूप में स्थानान्तरित की जायेंगी। इन इकाइयों के स्थानान्तरण का क्रम पहले ही शुरू किया जा चुका है।

के.रि.पु. बल की छः बटालियनों को स्थायी रूप से बसाने के लिए बवाना में 102 एकड़ भूमि ले ली गयी थी। इस क्षेत्र का धीरे धीरे विकास किया जा रहा है। प्रारम्भ में वहां के.रि.पु. बल की युनिटों के लिए अस्थायी आवास के प्रबंध किये गए हैं।

के.रि.पु. बल ने 96 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने माह मई, 1996 में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी विभिन्न मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में 96 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी 22 मुठभेड़ों में आठ आतंकवादी मारे भी गए।

इनमें से जम्मू-कश्मीर में 23, उत्तर प्रदेश में 19, मणिपुर में 14, असम में 13, तथा त्रिपुरा में 12 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। जम्मू कश्मीर में गिरफ्तार आतंकवादियों में नौ आतंकवादी हिजबुल मुजाहिद्दीन तथा दो हरकत उल अंसार आतंकवाद गुट के हैं।

इन मुठभेड़ों में 81 घातक हथियारों सहित 2574 सजीव गोली बारूद भी बरामद किया गया। बरामद हथियारों में 16 ए.के. 47 रायफलें, 17 पिस्तौलें, 11 ए.के. 56 रायफलें, तीन स्टेन गन तथा दो राकेट लांचर शामिल हैं। बरामद हथियारों में से 52 हथियार अकेले जम्मू कश्मीर में बरामद किए गए।

इस दौरान आतंकवादी मुठभेड़ों तथा आतंकवादियों द्वारा लगायी गयी घातों में बल के दो जवान मारे गए तथा 14 गंभीर रूप से घायल हुए।

माह मई, 96 में बल के मृत कार्मिक

माह मई, 96 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतृप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नायक सुनील राजवंशी (35 बटा.), वाटर कैरियर पी. चिन्ना (ग्रुप केन्द्र रंगारेड्डी), कांटेबल हिदम जीवन सिंह (61 बटा.), कांस्टेबल ब्रिजेन्द्रा सिंह (60 बटा.), हैड कांस्टेबल गिदम सिंह (32 बटा.), हैड कांस्टेबल एस.आर. चौहान (8 बटा.), लांस नायक/ड्राईवर हरदयाल सिंह (63 बटा.), नायक/ड्राइवर जी. श्रीकुमार (124 बटा.), कुक दजा शंकर (38 बटा.), नर्सिंग असिस्टेंड डी. एन. प्रसाद (106 बटा.), कांस्टेबल टी. एन. गौड (ग्रुप केन्द्र शिवपुरी), बारबर सैयद अल्सी (25 बटा.), नायक/ड्राईवर सूबेदार सिंह (23 बटा.), कांस्टेबल राजधोन सिंह (87 बटा.), नायक/आर. ओ.आर.एस. चौधरी (प्रथम सिगनल), कांस्टेबल ताराचंद यादव (90 बटा.), नायक आर.के. शर्मा (ग्रुप केन्द्र पूणे), कांस्टेबल बी.वी. गोपालाकृष्णा (109 बटा.), कांस्टेबल दिगन्तो गोगई (93 बटा.), सफाई कर्मचारी सुरेश प्रसाद (106 बटा.), नायक/ड्राईवर लक्ष्मी चन्द्र (64 बटा.), कांस्टेबल भोला यादव (69 बटा.), नायक/ड्राईवर बाला राम (75 बटा.) तथा कांस्टेबल मनफूल सिंह (47 बटा.)।

देर से प्राप्त समाचार के अनुसार अप्रैल माह में नायक बीर सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

के.रि.पु. बल चिकित्सक पुरस्कृत

गृह मंत्रालय के पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के

मॉडोसेन स्पेशालेस्ट डा. जी.सी. शतपथी को उनकी अनुदित पुस्तक भारतीय पुलिस बलों में स्वास्थ्य सेवा के लिए पं. गोविन्द बल्लभ पंत पुरस्कार से सम्मानित किया है। मूल अंग्रेजी पुस्तक पुलिस और अर्द्ध-सैनिक बलों में लोकप्रिय है।

उड़िया भाषी डा. शतपथी विज्ञान विषयों के जाने-माने लेखक हैं। उनको सराहनीय कार्य के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक मिल चुका है तथा उन्हें केन्द्रीय पुलिस बलों की भूमिका पर लिखे लेख के लिये आंतरिक सुरक्षा अकादमी (माउन्ट आबू) द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय जोखिम निधि से माह मई, 1996 में मृत्यु के 17 मामलों में कुल 6,88,500 रुपये देने स्वीकृत किये गए। इसी प्रकार अक्षमता के 6 मामलों में कुल 90,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

जोखिम निधि "बी" स्पेशल कल्याण निधि से भी इसके एक सदस्य की मृत्यु के मामले में 35,000 रुपये देने स्वीकृत किये गए।

शिलांग में आटोमैटिक स्वीचिंग पद्धति

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम त्रिपाठी ने 06 जून, 1996 को सिगनल केन्द्र शिलांग में संचार व्यवस्था की आधुनिकतम प्रणाली स्वचालित मैसेज स्वीचिंग सिस्टम का उद्घाटन किया।

इस पद्धति की स्थापना से पूर्व इम्फाल, कोहिमा तथा गुवाहाटी जैसे केन्द्रों को संदेश भेजने की पद्धति मानव स्वचालित थी। अब इस पद्धति की स्थापना से आउट स्टेशनों से विभिन्न केन्द्रों को संदेश भेजने का कार्य स्वचालित हो गया है।

इस पद्धति की स्थापना से दूर दराज स्थित केन्द्रों को संदेश भेजने में न केवल सुविधा हासिल होगी अपितु उन केन्द्रों में संदेश भेजने में भी काफी लचीलापन आया हैं जिनके पास डी.ओ.टी. सुविधा उपलब्ध नहीं है।

सी.आर.पी.एफ. स्कूल का शत प्रतिशत परिणाम

सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल (रोहिणी), नई दिल्ली के दसवीं व 12वीं कक्षाओं में शामिल हुए विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम न केवल शत प्रतिशत रहा है, अपितु छात्रों ने भारी संख्या में अपने विषयों में विशिष्टता भी प्राप्त की है।

10वीं की परीक्षा में इस वर्ष 84 विद्यार्थी शामिल हुए जिनमें से 78 प्रथम श्रेणी और 6 द्वितीय श्रेणी रहे। इनमें 10 ने 85 से अधिक, 27 ने 60 से 75 प्रतिशत तथा छ: ने 50 से 60 प्रतिशत तक अंक प्राप्त किये। इनमें से 13 विद्यार्थियों ने सभी विषयों तथा 15 विद्यार्थियों ने चार विषयों में विशिष्टता प्राप्त की। रजत शर्मा कुल 90 प्रतिशत अंकों के साथ सबसे ज्यादा अंक लेने वाले विद्यार्थी रहे।

12वीं की परीक्षा में शामिल हुए 85 विद्यार्थियों में 81 ने प्रथम श्रेणी अंक पायें। इनमें से 14 ने 85 प्रतिशत से अधिक, 37 विद्यार्थियों ने 75 से 85 प्रतिशत, 30 विद्यार्थियों ने 60 से 75 प्रतिशत तथा चार विद्यार्थियों ने 55 से 60 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। पांच विद्यार्थियों ने सभी विषयों में, 23 ने चार विषयों में, 18 ने तीन विषयों में तथा 14 ने दो विषयों में विशिष्टता प्राप्त की। विज्ञान में फिरोजद्दीन शेख को 90 प्रतिशत वाणिज्य वर्ग में संदीप गर्ग को 90 प्रतिशत तथा कला वर्ग में विक्रम यादव 79 प्रतिशत अंक ले कर सर्वाधिक अंक पाने वाले विद्यार्थी रहे।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क व प्रशंसा पत्र

हाल ही में जम्मू-कश्मीर में सम्पन्न हुए लोकसभा चुनाव के दौरान बल की युनिटें भारी संख्या में वहां तैनात की गई। महानिदेशक, के.रि.पु. बल ने इन चुनावों के दौरान किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए बल के 82 अधिकारियों व जवानों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क और 30 अधिकारियों व जवानों को महानिदेशक के प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया है।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

19 अक्टूबर, 1995 को श्री नगर में एक आतंकवादी को गिरफ्तार करने में दिखाए गए साहस एवं अद्वितीय सूझबूझ के लिए 19 बटालियन के लांस नायक शंभू राय को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क तथा प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया है।

चुनाव में बल के कार्मिकों की भूमिका की प्रशंसा

हाल के लोक सभा चुनाव के दौरान कानून व व्यवस्था बनाये रखने के लिए उड़ीसा में के.रि.पु. बल की 5 तथा रेपिड एक्शन फोर्स की 2 कम्पनियों को तैनात किया गया था। चुनाव के दौरान कानून व्यवस्था बनाये रखने व चुनावों को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने में बल की इन कम्पनियों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। बल के कार्मिकों की कार्यकुशलता तथा अनुशासन की प्रशंसा करते हुए उड़ीसा पुलिस के महानिदेशक श्री ए.बी. त्रिपाठी ने बल के महानिदेशक को लिखे पत्र में लिखा है कि वे बल के कार्मिकों के कार्य करने के तरीके से बेहद प्रभावित हैं।

फुरसत में

आती है याद

आती है मुझे याद उस खेत की, जो फसल देता था,
आती है मुझे याद उस वृक्ष की, जो छाया देता था।

आता है मुझे याद वह गांव, जिसने मेरा बचपन समेटा,
वह खेत, वह वृक्ष, वह गांव,
न जाने कहां गुम हो गये, इस बड़े शहर में आ कर।
आने वाले का सबको रहता है इन्तजार,
जाने वाले को जल्दी भुला देती है यह दुनिया।
यह दुनिया है जगह आने जाने वालो की,
फिर क्यों परेशान है इन्सान इस दुनिया में।
तुम कहते हो मैं उड़ जाऊं उस पंछी की तरह,
जिसे लालसा है आसमान को छूने की,
उस पंछी से कोई पूछे क्या लालसा है तेरी,
वह कहता मेरा भी कोई आशियां हो इस
धरती पर इन्सान की तरह।

– राकेश शर्मा
उप कमान्डेन्ट
स्पेशल सेल
महानिदेशालय

गाथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की

सुनो साथियों तुम्हें सुनाऊं, गाथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की।
इस देश में ऐसे वीर हुए, जय हो ऐसे वीर पुरूष की।
इस देश की खातिर, कश्मीर में वीरों ने जान लुटाई।
आसाम से लेकर मिज़ोरम तक, ड्यूटी है सभी निभाई।
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस नाम की, खातिर वीरों ने हिम्मत कभी न हारी।
और देश प्रेम सद्भावना से, अपनी सेवा रखी है जारी।
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस में हर धर्म, जाति के लोग, सभी है रहते।
हम जुदा नहीं एक दूसरे से, हम सभी यही हैं कहतें।
हम एक रहे हैं एक रहेंगे, है यही हमारा नारा।
दुश्मन जब भी देखे हमको, दुश्मन ने किया किनारा।
इस देश को सोने की चिड़िया कहते थे फिर आज वही समय है आया, फिर वही समय है आया।
सुनो साथियों तुम्हें सुनाऊं गाथा, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की

इस देश में ऐसे वीर हए, जय हो ऐसे वीर पुरूष की।

-लांस नायक विजय कुमार
ई/130 बटालियन



जम्मू कश्मीर लोक सभा चुनावों के दौरान तैनात बल के कार्मिक

रजि. न. 47167/87



45वीं अखिल भारतीय पुलिस हाकी के उद्घाटन के अवसर पर बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी दिल्ली के उपराज्यपाल श्री पी.के. दवे का बल के वरिष्ठ अधिकारियों से परिचय कराते हुए

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

खंड - 9 अंक - 5 31 अगस्त, 1996 9 भाद्रपद, शक 1918



श्री अरूण भगत चल के महानिदेशक पद का अतिरिक्त कार्यभार संभालते हुए



रेपिड एक्शन फोर्स द्वारा आयोजित मानवाधिकार कोर्स में भाग लेने वाले अधिकारियों को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए अपर महानिदेशक श्री मुकंद बिहारी कौशल

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-9 अंक-5
31 अगस्त, 1996
9 भाद्रपद, शक 1918

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

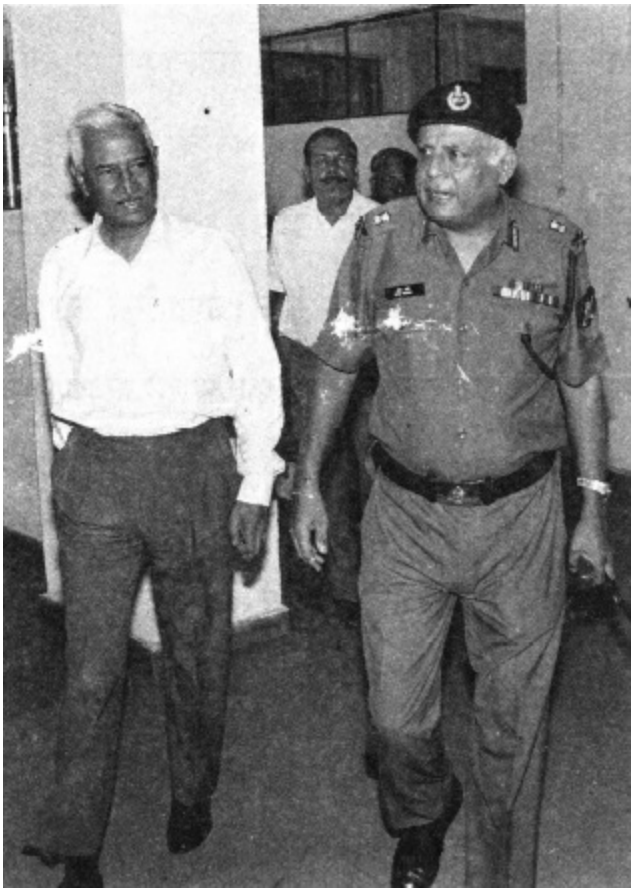
चित्र
एस.के. खन्ना
ए.एन. सिंह

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय-सूची



सम्पादकीय

श्री अरूण भगत ने बल के महानिदेशक का अतिरिक्त कार्यभार संभाला.

बल के 28 कार्मिकों को पुलिस पदक

मानव अधिकारों पर प्रशिक्षण सम्पन्न

पुलिसकर्मी सीखने की प्रक्रिया जारी रखें

संक्षिप्त खबरें

फोटो फीचर

बल के बच्चों के लिए छात्रावास

सम्पादकीय

20 अगस्त सद्भावना दिवस है। इस दिवस का उद्देश्य विभिन्न धर्मों, भाषाओं, राज्यों एवं समुदायों के लोगों के अन्दर आपसी सद्भाव तथा भाई चारे की भावना को बढ़ावा देना है। के.रि.पु. बल के सदस्यों के लिए तो यह दिवस इसलिए और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि ये बल देश में आतंकवाद के साथ भिड़ने वाला सब से बड़ा बल है। हमारे जवान रात दिन इस प्रयास में लगे हैं कि हमारे राष्ट्र की जीवन दायिनी धमनियों में से आतंकवाद का जहर दूर हो, ताकि राष्ट्र रूपी इस शरीर के सभी अंग आपसी तालमेल, सद्भाव प्रेम एवं भाईचारे के साथ रह सकें। एक ऐसे समाज का निर्माण हमारा चिरसिंचित स्वप्न है, अत: देश के प्रति समर्पण एवं कर्तव्यपरायणता की अपनी शपथ को दोहराने के साथ-साथ बल का हर सदस्य इस मौके पर यह शपथ भी लेता है-

"यह महान देश मुझे अपनी मां के समान प्रिय है एवं इस देश के सभी लोग इसकी संतानें हैं। यह मेरा कर्तव्य है कि मैं इस की सहिष्णुता, विभिन्नता में एकता तथा अन्य महान परंपराओं को न केवल बनाए रखू अपितु इन्हें और अधिक फलने फूलने में भरपूर योगदान दूं, एवं उसे विकास के रास्ते पर आगे बढ़ाने के लिए कोई कसर बाकी उठाकर न रखू और इसके लिए में प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं इस महान भूमि के लोगों की एकता और भावनात्मक सद्भाव के लिए सदैव सक्रिय रहूंगा मैं सभी मतभेदों को ठोस उपायों के साथ दूर करने का प्रयास करूंगा। मैं अपने सभी साथियों को अपना भाई समझूगा। हमेशा हिंसा से दूर रहूंगा एवं इसे खत्म करने का प्रयास करूंगा। इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मैं राष्ट्रीयता तथा राष्ट्र सेवा में अपना जीवन होम कर देने वाले व्यक्तियों के बताए मार्ग का अनुसरण करूंगा।"

आतंकवाद के विरुद्ध संघर्षरत और उसकी अस्मिता की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग तक कर देने वाले जवानों के लिए यह मात्र एक कोरी शपथ नहीं हैं, उनके लिए यह उनके मानस पटल पर अंकित कर्त्तव्य निर्देश है।

श्री अरूण भगत ने के.रि.पु. बल के महानिदेशक का अतिरिक्त कार्यभार संभाला

सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक श्री अरूण भगत ने 5 जुलाई 1996 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक का अतिरिक्त कार्यभार संभाला। श्री भगत ने

दिसम्बर, 1995 को सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक का पदभार संभाला था।

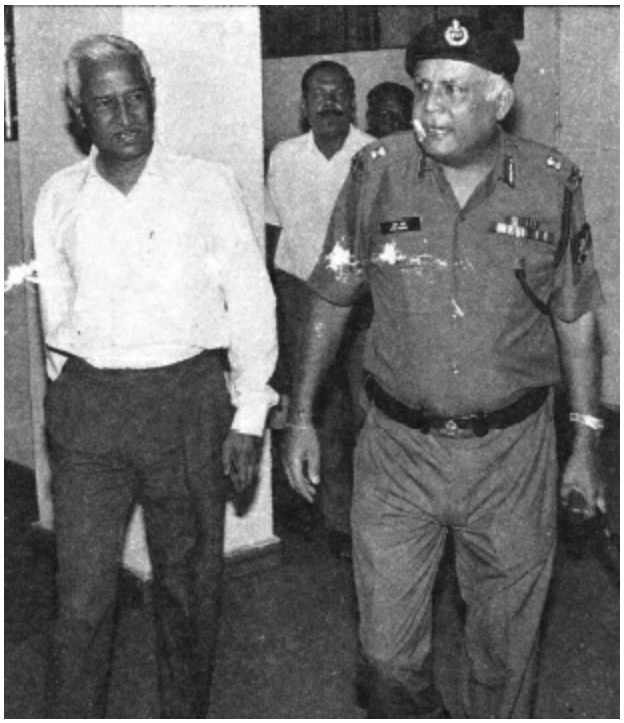
श्री भगत भारतीय पुलिस सेवा के 1961 बैच व केन्द्र शासित प्रदेश कैडर के अधिकारी है। अपने लम्बे कार्यकाल के दौरान श्री भगत केन्द्रीय तथा राज्य पुलिस बलों में कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे हैं। वह जुलाई 1992 से अक्टूबर 1993 तक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक भी रह चुके हैं।

पुलिस के अपने लम्बे कार्यकाल के दौरान श्री भगत शिमला में अधीक्षक, मणिपुर रायफल्स में कमांडेन्ट तथा मणिपुर में सहायक महानिरीक्षक, दिल्ली सशस्त्र पुलिस में कमांडेट, महानिरीक्षक गोवा, दमन एवं दिव तथा सहायक महानिरीक्षक दिल्ली पुलिस रहे हैं। 1975 से 1985 के दौरान श्री भगत केन्द्रीय सचिवालय में विभिन्न पदों पर रहे। वह 1985 से 1989 तक दिल्ली पुलिस में अतिरिक्त कमिशनर नई दिल्ली रेंज व प्रशासन पदों पर भी रहे। श्री भगत ने दिसम्बर 1990 में दिल्ली पुलिस के कमिशनर का पदभार संभाला तथा वे फरवरी, 1992 तक इस पद पर बने रहे। सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक का पद संभालने से पूर्व श्री भगत केन्द्रीय जांच ब्यूरो में स्पेशल निदेशक के पद पर कार्यरत थे।



बल के महानिदेशक पद का अतिरिक्त कार्यभार संभालने के बाद बल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ श्री भगत

श्री भगत को उनकी सेवाओं के लिए विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है।



बल के कार्यवाहक महानिदेशक श्री लिड्ल के साथ महानिदेशालय में आते हुए श्री भगत

के.रि.पु. बल के 28 कार्मिकों को पुलिस पदक

स्वतंत्रता दिवस 1996 के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 28 कार्मिकों को विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है।

इनमें से पांच कार्मिकों को राष्ट्रपति का विशिष्ट सेवाओं का पुलिस पदक तथा 23 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं का पुलिस पदक प्रदान किया गया है।

पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं :-

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक



अपर उप महानिरीक्षक स्वर्ण सिंह *(ग्रुप केंद्र इलाहाबाद)*



अपर उप महानिरीक्षक जे. बी.एस. बैंस *(ग्रुप केंद्र-2 अजमेर)*



अपर उप महानिरीक्षक आर.एस. नौटियाल *(उत्तर सेक्टर, नई दिल्ली)*

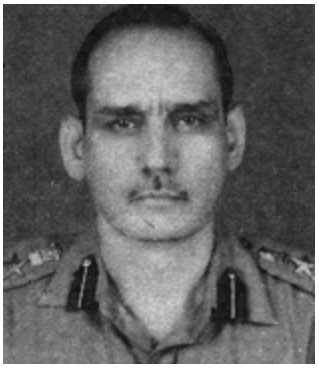


कमान्डेन्ट के.सी. शर्मा *(उत्तर पूर्वी सेक्टर मुख्यालय)*



सहायक कमान्डेन्ट एम.डी. शुक्ला *(ग्रुप केन्द्र लखनऊ)*

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक



अपर उप महानिरीक्षक एस.सी. राड *(ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम)*



कमान्डेन्ट आर.के. वत्स *(सी.डब्ल्यू.एस. रामपुर)*



कमान्डेन्ट के.डी. पचौरी *(135* महिला बटालियन*)*



कमान्डेन्ट एम.एस.अग्रवाल *(*महानिदेशालय*)*



सहायक निदेशक, *(*परिचालन*)* डी.सी.डे. *(*महानिदेशालय*)*



द्वितीय कमान अधिकारी वी.के. लक्ष्मी नारायण *(*ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी*)*



सहायक कमान्डेन्ट डी.एस.राणा *(*कार्यालय महानिरीक्षक परिचालन श्रीनगर*)*



डा.पी.सी.डी. सामंता *(*बेस अस्पताल-*2* हैदराबाद*)*



अनुभाग अधिकारी आर.पी. वर्मा *(*महानिदेशालय*)*



सूबेदार मेजर पी.एस. पंवार *(129* बटालियन*)*



ओ.एस.सी.वी. स्टीफन कोरेपा *(*कार्यालय महानिरीक्षक आर.ए.एफ.*)*



वार्ड सिस्टर सी. सौंदर्यम *(*बेस अस्पताल-*3* गुवाहाटी*)*



सब इंस्पेक्टर बी.बी. गुरंग*(*ग्रुप केन्द्र हैदराबाद*)*



सब इंस्पेक्टर श्याम नारायण *(*ए.डब्ल्यू.एस. *2* रामपुर*)*



सब इंस्पेक्टर जी.एस. सुरवाडे *(*ग्रुप केन्द्र रामपुर*)*



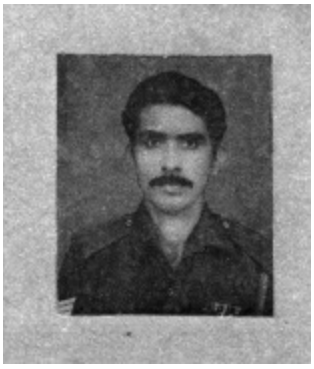
हैड कांस्टेबल उस्मान अली *(2* बटालियन*)*



हैड कांस्टेबल राजेन्द्र सिंह *(123* बटालियन*)*



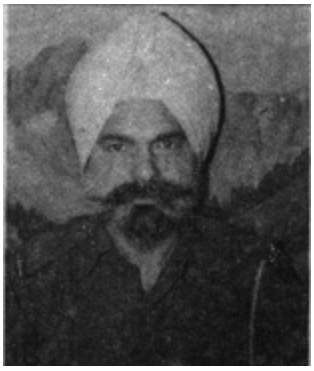
हैड कांस्टेबल विजय सिंह *(24* बटालियन*)*



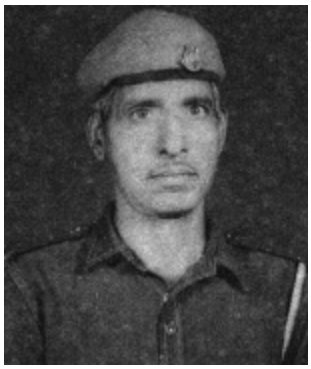
हैड कांस्टेबल नेतार सिंह*(41* बटालियन*)*



कांस्टेबल *(*दफ्तरी*)* आर. एस. नेगी *(*महानिदेशालय*)*



कांस्टेबल बलदेव सिंह *(3* बटालियन*)*

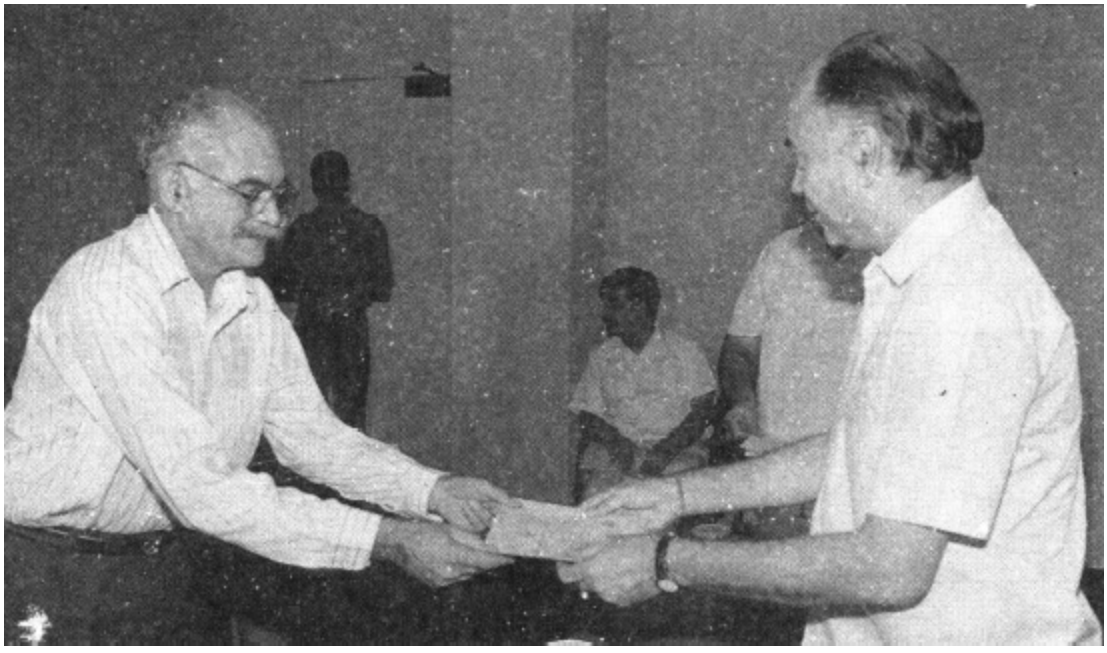


वाटर कैरियर प्रभु लाल *(67* बटालियन*)*

मानव अधिकारों पर प्रशिक्षण सम्पन्न

के.रि.पु. बल के अधिकारियों के लिए मानव अधिकारों पर आयोजित तीन दिन का प्रशिक्षण 10 जुलाई 96 को आर.ए.एफ. मुख्यालय मे समाप्त हुआ। बल के अपर महानिदेशक श्री एम.बी. कौशल इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रास कमेटी (आई.सी.आर.सी.) द्वारा आयोजित इस प्रशिक्षण में बल के 30 अधिकारियों ने भाग लिया।

अपर महानिदेशक श्री कौशल ने इस अवसर पर अधिकारियों को सलाह देते हुए कहा कि वे मानव अधिकारों को सुनिश्चित कर जनसाधारण का सहयोग सरलता से ले सकते हैं और यह जनसहयोग कानून व व्यवस्था की स्थिति से निपटने में उन्हें बड़ी मदद देगा। उन्होंने बल के प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए।

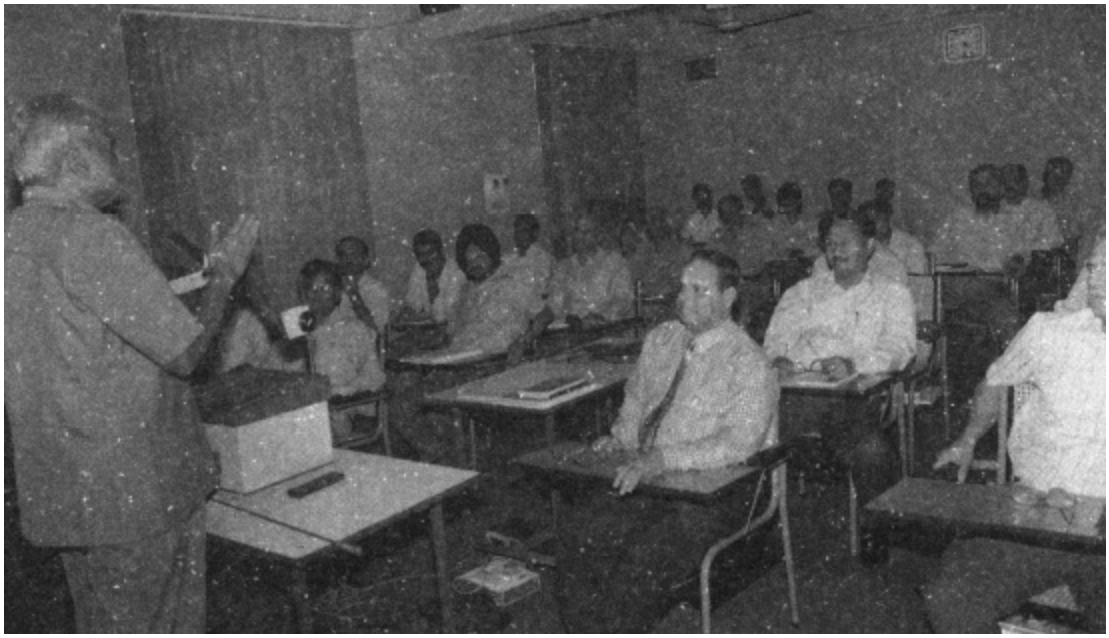


कोर्स में शामिल अधिकारियों को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए श्री कौशल

आर.ए.एफ. महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्दकी ने प्रारम्भ में मुख्य अतिथि का स्वागत किया और बताया कि रेडक्रास कमेटी द्वारा मानव अधिकारों पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजन किया गया। इनमें से एक आर.ए.एफ. अधिकारियों के लिए था और दूसरा के.रि.पु. बल के अधिकारियो के लिए। अंत में के.रि.पु. बल के पूर्व महानिदेशक डा.एस. सुब्रमण्यम ने आभार प्रकट किया।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय जोखिम निधि से माह जुलाई 1996 में मृत्यु के 8 मामलों में कुल 1,20,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए। इसी प्रकार जोखिम निधि 'बी' स्पेशल कल्याण निधि से भी इसके तीन सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 1,05,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए।



कोर्स में शामिल अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए बल के पूर्व महानिदेशक डा. एस. सुब्रह्मण्यन

पुलिसकर्मी सीखने की प्रक्रिया जारी रखें

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक श्री अरूण भगत ने पलिस कर्मियों का आह्वान किया है कि वे शिक्षा के माध्यम से अपनी सीखने की प्रक्रिया को जारी रखें। उन्होंने कहा कि पुलिस कार्मियों के इस प्रशिक्षण में सुदूर शिक्षा पद्धति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

श्री अरूण भगत 4 अगस्त 1996 को रेपिड एक्शन फोर्स के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा समकालीन सामाजिक परिस्थतियों पर आयोजित तीसरे कोर्स का उद्घाटन करते हुए बोल रहे थे। इस सात दिवसीय कोर्स का आयोजन विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा केन्द्र द्वारा किया गया।

श्री अरूण भगत ने कहा कि इस कोर्स के दौरान बल के अधिकारियों और शिक्षाविदों के बीच सीधे संवाद से दोनों ही पक्षों को सामाजिक स्थितियों के विषय में बहुत कुछ जानने को मिलेगा। श्री भगत ने आर.ए.एफ. की भूमिका की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह एक ऐसा बल है जो अपेक्षाओं पर पूर्ण रूप से खरा उतरा है।

12 अगस्त 1996 को कोर्स की समाप्ति पर बोलते हुए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नो) के प्रो-वाईस चांसलर प्रोफेसर एस.के. गांधी ने भारतीय समाज में पीड़ित वर्गों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि पुलिस अधिकारियों को पीड़ित वर्गों से संबंधित मामलों में अधिक संवेदनशीलता का परिचय देना चाहिए।

इस कार्यक्रम में एक महिला सहित आर.ए.एफ. के 25 अधिकारियों ने भाग लिया। श्री गांधी ने शांति बनाये रखने में आर.ए.एफ. के योगदान की प्रशंसा करते हुए कहा कि इग्नो न केवल अधिकारियों बल्कि जवानों के लिए भी शैक्षिक कार्यक्रम चलाने का इच्छुक है।



आर.ए.एफ. अधिकारियों के कोर्स के उद्घाटन के लिए आते हुए श्री अरूण भगत



कोर्स के उद्घाटन सत्र में भाग लेते हुए अरूण भगत

इग्नो के विस्तार शिक्षा केन्द्र के निदेशक प्रोफेसर कपिल कुमार ने इस मौके पर बोलते हुए कहा कि साम्प्रदायिकता तथा साम्प्रदायिक दंगों से निबटने के लिए महिलाओं की एक बड़ी भूमिका होगी। उन्होंने कहा कि साम्प्रदायिक दंगों से सर्वाधिक प्रभावित महिलाएं ही होती हैं। अत: संवेदनशील क्षेत्रों की महिलाओं में साम्प्रदायिक सद्भाव के संबंध में जागृति पैदा करने में आर.ए.एफ. की महिला कार्मिक महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। उन्होंने कहा कि हमें इस समय महिलाओं की भूमिका को एक सामाजिक ताकत के रूप में पहचान लेना चाहिए।

इस एक सप्ताह के कार्यक्रम में आर.ए.एफ. अधिकारियों को समकालीन सामाजिक स्थितियों के विषय में विख्यात शिक्षा विदों, पत्रकारों तथा वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों से विचार विनिमय का अवसर मिला। साम्प्रदायिकता तथा लिंग भेद एवं साम्प्रदायिक दंगों का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव जैसे विषयों पर इस कार्यक्रम में विस्तार से चर्चा हुई। इनके अतिरिक्त दंगों में अफवाहों की भूमिका, हिन्दी तथा अंग्रेजी समाचार माध्यमों की भूमिका, भारतीय समाज की प्रकृति, मानवाधिकार तथा मानव व्यवहार से जुड़े अन्य कई विषयों पर भी इस कार्यक्रम के दौरान प्रकाश डाला गया।

बांस बरेली के

ऐक नेताजी की पत्नी ने नेताजी को धमकाया कि आप आगरा गये और खाली हाथ चले आये, कम-से-कम आगरे का प्रसिद्ध पेठा ही ले आते; मैं नहीं तो बच्चे ही खाते, और आप इतनी जगह जाते हो कभी मेरे खाने के लिए कुछ लाते हो।

नेताजी बोले : रोज तो तू मेरा सर खाती रहती है, और तुझे क्या खिलाऊं बरेली जा रहा हूँ, वहां के बांस प्रसिद्ध है, खाये तो ले आऊं।

उ.नि. (एम) राजेन्द्र कुमार शर्मा

माह जुलाई 1996 में बल के मृत कार्मिक

माह जुलाई 1996 में बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी. आर.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल सुनील कुमार (111 बटा.), नायक राजेश्वर प्रसाद (95 बटा.), माली कांस्टेबल लियांजा चित्र सीम्टे (88 बटा.), कांस्टेबल ड्राईवर राम निवास (89 बटा.), ला.ना. जयद्रथ (112 बटा.), नायक वकील सिंह (109 बटा.), है.कां. ब्रह्म दत शर्मा (42 बटा.), कांस्टेबल राजेश्वर राम (89 बटा.), कांस्टेबल पी. एम. मरक (42 बटा.), कांस्टेबल मान सिंह (38 बटा.), है.का. रोहिताश सिंह (5 बटा.), नायक सागीर अहमद खान (134 बटा.), कांस्टेबल राहेश्वर त्यागी (47 बटा.), नायक नामवर प्रसाद (4 सिग), लां.ना.आई. बोचा सिंह (71 बटा.), नायक रेडियो आपरेटर यादूनाथ सिंह (3 सिग.), रिक्रूट एच.एस. प्रभाकर (ग्रुप केन्द्र बैंगलोर), कुक नन्दू तमांग (90 बटा.), कांस्टेबल हरिचरण मांडा (12 बटा.), लां.ना. लाल चन्द बागड़ी (62 बटा.), नायक सुरेश कुमार (109 बटा.), डिप्टी कमांडेट प्रेम प्रकाश (104 बटा.) तथा है.का.पी.वी. स्वामी (30 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार जून 1996 माह में 23 बटालियन के नायक रमेश चंद तथा 40 बटालियन के कांस्टेबल जगदेव सिंह मृत्यु को प्राप्त हुए।

निरवाल ने सहायक निदेशक पद संभाला



श्री एस.सी. निरवाल

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक के निजी सचिव एस.सी. निरवाल ने सहायक निदेशक (गोपनीय) का पदभार संभाल लिया है। श्री निरवाल ने यह कार्यभार निजी सचिव के पद को सहायक निदेशक (गोपनीय) के रूप में क्रमोन्नत किए जाने के फलस्वरूप संभाला है।

अपनी 32 वर्ष की सरकारी सेवा के दौरान वह अब तक बल के 24 महानिदेशकों के तहत काम कर चुके हैं। उन्हें सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक तथा महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया जा चुका है।

चुटकी

एक लड़की के दुःखी बाप ने हताश व परेशान होकर शासन से गुजारिश की कि समाज से दहेज प्रथा का कलंक मिटना चाहिए तथा लड़कियों के लिए वर शीघ्र ही उचित मूल्य की दुकान पर मिलना चाहिए।

उ.नि. (एम) राजेन्द्र कुमार शर्मा
महानिदेशालय

संक्षिप्त समाचार

ग्रुप केन्द्र खटखटी की नयी इमारत का उद्घाटन



ग्रुप केंद्र के प्रशासनिक ब्लाक की इमारत का उद्घाटन करते हुए अपर उप महानिरीक्षक बचन सिंह रावत

दीमापुर, नागालैंड में अस्थायी रूप से उपलब्ध करायी गयी भूमि पर चल रहे ग्रुप केंद्र दीमापुर के लिए 1981 में असम के कार्बीलांग जिले के खटखटी इलाके में इस ग्रुप केंद्र के लिए 179 एकड़ भूमि खरीदी गयी ओर फरवरी 1995 में ग्रुप केंद्र दीमापुर के मुख्य कार्यालय को खटखटी में स्थानांतरित कर दिया गया। तभी से यह कार्यालय अर्द्ध स्थायी बैरकों में चलाया जा रहा था।

प्रशासनिक ब्लाक का निर्माण कार्य पूर्ण हो जाने पर 15 अगस्त, 1996 को ग्रुप

केंद्र के अपर महानिरीक्षक श्री बचन सिंह रावत ने इस की नयी इमारत का उद्घाटन किया।

आर.ए.एफ. द्वारा समाजोपयोगी कार्य

105 आर.ए.एफ. बटा. की ए. और डी. कम्पनियों ने दिनांक 24 जुलाई, 96 को आदिवासियों वाले दूरस्थ क्षेत्र में ओ.आई.एस.सी.एस. इन्टरनेशनल, मालापुरम के तत्वाधान में ओथाई फिजके चथालूर मालामुथन कालोनी में एक सड़क निर्माण का समाजोपयोगी कार्य चलाया। इसके अतिरिक्त यूनिट द्वारा अपने यूनिट के चिकित्सा अधिकारी की देख-रेख में उपरोक्त इलाके में एक चिकित्सा शिविर का आयोजन भी किया गया। अल्पसंख्यक समुदाय और आदिवासियों के लगभग 200 लोगों ने इसमें भाग लिया। दवाइयों का प्रबन्ध ओ. आई.एस.सी.एस. इन्टरनेशनल ने किया। आम जनता और प्रेस माध्यमों सहित जिला प्रशासन ने द्रुत कार्य बल के जवानों के इन समाजोपयोगी कार्यों की काफी सराहना की।

द्रुत कार्य बल की 107 बटालियन ने रायसेन जिले के पांच गांवों को वहां विभिन्न विकासात्मक एवं समाजोपयोगी कार्य चलाने के लिए अपनाया है। इन गांवों में उपचार, बाल एवं प्रौढ शिक्षा, सामाजिक वानिकी, स्वास्थ्य एवं सफाई, राष्ट्रीय एकता, खेल-कूद गतिविधियों का आयोजन नियमित रूप से किया जा रहा है।

के.रि.प. बल ने 82 आतंकवादी पकड़े

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह जुलाई, 96 में देश भर में 82 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी सात मुठभेड़ों तथा अन्य आपरेशनों में चार आतंकवादी मारे भी गए।

सर्वाधिक 27 आतंकवादियों को मणिपुर में गिरफ्तार किया गया, इनमें पांच उल्फा तथा एक एल.टी.एफ. का आतंकवादी भी शामिल है। जम्मू-कश्मीर में गिरफ्तार 24 आतंकवादियों में से 11 हिजबुल मुजाहिद्दीन, दो अल जेहाद तथा एक मुस्लिम जाबांज गुट का सदस्य है।

इनके अतिरिक्त असम में आठ, मेघालय में छः, त्रिपुरा में 13 तथा आंध्र प्रदेश में चार आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। जम्मू-कश्मीर में मारे गए आतंकवादियों में दो इस्लामिक फ्रंट तथा एक हिजबुल मुजाहिद्दीन गुट का था।

इन सब कार्रवाईयों में बल के जवानों ने 56 घातक हथियार तथा 1455 गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में 10 ए.के. 47 रायफलें: छः ए.के. 56 रायफलें, तीन ए.के. एम, दो यू.एम.जी., 18 पिस्तौले और रिवाल्वरें तथा अन्य हथियार शामिल हैं।

किंतु इस सारी प्रक्रिया में बल के पांच जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 15 गंभीर

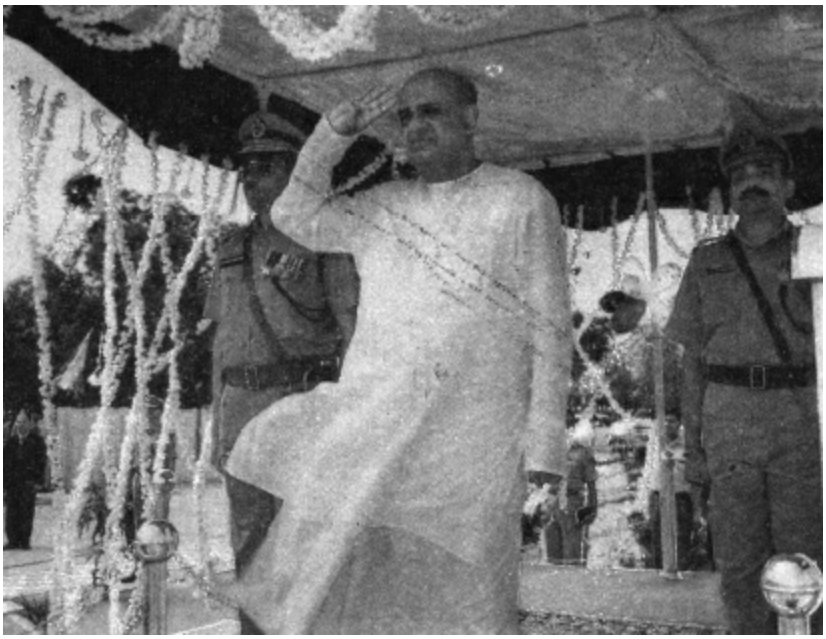
रूप से घायल।

फोटो फीचर

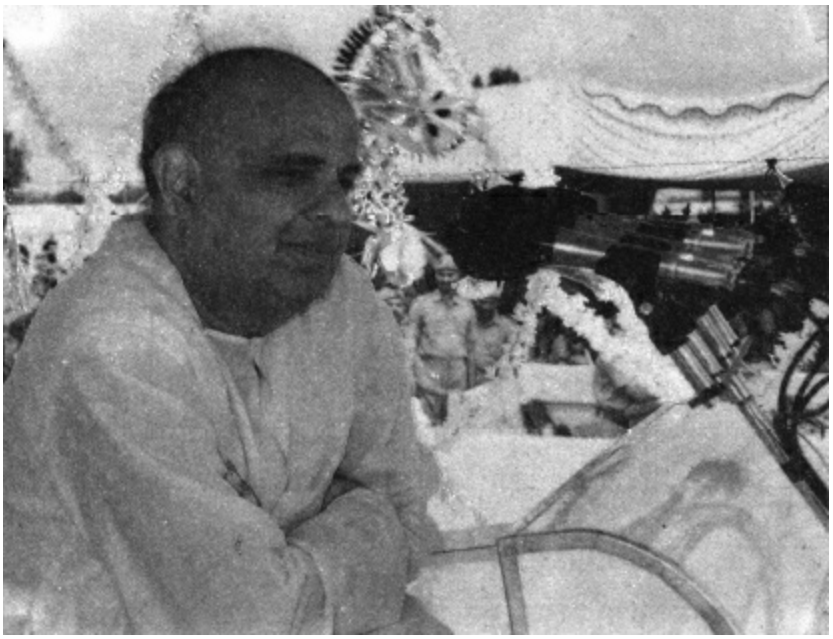
कर्नाटक में अपने मूख्य मंत्रित्व काल के दौरान प्रधान मंत्री श्री एच.डी. देवगौड़ा ने शांति रक्षक के.रि.पु. बल की भूमिका की भरपूर प्रशंसा की थी। तीन जुलाई, 1995 को 58 बटालियन मुख्यालय येलेहंका, बैंगलोर में हुयी पासिंग आऊट परेड में श्री देवगौड़ा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस मौके पर कर्नाटक के गृह मंत्री श्री बी.जी.आर. सिंधिया भी उपस्थित थे।

श्री देवगौड़ा ने दक्षिण सेक्टर के 757 जवानों की दीक्षांत परेड का निरीक्षण कर उस की सलामी ली। परेड का नेतृत्व 58 बटालियन के कमांडेट श्री एम.एम.सिंह ने किया। मुख्य अतिथि की आगवानी दक्षिण सेक्टर के अपर महानिदेशक श्री डी. आर. कार्तिकेयन ने की।

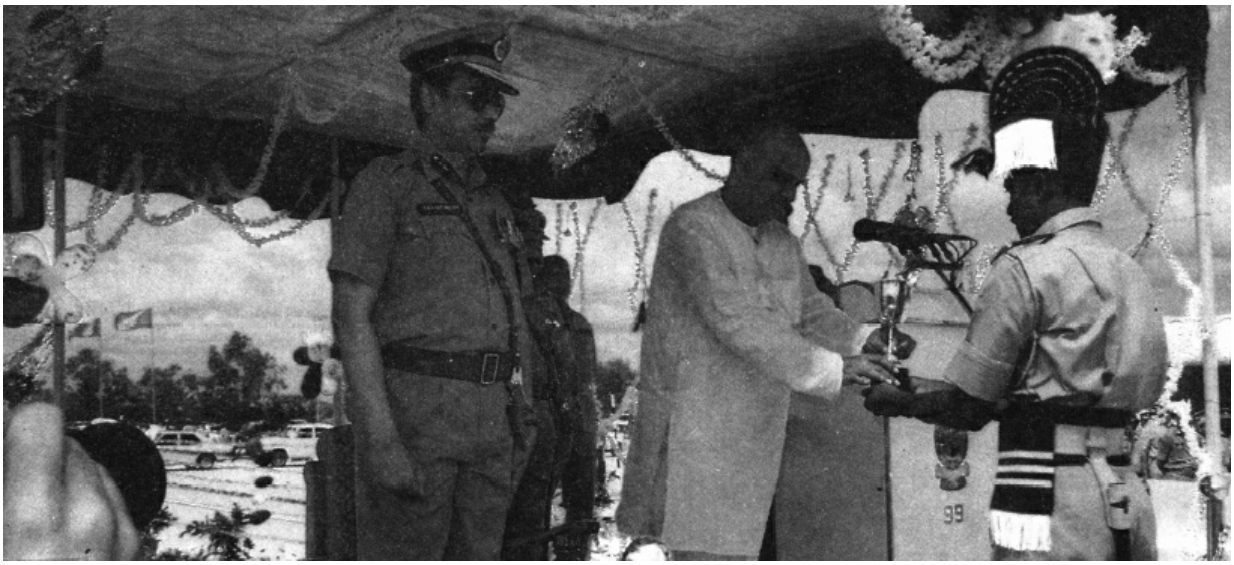
58 बटालियन ने जवानों तथा अन्य कर्मचारियों ने इस मौके पर कड़गम नृत्य जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए।



परेड की सलामी लेते हुए कर्नाटक के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री देवगौड़ा



श्री देवगौड़ा उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए



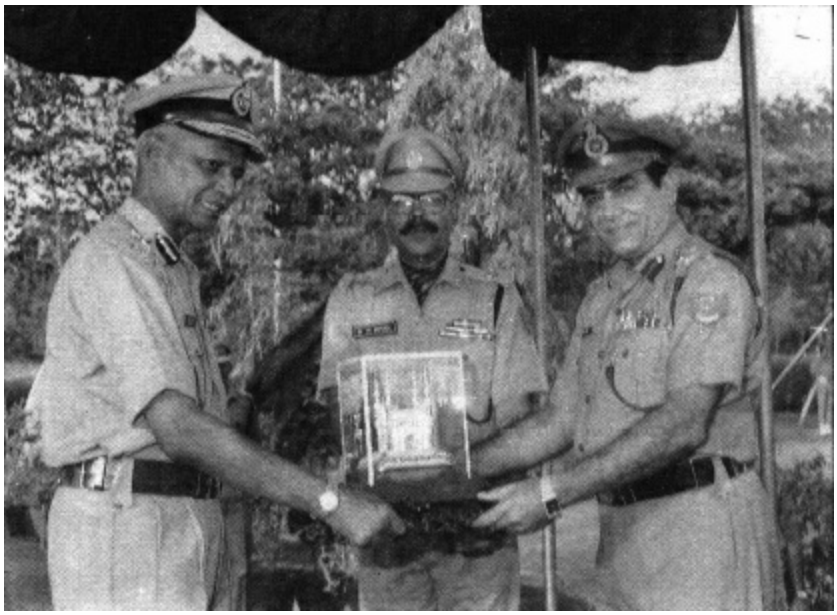
सर्वश्रेष्ठ जवानों को ट्राफी प्रदान करते हुए श्री देवगौड़ा

फोटो फीचर

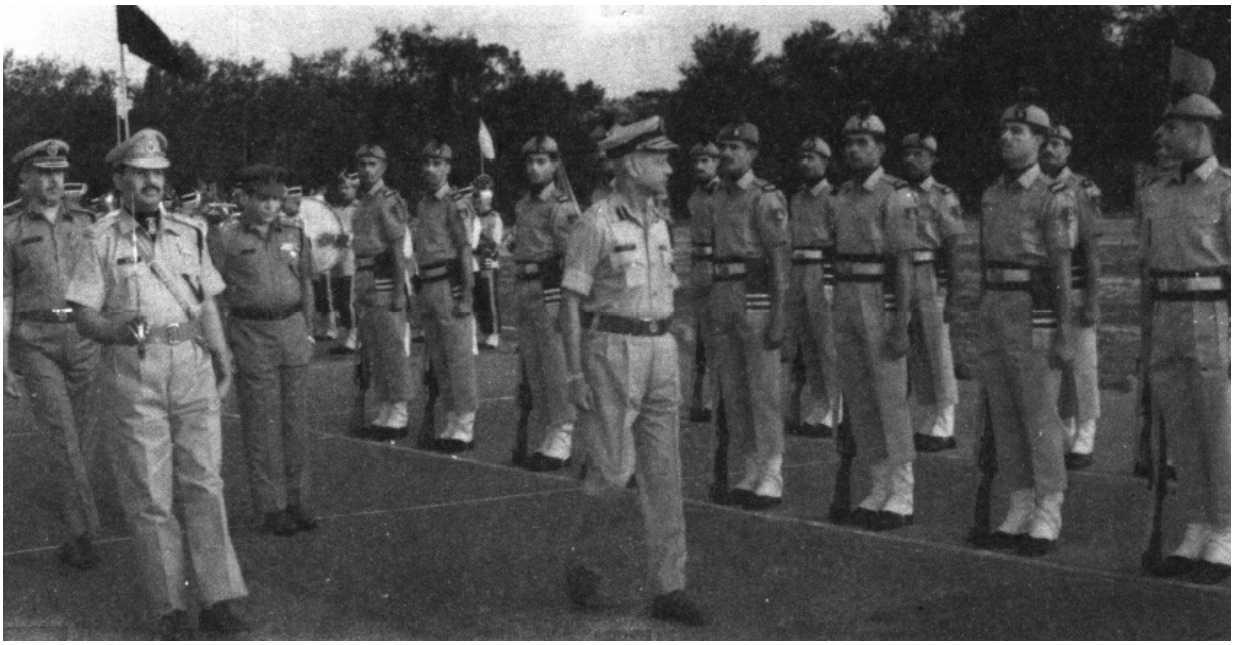
29 जून, 1996 को बल के महानिदेशक श्री त्रिपाठी को सिकंदराबाद ग्रुप केंद्र द्वारा भावपूर्ण विदाई दी गयी। उप महानिरीक्षक श्री डी.के. सूरी ने इस अवसर पर श्री त्रिपाठी को एक स्मृति चिह्न भी भेंट किया। श्री त्रिपाठी ने इस मौके पर गार्ड आफ आनर का निरीक्षण किया तथा रंगा रेड्डी जवाहर नगर में के.रि.पु. बल स्कूल का शिलान्यास भी किया।



के.रि.पु. बल स्कूल का शिलान्यास करते हुए श्री त्रिपाठी

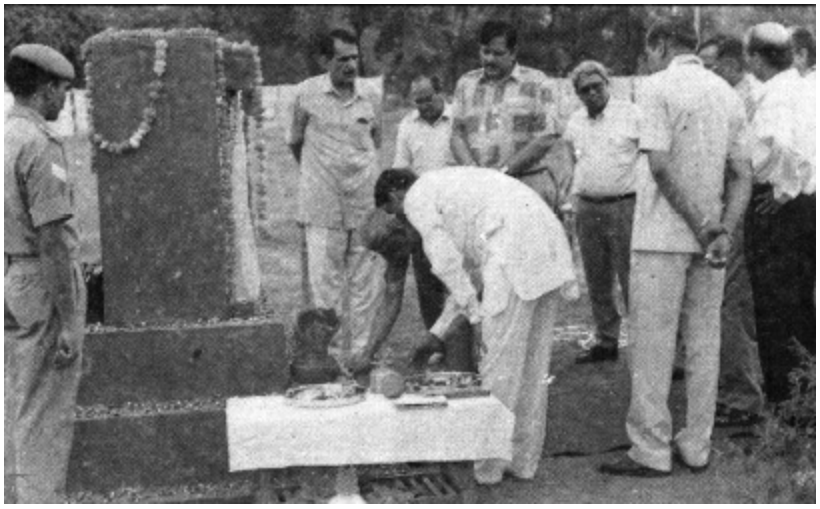


श्री त्रिपाठी को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए श्री डी.के. सूरी



गार्ड आफ आनर का निरीक्षण करते हुए श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

बल के कार्मिकों के बच्चों के लिए छात्रावास



छात्रावास इमारत का शिलान्यास करते हुए श्री लिड्ल



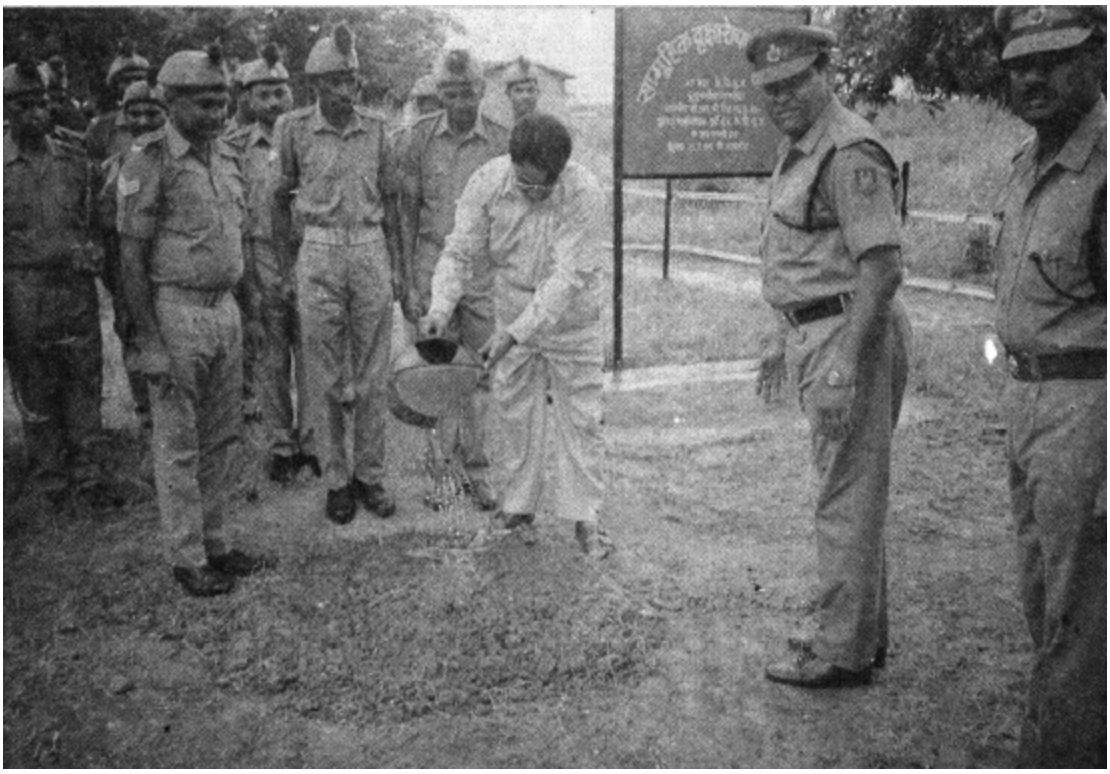
शिलान्यास के बाद श्री लिड्ल अधिकारियों एवं कार्मिकों को सम्बोधित करते हुए

बल के कार्मिकों के कालेज जाने वाले बच्चों के लिए वजीरावाद, नई दिल्ली स्थित 103 बटालियन स्थल पर एक छात्रावास का निर्माण किया जा रहा

30 कमरों वाले इस छात्रावास में 40 लड़कों तथा 20 लड़कियों के रहने की व्यवस्था होगी। बल के अपर महानिदेशक श्री ए.वी. लिड्ल ने 29 जुलाई 1996 को इस छात्रावास का शिलान्यास किया। छात्रावास के निर्माण के लिए बल की केन्द्रीय कल्याण निधि से 30 लाख की एक मुश्त सहायता प्रदान की गयी है। इस छात्रावास के निर्माण से बार-बार होने वाले तबादलों के बावजूद बल के कार्मिकों के बच्चे दिल्ली में अपनी पढ़ायी बिना किसी दिक्कत के जारी रख सकेंगे।

वन महोत्सव उद्घाटन

पुलिस महानिरीक्षक (पूर्वी क्षेत्र) श्री आर.पी. सिंह द्वारा चुमुकदीमा (नागालैण्ड) मे तैनात 43वीं वाहिनी, के.रि.पु. बल, के प्रागंण में एक सामूहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया जिसके अन्तर्गत वाहिनी के प्रत्येक सैनिक ने एक-एक वृक्षारोपित कर उसे अपनी देख-रेख मे पालन-पोषण कर समृद्ध करने की शपथ ली। 18 से 21 जुलाई, 96 के दौरान वाहिनी द्वारा आयोजित क्रमवार प्रशिक्षण कार्यक्रम, विस्फोटकों एवं विस्फोटक प्रसूचक यन्त्र पाठ्यक्रम के अलावा उत्तर-पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक मण्डल के कलाकारों द्वारा प्रदर्शित सांस्कृति कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।



एक पौधा लगाकर वन महोत्सव कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए श्री आर.पी. सिंह



उत्तर-पूर्व के दुर्गम क्षेत्रों में बल के जवानों की गश्त

रजि. न. 4767/87



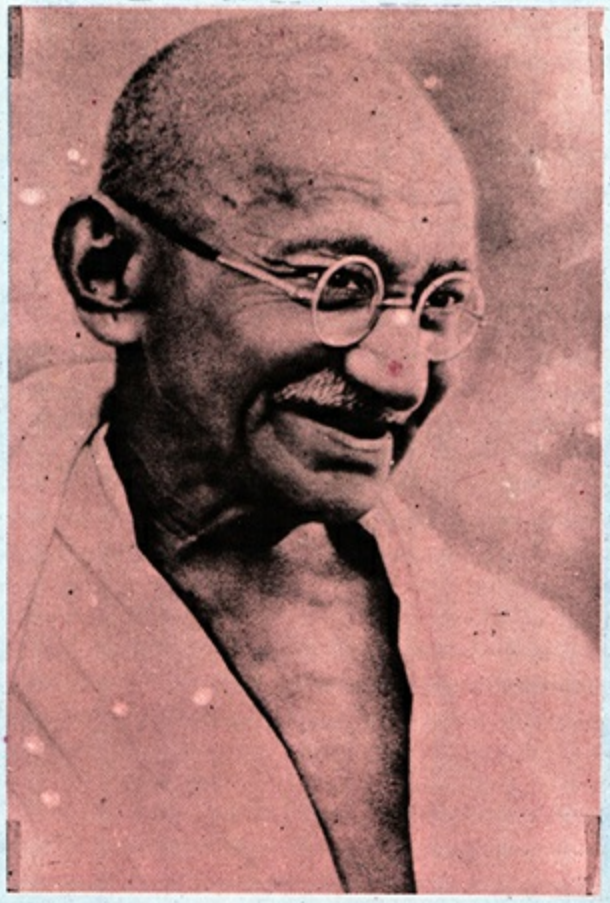
श्रीनगर में डल झील के किनारे तैनात बल का एक जवान

राजभाषा अंक

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

खंड - 9 अंक - 6 30 सितंबर, 1996 8 आश्विन, शक 1918



कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता

–महात्मा गांधी



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-9 अंक-6
30 सितंबर, 1996
8 आश्विन, शक 1918

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
एस.के. खन्ना

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय-सूची

सम्पादकीय
संदेश
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में राजभाषा की प्रगति
हिंदी का देश की अखंडता और एकता में योगदान
संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाएं
संविधान सभा में हिंदी पर राजर्षि टंडन
क्या आप जानते हैं ?
भाव पुष्प
हिंदी के अनन्य भक्त विनोबा भावे
सांसद डॉ. सेठ गोविंद दास का संसद में वक्तव्य
सरकारी कामकाज में हिंदी प्रोत्साहन योजनाएं
ध्यान रहे
पुरस्कार विजेता
बीते दिन

सम्पादकीय

एक पुरानी कहावत है-सब से बदतर बुराई है मानसिक दासत्व। मानसिक दासत्व की पुश्तैनी ताकत है, समझदार लोगों को अपनी चपेट में लेने की करामात। इसके चुंगल से छुटकारा पाने के लिए सही और सुलझी सोच समझ और मानसिकता की जरूरत है। अपना जीवन, समाज, प्रांत, राष्ट्र, साहित्य और संस्कार संवारने तथा अपनी भाषा, संस्कृति, जिजीविषा और जिज्ञासा साधने के लिए इसी परिपक्व सोच समझ और मानसिकता की जरूरत है।

संदर्भ, राजकीय परिवेश और खासतौर पर भारत के राजकीय कामकाज में हिंदी की स्थिति को लेकर है। 1835 में ब्रिटिश कम्पनी सरकार ने बौद्धिक शोषण के विशेषज्ञ लार्ड मैकाले की सलाह पर, उसकी सुझायी शिक्षा पद्धति को परतंत्र भारत में लागू किया। तत्कालीन गवर्नर जनरल बेंटिक ने ऐलान किया कि ब्रिटिश साम्राज्य की इस सरकार का प्रधान उद्देश्य यह होना चाहिए कि भारतीय विद्यार्थियों को यूरोपीय साहित्य और ज्ञान विज्ञान से परिचित कराया जाए। अत: भारत में शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए स्वीकृत धनराशि पूरी तरह अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा के लिए ही खर्च की जानी चाहिए।

22 साल बाद 1857 में कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में अंग्रेजी विश्वविद्यालय शुरू किये गए और ज्ञान विज्ञान के केंद्र ये विश्वविद्यालय इस प्रकार प्रारंभ हुए कि हिंदी अपने ही देश में धीरे धीरे ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में पीछे धकेली जाने लगी। किंतु घोर अपेक्षा के बावजूद हिंदी गुरूदेव रविंद्र नाथ टेगोर की उक्ति “भारतीय भाषाओं के हार की मध्यमणि हिंदी भारत भारती हो कर विराजती रहे” को चरितार्थ करती हुयी लोक मानस के मन मस्तिष्क पर छायी रही।

हिंदी भारत जैसे विशाल देश में आम लोगों की भाषा है और भारत के आम लोग अब प्रजातंत्र का सही अर्थ समझने लगे हैं। संविधान द्वारा दिए गए अधिकारों और आश्वासनों के उपभोक्ता नागरिकों के लिए हिंदी के संवैधानिक अधिकार को और अधिक दिनों तक रोके रखना कठिन है। साथ साथ ही सही हिंदी को भी राजभाषा के रूप में अपनाना पड़ेगा। तभी प्रशासन में जनता की भागीदारी भी साध्य और सफल होगी। भविष्य के आकाश पर स्पष्ट दिख रहे इस संदेश को अब हमें समझ ही लेना चाहिए।

संदेश



हमारे देश में 14 सितम्बर का विशेष महत्व है क्योंकि इसी दिन सन् 1949 में संविधान सभा ने हिंदी को देवनागरी लिपि में केन्द्र सरकार के काम-काज की भाषा के रूप में स्वीकार किया था। तदुनसार इसे संविधान की धारा 343(1) के रूप में समाहित कर राजभाषा का दर्जा दिया गया था। इस दिन के मनाने का एक विशेष महत्व है और वह है लोगों को अपनी निजी भाषा व संस्कृति की ओर आकर्षित करना, उनमें अपनत्व की भावना जगाना। हिंदी भारतीय सभ्यता, संस्कृति व गौरव के प्रतीक के रूप में देश को जोड़ती आई है। इसने संतों और भक्तो की वाणी को केवल जन-जन तक भी नहीं पहुंचाया बल्कि भारतीय जीवन दर्शन, आदर्शों और मान्यताओं को उनके हृदय में उतारा है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारी आजादी के आंदोलन में अहिंदी भाषी नेतृत्व ने जनभाषा हिंदी को ही स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रीय संपर्क सूत्र के रूप में अपनाने की सलाह दी थी, परन्तु दुर्भाग्यवश स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे अंदर संकीर्णता व अलगाव के बीज अंकुरित होने की धारणा, आज तक हिंदी को उसका उचित स्थान नहीं दिला पाई।

जहां तक कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग बढ़ाने व प्रचार-प्रसार की बात है इसमें कोई सवैधानिक अड़चन सामने नहीं आती है। बाधा है तो सिर्फ हमारी कुंठित मानसिकता की जिसे दूर करने के लिए प्रत्येक कार्यालय में हिंदी दिवस मनाए जाते हैं, हिंदी कार्यशालाएं चलाई जाती हैं, सम्मेलन व संगोष्ठी की जाती हैं, विभिन्न प्रतियोगिताएं व कार्यक्रम चलाए जाते हैं। हर तिमाही राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में चर्चाएं की जाती हैं और काम-काज की समीक्षा की जाती है। भाषा के अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि उसमें प्रवाह हो तथा वह अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने में आत्मसात कर सके। अत: भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को हिंदी भाषा में आत्मसात किया जाए, उसके प्रचार में सुगमता लाई जाए तभी राजभाषा जल्दी-से-जल्दी लोगों के मन में अपना स्थान बना पाएगी।

जहां तक बल में राजभाषा के बढ़ते हुए प्रयोग का संबंध है इसमें दिन प्रतिदिन गति आ रही है और यही कारण है कि बल के नए-नए क्षेत्रों में हिंदी प्रयोग का दायरा चौड़ा होता जा रहा है। कामकाज की सुविधा के लिए हिंदी उपकरणों की संख्या बढ़ती जा रही है और यह एक गर्व की बात है कि दिल्ली स्थित केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थानों में 90 प्रतिशत सीटों का उपयोग केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का रहा है। अर्थात् हिंदी प्रशिक्षण व हिंदी कामकाज के विकास में यह अन्य सरकारी विभागों से बहुत आगे है। आशा है भविष्य में आप सभी इसी भावना के साथ हिंदी प्रयोग बढ़ाने में सहयोग प्रदान करेंगे।

अत: आइए आज हम सभी जनमत की भावना को मानकर जनहित में हिंदी अपनाएं और राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने पर गर्व महसूस करें।

(अरूण भगत)
महानिदेशक
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में हिंदी

सरकार की राजभाषा नीति प्रोत्साहन द्वारा सरकारी कामकाज मे हिन्दी के प्रयोग में निरंतर वृद्धि करने की है। के.रि.पु. बल सरकार की इस नीति के अनुपालन की दिशा में सदैव तत्पर रहा है। केरिपु बल का स्वरूप एक लघु भारत के समान है क्योंकि इस बल में प्रत्येक राज्य एवं संघराज का व्यक्ति भर्ती किया जाता है। यद्यपि आरंभ में अनेक जवानों को हिन्दी बोलनी भी नहीं आती किन्तु इस बल की संपर्क भाषा हिन्दी होने के कारण वे अतिशीघ्र हिन्दी बोलना सीख जाते हैं। इतना ही नहीं, बल के सभी कार्मिक हिन्दी में लिखने का अभ्यास भी करते हैं और वे छुट्टी एवं अन्य विषयों में संबंधित अपने आवेदन प्राय: हिन्दी में देते हैं और इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप से सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में अपना सक्रिय योगदान कर रहे हैं।

सरकारी कामकाज में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए समय-समय पर बल के विभिन्न कार्यालयों का निरीक्षण किया जाता है तथा उपयुक्त सुझाव दिए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, दिल्ली स्थित केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान के पूर्णकालिक गहन पाठ्यक्रमों में प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ तथा हिन्दी टंकण का अध्ययन करने वाले सर्वाधिक कर्मचारी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के ही होते हैं। यहां तक कि पिछले दो सत्रों से प्रशिक्षणार्थियों की संख्या अधिक हो जाने के कारण संस्थान हमारे कुछ कार्मिकों को प्रशिक्षण सत्र में प्रवेश देने में असमर्थता व्यक्त करता रहा है और हमें उन कर्मचारियों को आगामी सत्रों में भेजने की व्यवस्था करनी पड़ी है। यह सब इस बल के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के प्रशिक्षण के प्रति

उत्साह का परिणाम है।

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रत्येक वर्ष अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इन प्रतियोगिताओं में इस बल के कर्मचारी बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। इन प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक पुरस्कार तथा प्रशस्ति-पत्र इस बल के कर्मचारी ही अर्जित करते हैं।

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की दिशा में इस बल द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं।

(1) यह सुनिश्चित किया जाता है कि :-

(क) बल में सभी सामान्य आदेश द्विभाषी रूप में अथवा हिन्दी में जारी किए जाते हैं।

(ख) हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जाते हैं।

(2) बल के 197 कार्यालय राजभाषा नियम 1976 के नियम 10 (4) के अंतर्गत अधिसूचित हैं।

(3) जब तक संपूर्ण बल में देवनागरी टाइपराइटरों का सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जाता तब तक सभी कार्यालयों द्वारा केवल देवनागरी टाइपराइटर ही खरीदने के आदेश जारी किए गए हैं। इन आदेशों का अनुपालन भी सुनिश्चित किया जाता है।

(4) सभी इलेक्ट्रानिक टाइपराइटर द्विभाषिक खरीदे जाते हैं।

बल में प्रत्येक वर्ष हिन्दी पखवाड़ा मनाया जाता है और मुख्य समारोह हिन्दी दिवस (14 सितम्बर) को आयोजित किया जाता है। इस समारोह में बल के महानिदेशक द्वारा प्रतियोगिताओं में सफल कार्मिकों को पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी दिनांक 1.9.96 से 13.9.96 तक बल में हिन्दी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इस क्रम में निम्नलिखित हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :-

(क) 5.8.96 से 4.9.96 तक हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता

(ख) 26.8.96 से 3.9.96 तक हिन्दी कार्यशाला का अयोजन

(ग) 3.9.96 को हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

(घ) 10.9.96 को हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

(च) 13.9.96 को हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि केरिपुबल सरकार की राजभाषा नीति के यथासंभव अधिकाधिक अनुपालन में सदैव अग्रणी रहा है।

-हंसराज गुगनानी
हिंदी अनुवादक
महानिदेशालय

हिन्दी का देश की एकता व अखण्डता में योगदान

महात्मा गांधी के कथानुसार "राष्ट्रभाषा के बगैर राष्ट्र गूंगा है।" भाषा राष्ट्रीय एकता का सबसे महत्वपूर्ण निर्माणकारी तत्व है अत: प्रत्येक देश में एक राष्ट्रीय भाषा का होना आवश्यक है। केन्द्रीय तथा राज्य सरकारें शासकीय पत्र-व्यवहार में राजकाज तथा सार्वजनिक कार्यों के लिए जिस भाषा का प्रयोग करती है, उसे राजभाषा कहते हैं। राजभाषा का प्रयोग मुख्य रूप से शासन व्यवस्था, विधान न्यायपालिका तथा कार्यपालिका में होता है। देश के अन्तर्राज्यीय कार्य व्यवहारों में भी राजभाषा प्रयुक्त की जाती है।

भारत में हिन्दी को राजभाषा के रूप में संवैधानिक मान्यता प्राप्त है। संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा "हिन्दी" और लिपी "देवानागरी" होगी। संघ के राजकीय कार्यों के लिए हिन्दी भाषा के उत्तरोत्तर विकास के लिए, साथ ही उसमें अंग्रेजी के प्रयोग को कम या बिल्कुल समाप्त करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 344 में एक "राजभाषा आयोग" की स्थापना भी जून 1955 में की गई है। इस समय देश के 25 राज्यों में से 4 राज्यों-उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, एवं एक केन्द्रशासित प्रदेश नई दिल्ली में राजभाषा हिन्दी है। एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच संचार के लिए हिन्दी को राजभाषा की मान्यता प्राप्त है। राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए संविधान के अनुच्छेद 351 के अन्तर्गत केन्द्र सरकार को हिन्दी के प्रसार, वृद्धि और विकास करने के लिए निर्देश दिए गए हैं। इसके अलावा गृह मंत्रालय के अधीन स्वतन्त्र विभाग के रूप में जून, 1975 में एक "राजभाषा" विभाग की स्थापना की गई है।

हमारे देश में हिन्दी भाषा ने राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। चूंकि "संस्कृत" से ही "हिन्दी" का विकास हुआ है, अत: वेद, उपनिषद्, पुराण टीकाओं आदि संस्कृत साहित्यों ने राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। कबीर, गुरूनानक, दादू, मीरा आदि भक्तिकालीन संतों ने अपने विचारों से सामाजिक-धार्मिक एकता की जागरूकता अपने साहित्य के माध्यम से उत्पन्न की। मध्यकालीन-धार्मिक विचारकों तथा 1857 के आन्दोलन से लेकर 1947 तक सभी राष्ट्रवादियों ने हिन्दी भाषा के माध्यम से राजनीतिक एकता प्रदान कर देश को एक सूत्र में पिरोने का सफल प्रयास किया। राजा राममोहन राय, दयानन्द, गान्धी,

नेहरू, नेताजी आदि प्रबुद्ध लोगों ने भरतीय राष्ट्रीय चेतना को हिन्दी के माध्यम से नव जागरण से जोड़ने का एक सफल प्रयास किया। आधुनिक काल के कवियों महावीर प्रसाद मैथलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा आदि ने अपने हिन्दी साहित्य द्वारा राष्ट्र प्रेम का संदेश दिया।

देश की "अनेकता में एकता" में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी भाषा द्वारा ही हिंदुस्तानियों की अस्मिता की पहचान होती है। देश की भावनात्मक एकता बनाए रखने में इसका सराहनीय योगदान रहा है। राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए हिन्दी जैसी भाषा का प्रचार-प्रसार एवं अधिकाधिक उपयोग जरूरी है, जिसे देश के गरीब मजदूर, किसान तथा सर्वहारा वर्ग के लोग आसानी से समझ सकें।

यद्यपि भारत के विभिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न भाषाओं का प्रचलन है तथापित राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है क्योंकि हिन्दी इस देश के वासियों को वह शक्ति प्रदान करती है जिसके आधार पर भारत के भौतिक एवं नैतिक मूल्यों को स्थायी बनाया जा सकता है। यह भाषा देश के नागरियों को बंधुत्व में बांधने में समर्थ रही हैं। इसके द्वारा यहां के निवासियों में देश-प्रेम, विशाल हृदयता, स्वार्थ-त्याग आदि उदात्त भावनाओं के बीज बोए गए हैं।

उपर्युक्त सभी तथ्यों के बावजूद यहां पर हिन्दी का उतना विकास एवं आदर नहीं हो पाया है जितना कि एक राष्ट्रभाषा के लिए होना चाहिए। इसके पीछे "कथनी और करनी में अन्तर" नीति रही है। उच्च विशिष्ट वर्ग की सोच अंग्रेजी द्वारा अधिक उन्नति प्राप्ति करने में है। आज लोग बच्चों को "अ" से "अनार" के बजाए "ए" से "ऐपल" की शिक्षा देते हैं। अत: यदि हमें हिन्दी को सर्वमान्य बनाना है तो सर्वप्रथम राजभाषा और राष्ट्रभाषा का भेद मिटाना होगा। राजभाषा हिन्दी का स्वरूप आम बोलचाल की भाषा का होना चाहिए। संविधान की मान्यताओं को सख्ती से लागू करना होगा। सरकारी कार्यों में अनुवाद की बजाए मौलिक रूप से हिन्दी का व्यवहार करना पड़ेगा। स्कूलों-कॉलेजों में, कार्यालयों में काम का पाठ्यक्रम लागू करना चाहिए। भाषा को जानकारी का वाहक बनाया जाये। हिन्दी के प्रति लोगों में रूचि पैदा की जाए। इस हेतु प्रदर्शन, पुरस्कार आदि व्यवस्थाएं हो सकती है। भाषा का प्रश्न राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ा जाए। ताकि प्रत्येक व्यक्ति इसे गम्भीरता से ले। क्योंकि भाषा सांस्कृतिक मूल्यों की वाहक है, अत: ऐसा करना आवश्यक है।

हमारे देश में हिन्दी भाषा द्वारा ही धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक एकता लाई जा सकती है क्योंकि इसको भारत के ज्यादातर लोग बोलते हैं तथा यह राष्ट्र की भाषा है। आजादी आने के पहले राष्ट्रीय नेताओं ने हिन्दी को राष्ट्रीयता का अंग माना था और खादी, छुआछूत निवारण आदि के समान ही हिन्दी प्रचार को भी रचनात्मक कार्यक्रम के अन्तर्गत रखा था। अत: यह भावना जब तक पुन: जागृत नहीं होती मात्र सरकूलर, आदेश, सेमिनार और प्रदर्शनों से हम हिन्दी की गाड़ी को घसीट ही सकते हैं, सरपट दौड़ा नहीं सकते।

इस प्रकार इस समय देश में बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता, क्षेत्रियता, भाषावाद आदि

समस्याओं के संदभ में, हिन्दी की प्रासांगेकता सर्वोदेत है। यही एक ऐसी भाषा है जो देश के विभिन्न भाषायी विवादों को परे कर के यहां पर क्षेत्रवाद के पनपते स्वरूप को नष्ट करने में सक्षम है। हिन्दी भाषा द्वारा ही देश में सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक एकता स्थापित कर इसे राष्ट्रीय धारा के मुख्य अंग के रूप में मानकर "राष्ट्रीय एकता व अखण्डता" को कायम रखा जा सकता है।

संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाएं

1. असमिया
2. उड़िया
3. उर्दू
4. कन्नड़
5. कश्मीरी
6. गुजराती
7. तमिल
8. तेलगु
9. पंजाबी
10. बंगला
11. मराठी
12. मलयालम
13. संस्कृत
14. सिंधी
15. हिन्दी
16. नेपाली
17. कोंकणी
18. मणिपुरी

"भारत में किसी भी नागरिक को इस बात का संकोच हो कि मुझे अंग्रेजी नहीं आती या अंग्रेजी न जानने के कारण उसके लिए प्रगति के सारे दरवाजे बंद हो जाते हों, यह स्थिति सचमुज लज्जास्पद है। जिस भाषा को बहुसंख्य लोग न समझते हों उसमें हमारे हर स्तर के आर्थिक, राजकीय व्यवहार होने से हम यह सिद्ध ही कर रहे हैं कि लोगों की समझ में न आने वाली भाषा में चलने वाला यह गणतंत्र इस सुसंस्कृत संसार में कहीं भी न होने वाली एक अद्भुत घटना है।"

-ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता
मराठी कथाकार श्री कुसुमाग्रज

संविधान सभा में हिंदी पर राजर्षि टंडन

हिन्दी की कोई भी चर्चा महान हिंदी सेवी राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन के बगैर पूरी नहीं होती। हिन्दी के प्रश्न पर उन्होंने कभी भी, किसी से भी, किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया। संविधान सभा में हिन्दी के सबसे प्रबल प्रवक्ता श्री टंडन ही थे जिनके प्रयासों से हिन्दी को संविधान में अपना स्थान मिल पाया जिसकी झलक संविधान सभा की बहसों में उनके भाषणों के निम्न अंशों से मिलती है -

"...मैं अत्यंत विनम्रता से सदन के माननीय सदस्यों से अनुरोध करता हूं कि आज हम जो कुछ करेंगे उसका संबंध केवल हमसे नहीं है या देश के उन थोड़े नर-नारियों से नहीं है जो अंग्रेजी तरीके से शिक्षित हए हैं और जिनका पालन पोषण अंग्रेजी भाषा के आधार पर हुआ है। आज हम जो भी निर्णय करेंगे, वे इस देश के उन करोड़ों लोगों के जीवन पर असर डालेंगे, प्रभावित करेंगे और उनके जीवन के निर्माण में सहायक होंगे, जिन लोगों का अंग्रेजी भाषा से कोई संपर्क होना असंभव है और जिनको उनकी वर्तमान दशा से ऊपर उठाना जरूरी है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हम आज जो निर्णय ले रहे हैं वे मौजूदा पीढ़ियों को ही प्रभावित नहीं करेंगे, बल्कि उन पीढ़ियों को भी प्रभावित करेंगे जो अभी पैदा नहीं हुई हैं।

महात्मा गांधी ने सन् 1918 में दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार सभा के माध्यम से हिन्दी का प्रचार किया था और आज भी 55 से 60 हजार तक परीक्षार्थी प्रतिवर्ष हिन्दी की परीक्षाओं में बैठते हैं। श्री मोतूरि सत्य नारायण राव यहां बैठे हुए हैं, जो इसकी पुष्टि करेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दी दक्षिण भारत के लिए ऐसी भाषा नहीं है जिसकी उन्हें बिल्कुल जानकारी नहीं हो।

यह उचित नहीं है कि गैर हिन्दी प्रांतों के लोग अंग्रेजी अंकों को चाहते हैं। श्री शंकरराव देब एवं श्री आम्बेडकर जी से मैं पूछना चाहता हूं कि क्या महाराष्ट्र के लोग उसे स्वीकार करेंगे। अगर कोई प्रांत हिन्दी को स्वीकार नहीं करता तो मैं आखिरी व्यक्ति होऊंगा जो हिन्दी को उनके ऊपर मढ़ूंगा। लेकिन इससे पहले भी कोई ऐसा तरीका ढंढना चाहिए जिससे लोगों की इच्छा का पता लग सके। अगर जनमत संग्रह संभव नहीं है, तो मैं चाहूंगा कि हिन्दी के सारे प्रश्नों को पहले जन अदालत के समक्ष रखा जाए।

मेरे हाथ में वह मूल लेख है जिसमें श्री केशव चंद्र सेन ने यह सुझाव दिया था कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाया जाए। (यह लेख "वंदेमातरम्" समाचार पत्र में 1905 में छपा था। जिसके तत्कालीन संपादक श्री अरविंद घोष थे) इसी के आधार पर हिन्दी के प्रश्न को पहले लोकमान्य तिलक ने उठाया और बाद में गांधी जी ने उसे देश भर में प्रचारित किया।

क्षेत्रीय भाषाओं के बारे में मैं इस प्रावधान का विरोध करता हूं कि बशर्ते जब तक

राज्य का विधानमंडल कानून बनाकर कोई राजभाषा घोषित नहीं करता, तब तक अंग्रेजी भाषा उसी रूप में काम आती रहेगी जिस रूप में संविधान के पारित होने से पहले काम में आती थी।

मैं यह पूछना चाहता हूं कि यह क्यों जरूरी है कि राज्य सरकारों को कानून बनाना पड़े और जब तक कानून बने, तब तक अंग्रेजी चालू रहे । हम अपने राज्य (उत्तर प्रदेश) में हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं। यही स्थिति बिहार और मध्य प्रदेश की है। इन राज्यों के लिए यह क्यों जरूरी होना चाहिए कि वे कानून बनाकर अपनी राजभाषा तय करें। मैं धारा 301 के बारे में कहना चाहता हूं जिसमें कहा गया है कि जब राष्ट्रपति का संतोष हो जाय कि जनसंख्या का एक महत्वपर्ण भाग किसी अन्य भाषा का प्रयोग चाहता है तो वह आदेश दे सकता है कि ऐसी दूसरी भाषा भी राजभाषा के रूप में स्वीकृत की जाएगी। मैं समझता हूं कि इस संबंध में कांग्रेस कार्य समिति ने जो निश्चय किया है, उस पर अमल करना ज्यादा लाभकारी होगा और यह निर्धारित करना जरूरी होगा कि जनसंख्या वह कितना प्रतिशत जरूरी है. जिसकी मांग पर वह दूसरी भाषा स्वीकृत की जाती है। मैं समझता हूं कि कार्य समिति ने बीस प्रतिशत को माना है और हम उस पर अमल कर सकते हैं, नहीं तो राष्ट्रपति के लिए यह निर्णय करना कठिन हो जाएगा कि किस भाषा के संबंध में यह माने या न मानें और उसमें कुछ गलतफहमी ही नहीं, कहीं कहीं पर कटुता भी पैदा हो सकती है।

क्या आप जानते हैं ?

- भारत की प्रमुख प्राकृत भाषाएं हैं - शौरसेनी, नागर, अवंती, मागधी, अर्धमागधी
- हिन्दी का विकास शौरसेनी उपभ्रंश (प्राकृत भाषा) से हुआ है।
- खरोष्ठी और ब्राह्मी भारत की प्राचीन लिपियां है।
- ब्राह्मी लिपि से भारत की आधुनिक लिपियों का विकास हुआ है।
- हिन्दी की लिपी देवनागरी है।
- देवनागरी लिपि आक्षारितक ध्वनि मूलक है।
- हिन्दी भारोपीय परिवार की भाषा है।
- दक्खिनी हिन्दी हैदराबाद क्षेत्र में बोली जाती है।
- हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी हिन्दी की प्रमुख शैलियां है।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 खंड एक के अनुसार संघ की भाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है।
- संविधान के अनुच्छेद 344(1) के अनुसार सन् 1955 में राजभाषा आयोग का गठन हुआ।
- संविधान के अनुच्छेद 120(1) के अंतर्गत हिन्दी को संसद की कार्रवाई में स्थान दिया गया।
- राजभाषा अधिनियम की धारा 3 के अधीन 26 जनवरी, 1965 से आगे संसदीय

कार्य निष्पादन में हिन्दी के अलावा अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने का उपबंध है।

- राजभाषा संशोधन अधिनियम 1967 के बाद अंग्रेजी अनिश्चित समय के लिए सरकारी कामकाज की भाषा बन गई।
- सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए 1976 में राजभाषा नियम बनाए गए जिससे केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी प्रयोग का आरंभ हुआ।
- राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति की समीक्षा के लिए 1976 में संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के अंतर्गत किया गया।
- संसदीय राजभाषा समिति ने पांच खंडों में अपने प्रतिवेदन राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत किए हैं, जिसमें प्रतिवेदन के पहले, दूसरे, तीसरे तथा चौथे खंड में की गई सिफारिशों के बारे में क्रमश: 30.12.1988, 29.3.1990, 4.11.1991 तथा 28.1.1992 को राष्ट्रपति जी के आदेश हो चुके हैं।
- भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों, सरकारी क्षेत्र के बैंकों व वित्तीय संस्थाओं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए पुरस्कृत करने हेतु 1986-87 से इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार योजना शुरू की गई।
- निर्णय के अनुसार संसदीय राजभाषा समिति के सुझाव के मद्दे-नजर केन्द्रीय हिन्दी समिति के निर्णय के अनुसार भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों से संबंधित मंत्रियों की अध्यक्षता में 42 उच्च स्तरीय हिंदी सलाहकार समितियां कार्य कर रही हैं।

भाव पूष्प

यहां हम आपको अनेक महापुरुषों, लेखकों, कलाकारों और मनीषियों एवं चिन्तकों द्वारा समय-समय पर अभिव्यक्त किए गए भाव-पुष्पों की माला से परिचित करा रहे हैं। इन सूक्तियों का उपयोग कार्यालयों में सूचनापट्टों, दीवारों आदि पर किया जा सकता है।

1. उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए, जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो अर्थात हिन्दी।

-रविन्द्रनाथ ठाकुर

2. हिन्दी में राष्ट्रभाषा बनने की पूरी क्षमता है।

राजा राममोहन राय

3. हिन्दी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है।

राहुल सांकृत्यायन

4. हिन्दी देश की गंगा है।

रामकुमार भुवालका

5. यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है तो यह जनता की भाषा में ही चलाना होगा।

-काका कालेलकर

6. अंग्रेजी और हिन्दी को साथ-साथ रखना बाघ और बकरी को एक साथ बैठाना है।

- गंगाशरण सिंह

7. कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है. जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।

- महात्मा गांधी

8. किसी विदेशी भाषा का किसी स्वतन्त्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा का माध्यम होना, सांस्कृतिक दासता है।

- वाल्टेर चेनिंग

9. दुनिया भर में भारत को छोड़कर कोई भी ऐसा देश नहीं मिलेगा, जहां एक विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाती

- महाकवि पी. कुंजि

10. राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा।

- श्रीमती महादेवी वर्मा

11. अब भी अंग्रेजी को राजभाषा बनाए जाने का आग्रह दासता के अभिशाप का अवशेष है।

-राहुल सांकृत्यायन

12. अंग्रेजी को हटाए बिना हिन्दी अपने न्यायोचित स्थान पर प्रतिष्ठित नहीं हो सकती।

-जगजीवन राम

13. हिन्दी के शब्द-भण्डार में कमी नहीं है, कमी है हमारी राष्ट्रीय निष्ठा की, देश-भक्ति की भावना की।

- डॉ. अम्बाप्रसाद "सुमन"

14. यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते है, तो इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

15. हिन्दी प्रचार का कार्य देश-भक्ति का कार्य है।

- गंगाशरण सिंह

16. अस्सी प्रतिशत दक्षिण वासियों का हिन्दी के प्रति सम्मान-भाव है।

- डॉ राजगोपालन

17. संस्कृत मां, हिन्दी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।

- डॉ. कामिल बुल्के

18. अंग्रेजी को बनाए रखने की नीति मानसिक दासता की द्योतक है।

-जगदगुरू शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ

19. अंग्रेजी के अन्धभक्त इस देश की धरती को छोड़कर इंग्लैण्ड या अमेरिका चले जाएं।

- पी. जान

20. अंग्रेजी यहां दासी या अतिथि के रूप में रह सकती है, बहूरानी के रूप में नहीं।

-कामिल बुल्के

-संकलनकर्ता
स.उ.नि. (एम) प्रतिभा चड्ढा
महानिदेशालय

हिंदी के अनन्य भक्त संत विनोबा भावे

मैं दुनियां की सब भाषाओं की इज्जत करता हूं, परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो यह मैं सहन नहीं कर सकता।"

यह उद्गार है उच्चकोटि के विचारक, दार्शनिक, समाजसेवी एवं सर्वोदय, पदयात्रा और भूदान के महान प्रवर्तक संत विनोबा जी के नाम से सुविख्यात विनायक नरहरि भावे के। इन का जन्म 11 सितम्बर, 1895 को महाराष्ट्र के कुलाबा जिले के गगोडा गांव में हुआ। मात्र 10 वर्ष की आयु में ही उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन एवं राष्ट्र की सेवा करने का निश्चय कर लिया जिसका उन्होंने आजीवन पालन किया। 15 वर्ष की उम्र में उन्हें स्कूल में दाखिल कराया गया। मैट्रिक के बाद वे बड़ोदा कॉलिज गए, परंतु जैसे ही उन्होंने यह महसूस किया कि उनके भाग्य में मात्र डिग्री के लिए पढ़ना नहीं लिखा

है, उन्होंने अपने सार्टोफिकेट जला डाले।

सन् 1916 में महात्मा गांधी के भाषणों से प्रेरित होकर, अपने माता-पिता से पूछे बगैर साबरमती आश्रम में गांधी जी के साथ जुड़ गए। यहीं गांधी जी ने प्यार से उनका नाम "विनोबा" रखा। गांधी जी ने उनके पिता को लिखा - "आपका पुत्र मेरे पास है, उसने इतनी कम उम्र में जो तेज और तप हासिल कर लिया उसे प्राप्त करने में मुझे वर्षों लग गए"।

विनोबा जी का झुकाव आध्यात्मिकता और स्वतंत्रता आन्दोलन की और अधिक था। विनोबा जी ने अपने जीवन में सामाजिक, आर्थिक उन्नति के लिए लगातार संघर्ष किया। वे उच्चकोटि के मौलिक विचारक और दार्शनिक, राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ अत्यंत कर्मठ, आदर्शवादी और मननशील निबंध लेखक थे। उनके विचार और कार्य सांस्कृतिक परम्परा "वसुधैय कुटुम्बकम" के अनुकूल थी। उनकी ये बातें केवल सैद्धांतिक नहीं थी बल्कि उन्होंने व्यवहार रूप में करके दिखाया था। उन्होंने अपना सारा जीवन गांधी जी के आदर्शों पर बलिदान कर दिया। राष्ट्रभाषा हिन्दी और प्रांतीय भाषाओं के वे जबर्दस्त हिमायती थे जिसे उनके निम्न उद्गारों से समझा जा सकता है।

"मैंने हिन्दी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से केरल के गांव गांव में जा कर मैं भूदान-ग्राम दान का क्रान्तिपूर्ण संदेश जनता तक न पहुंचा सकता। यदि मैं मराठी भाषा का सहारा लेता तो महाराष्ट्र से बाहर और कहीं काम न बनता। इसी तरह अंग्रेजी भाषा लेकर चलता तो कुछ प्रान्तों में काम चलता, परन्तु गांव गांव में जा कर क्रान्ति की बात अंग्रेजी द्वारा नहीं हो सकती थी। इसलिए मैं कहता हूं कि हिन्दी भाषा का मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है, इसने मेरी बहुत बड़ी सेवा की है।"

प्रत्येक प्रांतीय भाषा का अपना अपना स्थान है। मैंने अनेक बार कहा है कि जिस प्रकार मनुष्य को देखने के लिए दो आंखों की आवश्यकता होती है, उसी तरह राष्ट्र के लिए दो भाषाओं, प्रांतीय भाषा और राष्ट्र भाषा की आवश्यकता होती है। इसलिए हम लोगों ने दो भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य माना है। भगवान शंकर का एक तीसरा नेत्र था जिसे ज्ञान नेत्र कहते हैं। इसी तरह हम लोगों को भी तीसरे नेत्र की जरूरत हो तो संस्कृत भाषा का भी अध्ययन लाभकारी सिद्ध होगा और उस समय अंग्रेजी भाषा चश्मे के रूप में काम आएगी। चश्मे की जरूरत सबको नहीं पड़ती। हां कभी कुछ लोगों को उसकी जरूरत पड़ती है। बस इतना ही अंग्रेजी का स्थान है, इससे अधिक नहीं। इसलिए मैं चाहता हूं कि हिन्दी का प्रचार अच्छी तरह व्यापक रूप में होना चाहिए।"

अन्त में संत विनोबा पवनार चले गए और मौन व्रत का पालन करते हुए संन्यासी जीवन जीने लगे। सभी उनके दर्शनों और आशीर्वाद के लिए उनके पास जाते थे। नवम्बर, 1982 में उनका देहांत हो गया तथा 1983 में उन्हें मरणोपरांत "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया।

सांसद डॉ. सेठ गोविंद दास का संसद में वक्तव्य

(राजभाषा विधेयक पर 23 अप्रैल 1963 को संसद में सेठ गोविंद दास द्वारा दिए गए भाषा के अंश)

मानव-समाज में जब कभी भी कोई बड़ी बात हुई है, तब उसके लिए वातावरण तैयार किया गया है। हमारे देश की आधुनिक स्वतन्त्रता का भी यही इतिहास है। हमारे देश का वर्तमान वायुमंडल तैयार किया था राष्ट्रपिता ने, जिन्होंने इस नये भारत का निर्माण किया है; और उन्होंने इस सम्बन्ध में क्या कहा था, यदि मैं यहां उसे पढ़ दूं, तो कोई अनुचित बात न होगा। इसी के साथ मैं एक बात और कहना चाहता हूं। आज जो कुछ मैं कहूंगा, वह अपनी ओर से बहुत कम होगा, जो कुछ मैं यहां पर कहूंगा, वह यहां के महापुरूषों की ओर से ही कहूंगा। गांधी जी ने सन् 1918 में कहा था, जबकि देश का नेतृत्व उनके हाथ में आ रहा था -

"यह भाषा का विषय बड़ा भारी और बड़ा ही महत्वपूर्ण है। यदि सब नेता सब काम छोड़कर केवल इसी विषय पर लगे रहें, तो बस है। यदि हम लोग भाषा के प्रश्न को गौण समझें, या उधर से मन हटा लेंगे, तो इस समय लोगों में जो प्रवृत्ति चल रही है, लोगों के हृदयों में जो भाव उत्पन्न हो रहा है, वह निष्फल हो जायेगा। भाषा माता के समान है। माता पर जो प्रेम होना चाहिए, वह हम लोगों में नहीं है। हम अंग्रेजी के मोह में फंसे हैं। हमारी प्रजा अज्ञान में डूबी है। हमें ऐसा उद्योग करना चाहिए कि एक वर्ष में राजकीय सभाओं में, कांग्रेस में, प्रान्तीय सभाओं में और अन्य सभा-समाज और सम्मेलनों में अंग्रेजी का एक भी शब्द सुनाई न पड़े। हम अंग्रेजी का व्यवहार बिल्कुल त्याग दें।"

यह हमारे राष्ट्रपिता ने सन् 1918 में कहा था। मैं कहना चाहता हूं कि यदि भारत को सच्चा भारत रहना है, तो वह भारतीय भाषाओं के बिना नहीं रह सकता। यह प्रश्न हिन्दी का नहीं है। यह बहुत गलत कहा जाता है कि हिन्दी वाले यह चाहते हैं और हिन्दी वाले वह चाहते हैं। यह प्रश्न भारतीय भाषाओं का है। एक ओर हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएं हैं; और दूसरी ओर अंग्रेजी है। अंग्रेजी केवल भाषा के रूप में यहां नहीं है। अंग्रेजी के साथ सारी अंग्रेजियत बंधी हुई है। उसके साथ अंग्रेजी संस्कार बंधे हुए हैं, अंग्रेजी संस्कृति बंधी हुई है और अंग्रेजी सभ्यता बंधी हुई है। भारतीय भाषाओं के साथ भारतीयता है; इसलिये यदि हमें इस देश को सच्चा भारत बनाना है, तो मैं कहूंगा कि ऐसा हम अंग्रेजी द्वारा किसी प्रकार भी नहीं कर सकते। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में कोई संघर्ष नहीं है। मेरी समझ में नहीं आता, जब हिन्दी और अन्य प्रान्तीय भाषाओं में संघर्ष की बात कही जाती है। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषों की एक ही संस्कृति है। वे सब एक ही संस्कृति से निकली हैं। शब्द भंडार भी उन सब का एक है। उत्तर की भाषाएं तो संस्कृत से निकली हैं, दक्षिण की भाषाओं में प्रचुर परिणाम में संस्कृत की शब्दावली है।

फिर एक भाषा बढ़ती है, तो सारी अन्य भाषाएं भी बढ़ती हैं। मैं आपको एक दृष्टांत दूंगा। केन्द्रीय सरकार इस समय शब्दावली बना रही है। उस शब्दावली को कुछ थोड़े हेर-फेर के साथ सब राज्यों ने स्वीकार कर लिया है। तो इस प्रकार, जब एक भाषा बढ़ती है, तब अन्य भाषाएं भी बढ़ती है।

फिर भाषा प्रयोगशाला में नहीं बढ़ती। भाषा बढ़ती है तब, जब वह व्यवहार के क्षेत्र में आती है। प्रयोगशालाओं में कभी दुनियां में भाषा नहीं बढ़ी। मैं इतिहास का एक छोटा-सा विद्यार्थी रहा हूं। मैंने भाषाओं का इतिहास पढ़ा है, और क्योंकि यह मेरा विषय रहा है, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि कोई भाषा प्रयोगशाला में नहीं बढ़ी, भाषा बढ़ी है व्यवहार में। फिर प्रान्तीय भाषाओं की बढ़ती भी केन्द्र में हिन्दी की बढ़ती से होगी। अगर केन्द्र में अंग्रेजी में सब कुछ चला, तो अन्य भारतीय भाषाएं नहीं बढ़ सकतीं। प्रांतीय भाषाओं का भी विकास नहीं हो सकता। फिर तो सारे प्रांत अंग्रेजी की ओर देखेंगे। इस सम्बन्ध में भी राष्ट्रपिता का ही एक कथन सुनिए -

"अंग्रेजी को प्रांतीय भाषाओं का या हिन्दी का स्थान नहीं देना चाहिए। अगर अंग्रेजी ने यहां लोगों की भाषाओं को निकाल न दिया होता, तो प्रान्तीय भाषाएं आज आश्चर्यजनक रूप से समृद्ध होती। अगर इंग्लैंड फ्रेंच भाषा को अपने राष्ट्रीय काम-काज की भाषा मान लेता, तो आज हमें अंग्रेजी का साहित्य इतना समृद्ध न मिलता। नार्मन विजय के बाद वहां फ्रेंच भाषा का ही जोर था, लेकिन उसके बाद लोक-प्रवाह विशुद्ध अंग्रेजी के पक्ष में हो गया। अंग्रेजी साहित्य को आज हम जिस महान् रूप में देखते हैं, वह उसी का फल है।"

सबसे महत्वपूर्ण बात हमारे लिए स्वतंत्रता है, लेकिन स्वतंत्रता की हम रक्षा कब कर सकते हैं? स्वतंत्रता की रक्षा अंग्रेजी के दौर-दौरे से होने वाली नहीं है। स्वतंत्रता की रक्षा तब होगी, जब उस स्वतंत्रता को, उस स्वराज्य को यहां के लोग अपनी स्वतंत्रता और अपना स्वराज्य मानेंगे। इस सम्बन्ध में भी आप राष्ट्रपिता का कथन सुनिए। उन्होंने कहा था -

"अगर स्वराज्य अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का और उन्हीं के लिए होने वाला हो, तो निस्सन्देह अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी ; लेकिन अगर स्वराज्य करोड़ों भूखे मरने वालों, करोड़ों निरक्षरों, निरक्षर बहनों और दलित का हो और इन सब के लिए होने वाला हो, तो हिन्दी ही एक मात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है।"

"यह बात नहीं कि मैं भाषा के पीछे दीवाना हो गया हूं। फिर भी मैं भाषा पर इतना जोर इसलिए देता हूं कि राष्ट्रीय एकता हासिल करने का यह एक बहुत जबरदस्त साधन है। और जितना दृढ़ इसका आधार होगा, उतनी ही प्रशस्त हमारी एकता होगी।"

आज यह खेद का विषय है कि गांधी जी की इन बातों को हम भूल गये हैं। अब जब एकता नहीं लाई जा सकती,तब फिर समाजवाद इससे कैसे लाया जा सकता है ? जब अंग्रेजी भाषा को लोग समझते नहीं है, तब समाजवाद की स्थापना अंग्रेजी के द्वारा कैसे होगी, समझ में नहीं आता है। फिर जो प्रजातंत्र के चलने की बात है, वह तो

अंग्रेजी द्वारा चलना संभव नहीं हैं, क्योंकि इस देश के 98 फीसदी लोग अंग्रेजी नहीं जानते। अगर हमको प्रजातंत्र चलाना है, अगर हमारे यहां बालिग मताधिकार है, तो उसी भाषा में प्रजातंत्र चल सकता है, जो कि इस देश की भाषा हो, या इस देश की मातृभाषाएं हों। अंग्रेजी के द्वारा इस देश में प्रजातंत्र नहीं चल सकता। इसीलिए आप देखते हैं कि हमारी केन्द्रीय सरकार के कामों में, हमारी पंचवर्षीय योजनाओं में, और हमारी अन्य दूसरी बातों में, यहां की जनता की कोई दिलचस्पी नहीं है।

फिर चौथी बात रही, आर्थिक उन्नति की। यह आर्थिक उन्नति, बिना विज्ञान की उन्नति के नहीं हो सकती। और विज्ञान की उन्नति के लिए हमें वैज्ञानिक चाहिए। अभी शिक्षा-मंत्रालय के अनदानों पर बोलते हए मैंने निवेदन किया था कि हमारे एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. कोठारी इस सम्बन्ध में क्या कहते हैं। डॉ. कोठारी ने जो कहा था, इस अवसर पर मैं उसको उद्धत नहीं करना चाहता ; क्योंकि थोड़े ही दिन पहले मैं उसको कर चुका हूं। हमारे वैज्ञानिक तीव्र गति से तभी तैयार हो सकते हैं, जब उन्हें वैज्ञानिक शिक्षा हिन्दी और हमारी अन्य भारतीय भाषाओं के द्वारा मिले।

इस सम्बन्ध में भी महात्मा गांधी का मत है -

"यह कभी नहीं हो सकता कि हजारों लोग अंग्रेजी भाषा को अपना माध्यम बनायें, और यह अगर मुमकिन हो, तो भी चलने लायक तो कतई नहीं। इसकी सीधी सादी वजह यह है कि अंग्रेजी के जरिए मिलने वाला उच्च और पारिभाषिक ज्ञान का प्रसार, ऊपर के दरजेवालों में भी किसी देशी भाषा के द्वारा हो।"

जब संविधान में हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया और हिन्दी के साथ शेष तेरह भाषाओं को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया गया, तब हिन्दी के प्रति और हमारी अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति लोगों के मन में कितने उत्साह और जागृति की लहर उठी थी। लोग हिन्दी और भारतीय भाषाओं की ओर झुके थे; लेकिन जब से यह चर्चा चलने लगी कि फिर से अंग्रेजी यहां हमेशा के लिए चलने वाली है; तब से यह जोश. जो हमारी जनता में हिन्दी के राज-भाषा और सारी भारतीय भाषाओं के राष्ट्रभाषा होने पर हआ था. वह ठंडा होकर खत्म हो रहा है। फिर से लोग अंग्रेजी की ओर मुड़ रहे हैं। यह स्वाभाविक हैं। लोग अपने बच्चों को अंग्रेजी इसलिए पढ़ाते हैं कि इस गरीब देश में सरकारी नौकरियां अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों को ही मिलती हैं। छोटी से छोटी नौकरी भी बिना अंग्रेजी के ज्ञान के नहीं मिल सकती, तब अगर लोग अंग्रेजी के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, तो इसमें लोगों का दोष नहीं है, बल्कि यह हमारा दोष है।

सरकारी कामकाज में हिंदी प्रोत्साहन-योजनाएं

भारत सरकार की नीति रही है कि राजभाषा का कार्यान्वयन प्रोत्साहन एवं सद्भावना द्वारा किया जाय। अपनी नीति के अनुरूप राजभाषा हिन्दी का प्रयोग

बढ़ाने के लिए भारत सरकार द्वारा अन्य उपायों के साथ-साथ कई प्रोत्साहन योजनाएं भी चालू की गई। इन योजनाओं को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम प्रकार की योजनाएं वे योजनाएं है, जिनमें राजभाषा के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सरकारी कर्मचारियों/अधिकारियों को पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

द्वितीय प्रकार की प्रोत्साहन-योजनाओं का लाभ उन कर्मचारियों/अधिकारियों को दिया जाता है, जो हिन्दी शिक्षण-योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षण प्राप्त करने के पात्र होते हैं। ऐसे कर्मचारियों/अधिकारियों को अपना प्रशिक्षण सफलतापूर्वक प्राप्त कर लेने के उपरान्त उन्हें इस प्रोत्साहन-योजना के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं । प्रथम प्रकार की पुरस्कार-योजनाएं इस प्रकार हैं :-

राजभाषा शील्ड तथा ट्राफी प्रदान करने की योजना :

इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड और इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार :-

केन्द्रीय हिन्दी समिति की सिफारिशों के अनुसरण में, विभिन्न मंत्रालयों/विभागों, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और व्यक्तियों को सरकार की राजभाषा नीति को बढ़ावा देने के कार्य में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए पुरस्कार प्रदान करने हेतु एक योजना लागू की गई है। इस पुरस्कार का नाम "इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार" है। यह वित्त वर्ष 1986-1987 से लागू है और इसके निम्न चार मुख्य भाग हैं -

(क) भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड।

(ख) बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं के लिए इंन्दिरा गांधी राजभाषा शील्ड।

(ग) भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड।

(घ) व्यक्तियों द्वारा हिन्दी में लिखी गई मौलिक पुस्तकों के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार।

सरकारी कामकाज में मूल हिन्दी टिप्पण/आलेख के लिए प्रोत्साहन

राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन संख्या - 11/12013/1/84/रा.भा. (क-2), दिनांक 25 मई, 1984 के तहत जारी की गई प्रोत्साहन योजना के स्थान पर एक नई प्रोत्साहन-योजना प्रारम्भ की गई है जो, 1 अप्रैल 1988 से लागू है। इस योजना के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार के सभी मंत्रालय/ विभाग/सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालय अपने अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए स्वतन्त्र रूप से प्रोत्साहन योजना लागू कर सकते हैं।

इस प्रोत्साहन-योजना में सभी श्रेणियों के वे अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकते हैं जो सरकारी काम पूर्णत: या कछ हद तक मूल रूप से हिन्दी में करते हैं। इस योजना के अन्तर्गत वे अधिकारी/कर्मचारी पुरस्कार के पात्र होंगे जो "क" तथा "ख" क्षेत्रों में

वर्ष में कम से कम 20 हजार शब्द तथा "ग" क्षेत्र में वर्ष में कम से कम 10 हजार शब्द हिन्दी में लिखें । इस नई प्रोत्साहन-योजना की एक विशेषता यह है कि इसमें मूल टिप्पण व आलेखन के अलावा हिन्दी में किए गए अन्य कार्य, जिनका सत्यापन किया जा सके, जैसे; रजिस्टर में इन्दराज, सूची तैयार करना लेखा का काम आदि भी शामिल . किए जाएंगे। पहले की प्रोत्साहन-योजना के अनुसार की आशुलिपिक/ टाइपिस्ट, जो सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने सम्बन्धी किसी अन्य योजना के अन्तर्गत आते हैं, तथा हिन्दी अधिकारी और हिन्दी अनुवादक जो सामान्यत: अपना काम हिन्दी में करते हैं इस योजना में भाग लेने के पात्र नहीं होंगे।

विशिष्ट क्षेत्रों में मूल कार्य हिन्दी में करने के लिए पुरस्कार-योजना

कुछ प्रतिष्ठानों/कार्यालयों में वैज्ञानिकों, तकनीशियनों, प्रचालन कर्मचारियों द्वारा विशिष्ट प्रकार के कार्य किए जाते हैं। उनके लिए भी उचित प्रोत्साहन योजनाएं चालू किए जाने का प्रावधान है, यह योजना सम्बन्धित मंत्रालय/विभाग/उपक्रम आदि द्वारा शुरु की जानी चाहिए।

अंग्रेजी टाइपिस्टों/आशुलिपिकों को हिन्दी में भी टाइपलेखन और आशुलिपि कार्य करने के लिए प्रोत्साहन भत्ता :

मंत्रालयों/विभागों तथा उनके सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों में कार्य कर रहे उन आशुलिपिकों और टाइपिस्टों को, जो अंग्रेजी आशुलिपि/टाइप जानते हैं और अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी में भी अपना सरकारी कार्य करते हैं, क्रमश: 60/- रुपये तथा 40/- रुपये प्रतिमास विशेष भत्ता दिया जाता है। केवल वे ही अंग्रेजी टाइपिस्ट/ आशुलिपिक इस भत्ते के पात्र होंगे जो हिन्दी में औसतन 5 टिप्पणियां/प्रारूप/पत्र प्रतिदिन अथवा लगभग 300 टिप्पणियाँ/प्रारूप/पत्र प्रति तिमाही टंकित करते हैं। केवल एक या दो पंक्तियों के प्रारूप/टिप्पणियां इसमें शामिल नहीं होंगी। यह विशेष भत्ता "वेतन" नहीं माना जाएगा और इस राशि पर मंहगाई भत्ता, मकान किराया भत्ता, नगर प्रतिकर भत्ता और अन्य भत्ते देय नहीं होगे।

सबसे अच्छा कार्य करने वाली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को पुरस्कार देने की योजना।

दिल्ली के बाहर प्रमुख नगरों में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों मे हिन्दी-कार्य की प्रगति की समीक्षा करने और समस्याओं पर विचार करने के लिए ऐसे नगरों में जहां कम से कम 10 केन्द्रीय सरकार के कार्यालय हैं, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बनाई गई हैं। इन समितियों की अध्यक्षता नगर के वरिष्ठतम अधिकारी करते हैं। नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयों के प्रतिनिधि इन समितियों की बैठकों में सम्मिलित होते हैं। हिन्दी में सबसे अच्छा कार्य करने वाली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार दिए जाते हैं।

द्वितीय प्रकार की प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत हिन्दी-प्रशिक्षण (प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ), हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि के पाठ्यक्रम निजी प्रयासों से

सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने या विशेष अंक प्राप्त करने के लिए फलस्वरूप क्रमश: वैयक्तिक वेतन और नकद पुरस्कार देने का भी प्रावधान हैं।

ध्यान रहे !

कार्यालय से जारी होने वाले सभी परिपत्र, आदेश, ज्ञापन आदि द्विभाषी - अर्थात् हिंदी और अंग्रेजी में होने चाहिए।

ये सभी द्विभाषी जारी होते हैं यह देखने की जिम्मेदारी उनपर हस्ताक्षर करनेवालों की है।

कहीं से भी प्राप्त हिंदी पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिए जाने चाहिए।

जिस पत्र पर हिंदी में हस्ताक्षर हों, उसका उत्तर भी हिंदी में ही दिया जाना चाहिए

पुरस्कार योजना

अधिकारियों के लिए हिन्दी डिक्टेशन योजना

1995-96 के पुरस्कार

1. श्री गुरचरण सिंह, कमान्डेंट-128 बटा. - 500 रु.

2. श्री रत्नाकर रमन, कमान्डेंट-25 बटा. : 500 रु.

हिन्दी डिक्टेशन देकर राजभाषा कार्यान्वयन में उल्लेखनीय योगदान करने के लिए निम्नलिखित अधिकारियों को रु. 300/- की दर से मानदेय प्रदान किया गया :

1. श्री मदन गोपाल पाण्डे, भापुसे
   पुलिस उप महानिरीक्षक, केंरिपुबल, भोपाल

2. श्री तिलक राज अरोड़ा, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक ग्रुप केन्द्र, जालन्धर

3. श्री दिव्य रश्मि पाठक, कमांडेंट 40 बटालियन

4. श्री वी.पी.एल. पंवार, कमांडेंट 76 बटालियन

5. श्री विजय बिहारी शरण, कमांडेंट 23 बटालियन

6. श्री सी.जी.एस. हीरा, कमांडेंट 37 बटालियन

7. श्री बी.के. शर्मा, कमांडेंट 24 बटालियन

8. श्री एस.एस. तोमर, द्वितीय कमान अधिकारी, 76 बटालियन

मूल हिन्दी टिप्पण तथा आलेख की प्रोत्साहन योजना
1995-96

क्रम सं.	कार्यालय	पुरस्कृत कर्मचारियों की संख्या	पुरस्कार की राशि
1.	महानिदेशालय	10	2650 रु.
2.	पूर्वी सेक्टर	20	4850 रु.
3.	पश्चिमी सेक्टर	26	6350 रु.
4.	दक्षिणी सेक्टर	21	6750 रु.
5.	पूर्वोत्तर सेक्टर	35	7850 रु.
6.	पश्चिमोत्तर अंचल	39	8950 रु.
7.	बिहार सैक्टर	41	8150 रु.
8.	मध्य सैक्टर	15	3800 रु.
9.	दुकाब सैक्टर	24	5550 रु.
10.	स्पेशल सैक्टर	31	7250 रु.
11.	आंतरिक सुरक्षा अकादमी (प्रशिक्षण संस्थान, बेस अस्पताल व सिगनल ग्रुप केन्द्र/सिगनल बटा.)	20	4050 रु.
12.	उत्तरी सैक्टर	28	6700 रु.

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद प्रतियोगिताएं

1. श्री स्वर्ण सिंह, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, पिंजौर
हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता में अधिकारी पुरस्कार

2. श्री नागराज द्विवेदी, ग्रुप केन्द्र, नीमच
हिन्दी टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में अखिल भारतीय तृतीय पुरस्कार

3. श्री हवलदार सिंह, *9* बटा.
हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता में अखिल भारतीय द्वितीय पुरस्कार

4. श्री आर.पी. सिंह, ग्रुप केन्द्र शिवपुरी
हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता में अखिल भारतीय तृतीय पुरस्कार

हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता में राज्य प्रथम पुरस्कार

1. श्री दिनेश सिंह धनिक, 92 बटालियन

2. हवलदार ईश्वर सिंह, महानिदेशालय

3. श्री आनन्द सिंह रावत, ग्रुप केन्द्र पिंजोर
4. श्री गिरिजा शंकर सिंह, 104 बटालियन
5. श्री राकेश कुमार सिंह, ग्रुप केन्द्र गुवाहाटी
6. श्री मोहम्मद रऊफ अंसारी, ग्रुप केन्द्र जालंधर
7. श्री महेन्द्र सिंह छाबड़ा, ग्रुप केन्द्र पुणे
8. श्री एम. तमिल सेवली, ग्रुप केन्द्र, आवड़ी (मद्रास)
9. श्री सुरेन्द्र कुमार, ग्रुप केन्द्र, दीमापुर

बीते दिन

चक्र घूमता रहा, चक्र घूमता रहा,
“सेवा भक्ति” के गीत गुन गुनाता रहा।
दूसरों का साया बन, स्वजनों से भागता रहा,
जीवन का ऐसा दस्तूर था, मजमून था।

कितनी बार सीमाओं को हमने नापा था,
पहाड़, जंगल व तूफानों को झेला था।
धधकती आग तो सबने देखी है,
किन्तु हमने तो उस ठण्डी आग को भी देखा है,
जिसका ताप गीला होकर, और भी धधका है।
चक्र घूमता रहा, चक्र घूमता रहा
सेवा-भक्ति के गीत गुन गुनाता रहा।

कर्तव्य व जिम्मा हमेशा निभाता रहा,
अपनी हैसियत हमेशा भुलाता रहा।
गर घर में कभी तफ्तीश करता,
तो आज उजड़ा चमन मजाकिया न होता।
क्षण में बिखर जाएगा सब,
कभी ऐसा सोचा न था।

सांवेधान से बढ़कर मेरे कानून में,
कभी कोई न था।
चक्र घूमता रहा, चक्र घूमता रहा।
सेवा-भक्ति के गीत गुन गुनाता रहा।

लूट व तोड़-फोड़ के अवशेष से,
लहू की नदियों के फेनों से,
न जाने कितनी बार धराशायी हुआ था।
न मेरा दस्तूर बदला, न मजमून बदला,
जब मुकाम पर पहुंचे तो बूढ़े हो गए।
जो पोटली बांधकर लाए थे, अब किसी काम की न थी,
समय सबका होता है, अब वह समय न था।
चक्र घूमता रहा, चक्र घूमता रहा,
सेवा-भक्ति के गीत गुन गुनाता रहा।

गौरव गरिमा बुझ से गए थे,
आंखों की कोरों से भीगी हुई धुंध में
निहारती किसी की बाला तो मेरी मजबूरी।
ठण्डी आग में भुनकर गठरी बन गई थी
इन सभी निचोड़ों का जवाब एक था,
सुरक्षा से वंचित खुशबू से बंजर,
कोठरी की दहलीज से अधफटा पहने,
हमेशा वक्त का इन्तजार करती रही, करती रही।
चक्र घूमता रहा, चक्र घूमता रहा,
सेवा-भक्ति के गीत गुन गुनाता रहा।

हताश देखता रहा, समझ न आया,
वक्त मेरा था, या मैं वक्त का पीछा कर रहा था,
बस गौरव व गरिमा बड़े होते गए,
कपड़े छोटे होते गए, खिलौने बड़े होते गए।
उनके अन्दर भी दुनिया सिकुड़ती गई,

उनकी दुनेया को मेरी चादर ढक न सकी,
गौरव का कद मेरी वरदाश्त् में था,
पर पराई गरिमा तो अब बड़ी हो गई थी।
चक्र घूमता रहा, चक्र घूमता रहा,
सेवा-भक्ति के गीत गुन गुनाता रहा।

अब इसी कोठरी में धुएं की डोर उठती है,
निहारता वियोगी, स्मृतियों को जोड़ता
सुबह शाम उसे निहारता रहता है,
अब न कोई अरमान, उमंग व सपने बचे थे,
हृदय में शेष बस विवशता बची थी,
सांसों की गिलहरी कभी ऊपर कभी नीचे,
पता नहीं इस आवाजाही में वक्त कहां ठहर जाए।
चक्र घूमता रहा, चक्र घूमता रहा,
सेवा-भक्ति के गीत गुन गुनाता रहा।

एस.एन. सिंह
हिंदी अधिकारी
महानिदेशालय

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो (गृह मंत्रालय)

पुलिस से संबंधित हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकों के लिए

पं. गोविन्द वल्लभ पंत पुरस्कार योजना



पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार न्यायिक विज्ञान, पुलिस प्रशिक्षण, पुलिस प्रशासन, पुलिस अन्वेषण, अंगुलि छाप, अपराध शास्त्र तथा अन्य पुलिस से संबंधित विषयों पर हिन्दी में उत्कृष्ट मूल पुस्तकें लिखने अथवा अनुवाद करने के लिए सृजनशील लेखकों और अनुवादकों को उपयुक्त योजना के द्वारा प्रोत्साहित करता रहा है इस योजना के निम्नलिखित दो भाग हैं :

भाग-1

पुलिस से संबंधित विषयों पर हिन्दी की प्रकाशित पुस्तकों के लिए निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं :-

1. मूल पुस्तकें : 10,500-10,500/- रुपये तक के पांच पुरस्कार

2. अनूदित पुस्तकें : 4500-4500/- रुपये तक के दो पुरस्कार

भाग-2

ब्यूरो पुलिस से संबंधित किसी विषय पर पुस्तक लिखवाने के लिए प्रति वर्ष पन्द्रह हजार रुपये तक का एक पुरस्कार भी प्रदान करता है जिसके लिए इस वर्ष का विषय है - **"स्त्रियों के प्रति अपराध एवं पुलिस की भूमिका"**

इस पुरस्कार योजना में भाग लेने के लिए निम्नलिखित शर्तें हैं : -

1. इस योजना में भारत के सभी नागरिक भाग ले सकते हैं।

2. योजना के प्रथम भाग में वे सभी पुस्तकें शामिल की जाएंगी जो 31.12.95 तक प्रकाशित हुई हैं

3. पांडुलिपियां भी प्रविष्टि के रूप में भेजी जा सकती हैं परन्तु यदि विचार करने के बाद इन्हें पुरस्कार के लिए अनमोदित किया गया तो पुरस्कार राशि केवल पांडुलिपि के प्रकाशन के बाद दी जाएगी। प्रकाशन करवाने की व्यवस्था स्वयं लेखक/

अनुवादक को करनी होगी। भाग-2 के अंतर्गत निर्धारित विषय पर लिखित व पुरस्कृत पुस्तक के प्रकाशन का निर्णय मूल्यांकन समिति स्वयं करेगी।

4. पुस्तकों/पांडुलिपियों की तीन-तीन प्रतियां निर्धारित प्रपत्र के साथ इस ब्यूरो को भेजी जायेगी। ये पुस्तकें/पांडुलिपियां वापिस नहीं की जाती हैं। पांडुलिपि की तीन प्रतियां टाइप होनी चाहिए

5. पुस्तकें लगभग 100 पृष्ठों की अवश्य होनी चाहिए

6. योजना के भाग-2 के लिए आवश्यक है कि लेखक उपर्युक्त विषय पर विस्तृत रूपरेखा और अपने बायोडेटा की तीन-तीन प्रतियां भेजें

7. इस योजना में वे पुस्तकें शामिल नहीं की जाएंगी जिन पर पहले ही भारत सरकार, किसी राज्य सरकार अथवा अन्य किसी सरकारी एजेंसी द्वारा कोई पुरस्कार प्रदान किया जा चुका हो अथवा इसके लिए कोई आर्थिक सहायता प्राप्त हुई हो।

योजना के अंतर्गत प्राप्त पुस्तकें/रूपरखाओं का मूल्यांकन एक मूल्यांकन समिति द्वारा किया जाता है जिसका निर्णय अंतिम और बाध्यकर होगा। यदि समिति निर्णय लेती है कि कोई पुस्तक अपेक्षित स्तर की नहीं है तो उसे अधिकार है कि वह कोई भी पुरस्कार घोषित न करे अथवा पुस्तक के स्तर को ध्यान में रखते हुए पुरस्कार की राशि कम कर दे।

भेजने की अंतिम तिथि

उपर्युक्त संदर्भ में पुस्तक अथवा पांडुलिपि अथवा रूपरेखायें ब्यूरो के कार्यालय में 31.12.1996 तक अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

विस्तृत जानकारी के लिए लिखें/संपर्क करें :-

संपादक हिन्दी
पुलिस अनुसंधान एवम् विकास ब्यूरो
ब्लाक-11, 3/4 मंजिल, लोदी रोड,
केन्द्रीय कार्यालय परिसर, नई दिल्ली-110 003

प्रपत्र

1. पुस्तक का नाम और विषय :

2. पुस्तक का संस्करण व वर्ष :

3. लेखक/अनुवादक का नाम और पूरा पता :

4. प्रकाशक का नाम और पता :

5. रायल्टी पाने वाली संस्था अथवा व्यक्ति का नाम और पूरा पता:

6. (क) क्या यह रचना मूल अथवा अनूदित हैं ?

(ख) यह अनूदेत कृति है तो मूल पुस्तक और उसके लेखक और प्रकाशक का पूरा पता :

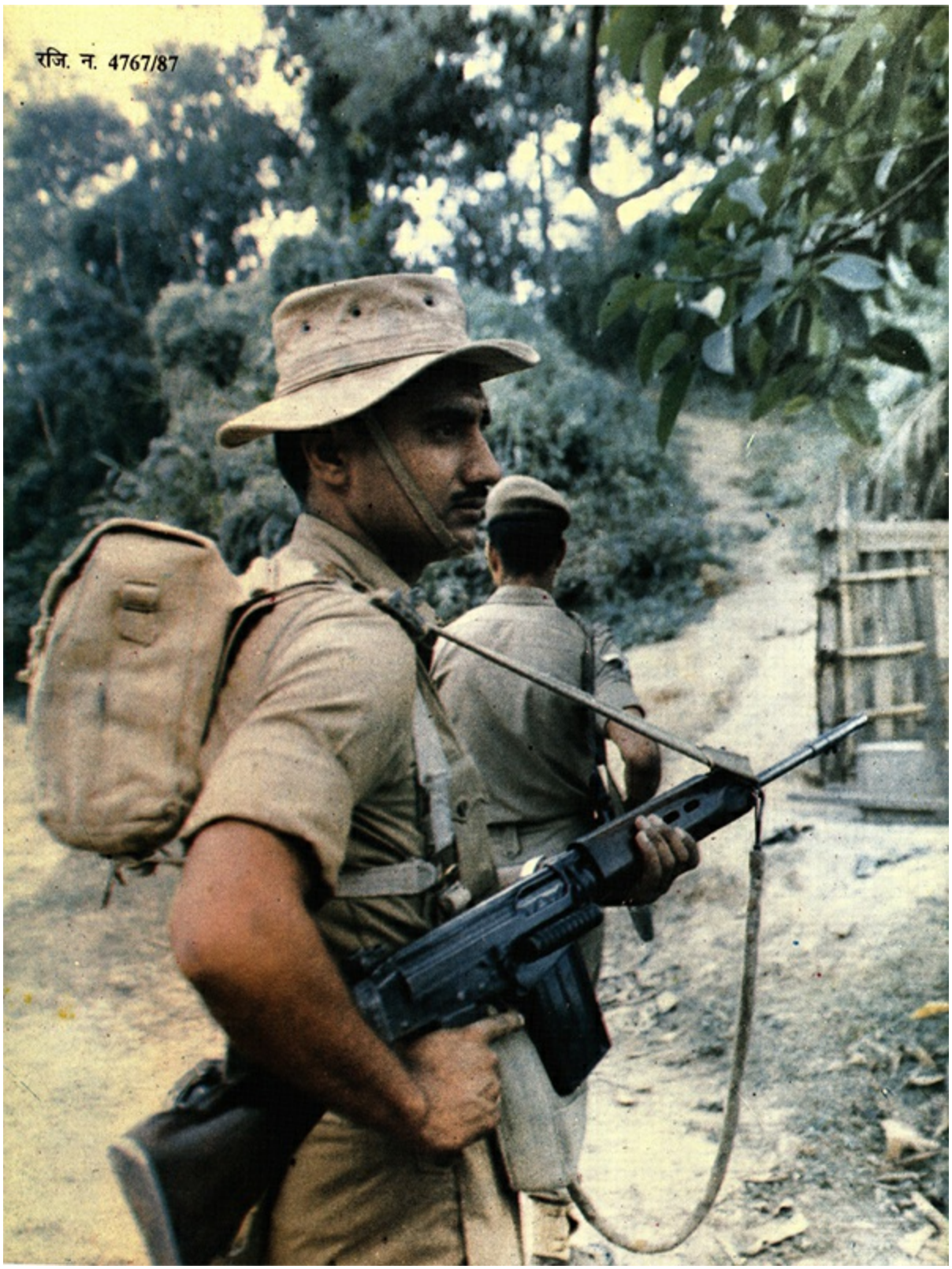
7. प्रमाणित किया जाता है कि यह अनूदित कृति है तथा इसके लिए लेखक और प्रकाशक से हिन्दी अनुवाद तथा प्रकाशित करने की अनुमति ले ली गई है।

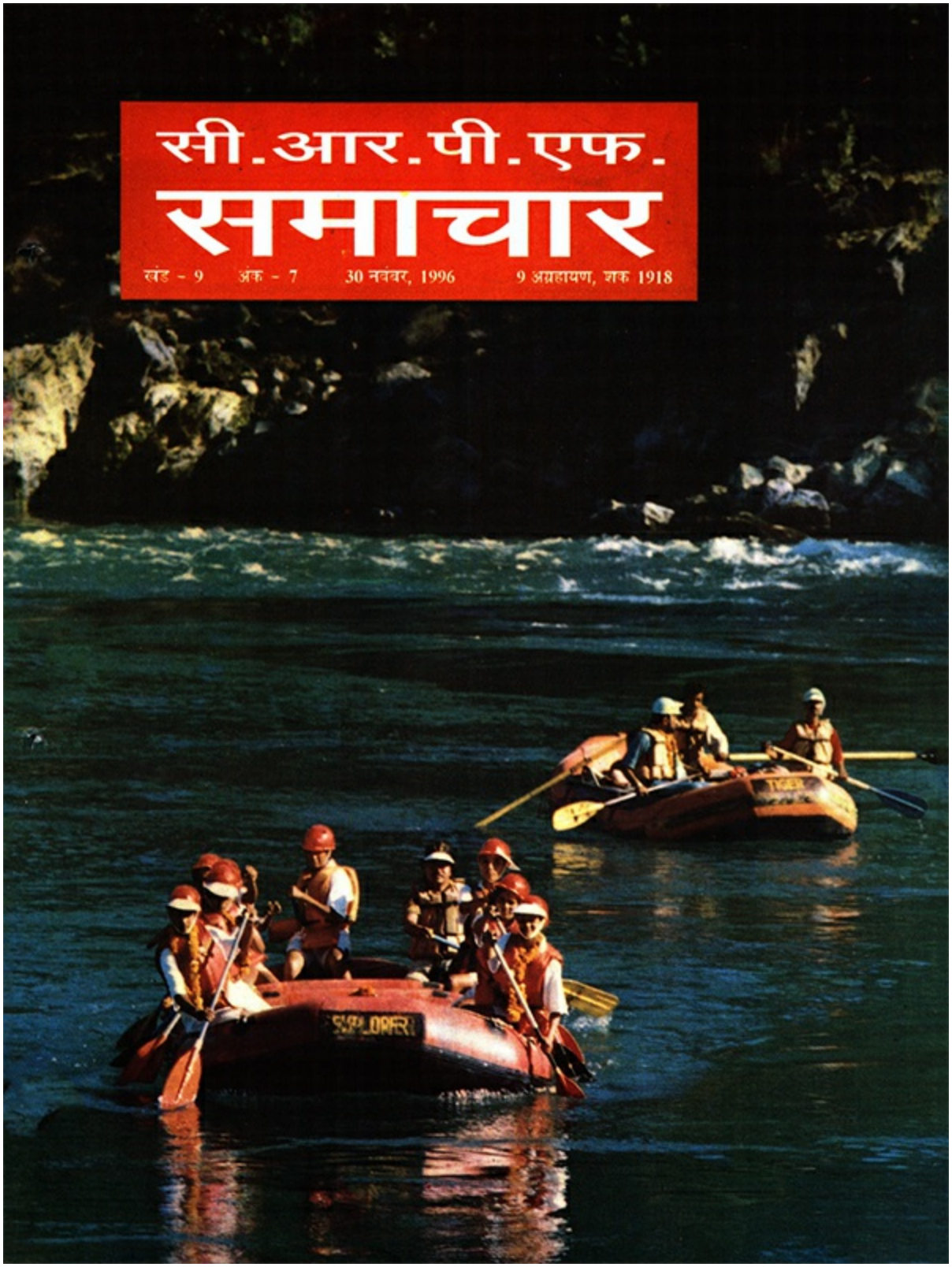
8. प्रमाणित किया जाता है कि इस पुस्तक की मूल कृति, अनुवाद तथा पांडुलिपि पर भारत सरकार, किसी राज्य सरकार अथवा किसी अन्य ऐजेंसी द्वारा परिचालित कोई पुरस्कार अथवा अन्य किसी प्रकार की काई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हुई है।

दिनांक :

हस्ताक्षर (लेखक/अनुवादक)

रजि. न. 4767/87





सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड - 9 अंक - 7 30 नवंबर, 1996 9 अग्रहायण, शक 1918



श्री मुकुंद कौशल महानिदेशक पद का कार्यभार संभालते हुए

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-9 अंक-7
30 नवंबर, 1996
9 अग्रहायण, शक 1918

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो सेक्शन
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक, के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय-सूची



सम्पादकीय
श्री कौशल बल के नए महानिदेशक
आंध्र प्रदेश में आए तूफान के दौरान के.रि.पु. बल की सहायता
उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव
के.रि.पु. बल राफ्टिंग अभियान

आर.ए.एफ. में प्रांशेक्षण का उच्च स्तर बनाए रखें - गृहमंत्री

के.रि.पु. बल चिकित्सा शिविरों में 5000 का इलाज

डेंगू के खिलाफ आर.ए.एफ. की सहायता

कविताएं

सम्पादकीय

21 अक्टूबर पुलिस स्मारक दिवस है। जो शहीद हुए हैं, जो कर्तव्य पर लड़ते हुए अपने प्राणों पर खेल गए हैं, उन्हें याद कर, उन की शहादत पर श्रद्धा से शीष नवाने का दिवस है 21 अक्टूबर।

देश की सेवा करते हुए किसी भी तरह के हादसे में अपने प्राण गंवा बैठे इन वीरों की स्मृति के सिवा और कुछ भी शेष नहीं है हमारे पास। किंतु यह स्मृति एक अमूल्य धरोहर है। यह हमें बताती है कि हमारा जो लहू हमारी धमनियों में प्राण बन कर दौड़ रहा है, इस देश की अमानत है। इतिहास गवाह है, जब जब जरूरत पड़ी है, लद्दाख में हाट स्प्रिंग्ज से ले कर श्रीलंका में जाफना तक, कच्छ में सरदार पोस्ट से लेकर उत्तर पूर्व के दुर्गम क्षेत्रों तक हमारे साथियों ने कर्तव्यपरायणता की वेदी पर अंजुरी भर भर कर रक्त दिया है। ये रक्त चाहे आतंकवाद की तपिश पर सावन के पहले मेघ की फुहार बन कर गिरा हो, या फिर मृत्यु से जूझते किसी मानव के शरीर में प्राण बन कर संचरित हुआ हो, इस का मकसद कभी व्यर्थ नहीं गया। परिणाम सामने है असम और पंजाब शांत हैं, काशमीर में पहले सी हलचल अब नहीं दिखायी देती, उत्तर पूर्व में हमारे जवानों के जांबाज कारनामे आज भी विद्रोहियों के दिल में निश्चित दहशत की लहर भर देते होंगे। जम्मू कशमीर और उत्तर पूर्व में भी पंजाब की ही तरह पूरी तरह शांति कायम होगी, हमें ऐसी आशा ही नहीं विश्वास है और इस विश्वास का आधार है हमारी प्रतिबद्धता, हमारी शपथ और हमारी गर्व भरी परंपराएं।

पुलिस स्मारक दिवस पर अपने साथियों को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि इसी प्रतिबद्धता, इसी शपथ और इन्हीं परंपराओं का पुन: स्मरण होगा। किंतु हमें एक बात और नहीं भूलनी है, जो चले गए हैं, राष्ट्र सेवा के पथ पर हम से दूर, हमेशा के लिए, वे हमारे ही परिवार का एक हिस्सा थे और अब हमें ध्यान रखना है कि सहारे के अभाव में उनके परिवार टूटें न, बिखरे न, कहीं ऐसा न हो कि परिस्थितियां और जीवन का संघर्ष उन का वही विश्वास तोड़ दे, जिन की खातिर उनके खेवनहार अपने प्राणों तक की बाजी लगा बैठे थे। इन परिवारों को संभाल लेना, हमारी, आप की, समाज और सरकार की एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है और 21 अक्टूबर हमें एक बार फिर साल दर साल इस जिम्मेदारी का अहसास भी कराता है।

श्री मुकुंद कौशल बल के नए महानिदेशक



श्री कौशल बल के महानिदेशक पद का कार्यभार संभालते हुए

श्री मुकुंद बिहारी कौशल ने 30 सितंबर, 96 को बल के महानिदेशक का पदभार संभाल लिया। श्री कौशल को यह पदभार श्री ए.वी लिड्ल ने सौंपा, जो इस दिन 33 वर्षों की शानदार सेवा के बाद सेवा निवृत्त हुए।

श्री कौशल भारतीय पुलिस सेवा के संघ शासित काडर तथा 1963 बैच के अधिकारी हैं। श्री कौशल जनवरी, 1995 में बल के परिवार में उत्तर पश्चिम जोन के अपर महानिदेशक के रूप में शामिल हुए।

अपने लम्बे कार्यकाल के दौरान श्री कौशल कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। उनकी आरंभिक नियुक्ति जनवरी, '66 से दिसंबर, '66 तक शाहदरा सर्कल, नई दिल्ली के ए.एस.पी./एस.डी.पी.ओ. पद पर रही। जनवरी, '95 में बल के परिवार में अपर महानिदेशक के रूप में शामिल होने से पूर्व श्री कौशल फरवरी, '92 से दिल्ली पुलिस में कमिशनर पद पर कार्यरत थे। जून 1983 में रेलवे पुलिस में उप महानिरीक्षक पद पर जाने से पूर्व श्री कौशल 1981-83 के दौरान दिल्ली पुलिस के एडिशनल कमिशर (प्रशासन) पद पर तथा 1980-81 में एडिशनल कमिशनर नयी दिल्ली रेंज पद पर कार्यरत थे। उन की पूर्व नियुक्तियों में डी.सी.पी. (सिक्योरिटी), एस.पी. (दक्षिण क्षेत्र) तथा एस.पी. एंटी करप्शन, दिल्ली शामिल है।

श्री कौशल को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक तथा विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है।



श्री ए.वी. लिडल को बल के महानिदेशालय में उन की सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदायी दी गयी

आंध्र प्रदेश में आए तूफान के दौरान के.रि.प. बल की सहायता

नवंबर, 1996 में आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले के तटीय क्षेत्रों में आए विनाशकारी तूफान की चपेट में आकर 667 गांव तथा 6,91,705 परिवार तबाही के कगार पर पहुंच गए। 210 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से आए इस तूफान में 985 आदमी मारे गए तथा 1772 लोग लापता हो गए। अनुमान है कि इस तूफान में करीब 1,32,340 पशु या तो मारे गए या फिर लापता हो गए। इसी तरह लगभग 4,32,715 घर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। जल एवं विद्युत सेवाएं पूरी तरह ठप्प हो गयी। एक अंदाज के मुताबिक इस तूफान से करीब 6,000 करोड़ की संपत्ति का नुकसान हुआ।

राष्ट्रीय विपत्ति की इस घड़ी में केंदीय रिजर्व पुलिस बल ने अपनी पूर्व परंपराओं का निर्वाह करते हुए व्यापक स्तर पर बचाव व राहत कार्यों में हिस्सा लिया। सिकंदराबाद स्थित आर.ए.एफ. की 99 बटालियन की दो कंपनियों को इस तबाही की सूचना मिलते ही प्रभावित क्षेत्रों की तरफ रवाना कर दिया गया। घटनास्थलों पर पहुंचते ही इन टुकड़ियों ने मलबे में फंसे मृतकों की तलाश तथा घायल तथा बेघर हो चुके लोगों के लिए बचाव एवं राहत कार्य प्रारम्भ कर दिये।

इसके साथ ही पूरे देश में फैली बल की युनिटों ने अपने अपने डाक्टरों को भी घटनास्थलों की ओर रवाना कर दिया। चिकित्सक दलों की मदद से व्यापक स्तर पर लोगों को चिकित्सा सुविधाएं मुहैया करायी गयी। इन चिकित्सा दलों ने तूफान से

प्रभावित क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर चिकित्सा कैम्पों का आयोजन किया। इन कैंपों में 25,000 से अधिक लोगों का इलाज किया गया तथा लगभग दो लाख रूपये मूल्य की दवाइयों का वितरण किया गया। बल के डाक्टरों के सक्रिय सहयोग के कारण तूफान से प्रभावित क्षेत्रों को किसी भी महामारी की चपेट में आने से बचा लिया गया। यही महीं बल के कार्मिकों ने तूफान के कारण सड़कों तथा पीने व सिंचायी के पानी के मार्ग में गिरे व्यवधानों को साफ किया तथा क्षतिग्रस्त मकानों की मरम्मत में मदद दी। आर.ए.एफ. की नौ टीमों ने 50 किमी तक सड़कों एवं नालों में फैले व्यवधानों की रिकार्ड समय में साफ कर दिया।



राहत कार्यों में व्यस्त बल के कार्मिक

उप महानिरीक्षक हैदराबाद श्री डी.के. सूरी तथा 106 बटालियन के कमांडेट श्री पी.जे. सिंह ने स्वयं सारे बचाव एवं राहत कार्यों का संचालन एवं निरीक्षण किया।

सूक्ति

आर्दश सितारों की तरह से होते हैं। हम उन तक कभी नहीं पहुंच पाते, लेकिन समुद्र के नाविकों की तरह हम उन से अपने पथ का निर्धारण किया करते हैं।

-कार्ल शुर्टस

उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव 1996



चुनावों के दौरान लखनऊ में बल के कार्मिकों की गश्त

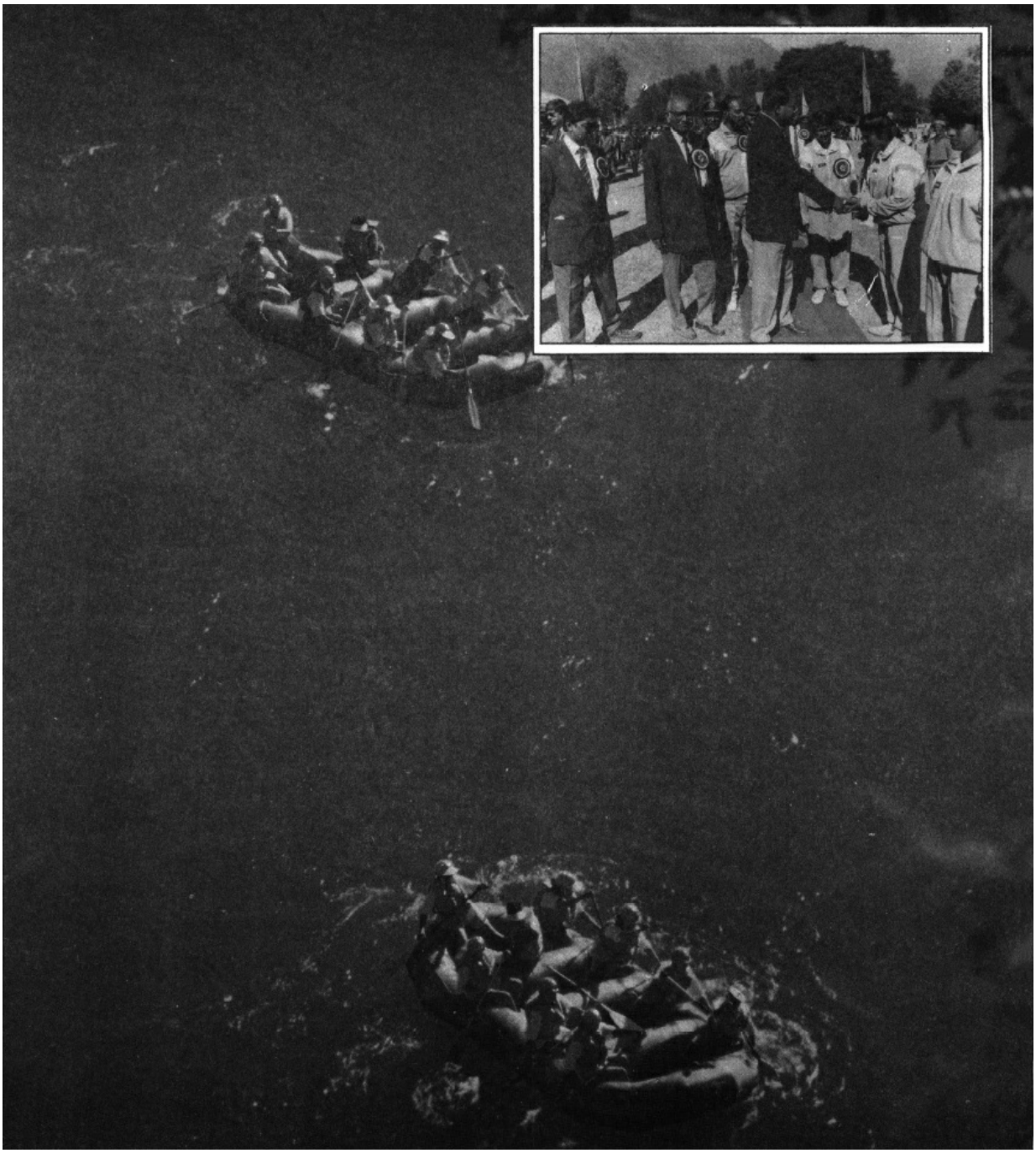
उत्तर प्रदेश राज्य में मुख्य चुनाव आयुक्त के आदेशानुसार मतदान तीन चरणों में सम्पन्न कराने का उत्तर प्रदेश सरकार ने निर्णय लिया था जिनकी तिथियां क्रमश: 30 सितंबर तथा 3 एवं 7 अक्टूबर रखी गयी। के.रि.पु. बल की 18 कम्पनियों के अतिरिक्त 91 कम्पनियां राज्य में चुनाव ड्यूटी के लिए तैनात की गयी, जिसमें से 49 कम्पनियां उत्तर पूर्वी क्षेत्र से, 12 कम्पनियां दिल्ली से तथा 30 कम्पनियां जम्मू एवं कश्मीर से चुनाव प्रक्रिया हेतु बुलाई गयी।

उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रदेश के बाहर से मंगाई गई कम्पनियों को रेलवे स्टेशन से उनके गंतव्य स्थान तक पहुँचाने के लिए वाहन एवं उनके आवास की उचित व्यवस्था करने में पूर्ण सहयोग दिया, फलस्वरूप दिनांक 30 सितंबर एवं 3 अक्टूबर को राज्य के समस्त प्रभावित जिलों में चुनाव प्रक्रिया शांतिपूर्वक सम्पन्न हो सकी। राज्य सरकार द्वारा मात्र लखनऊ जिले के पश्चिमी अति-संवेदनशील क्षेत्रों में कानून एवं व्यवस्था को सुदृढ़ एवं नियन्त्रित बनाए रखने हेतु कर्फ्यू/धारा 144 लागू की गयी, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कुल 91 कम्पनियों की जिन स्थानों पर चुनाव ड्यूटी लगायी गयी थी उन स्थानों पर किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न नहीं हुआ, उक्त में से राज्य में 23 द्रुत कार्य बल की कम्पनियां तैनात की गयी थी। के.रि.पु. बल ने ड्यूटी को कार्यकुशलता के साथ पूर्णत: अंजाम दिया जिसके परिणामस्वरूप ही शांतिपूर्वक चुनाव प्रक्रिया पूर्ण हो सकी।

के.रि.पु. बल की ओर से पूरे उत्तर प्रदेश मे चुनाव हेतु श्री डी.पी. सिन्हा भा.पु.से., महानिरीक्षक केन्द्रीय रिजर्व पुलिस मध्य क्षेत्र को नोडल आफीसर नियुक्त किया गया था जिनके तहत एक कन्ट्रोल रूम लखनऊ में खोला गया। पूरे उत्तर प्रदेश को दो जोन रामपुर तथा इलाहाबाद में विभक्त किया गया था जिसका संचालन श्री

जे.एस.नेगी डी.आइ.जी. तथा श्री. ओ.पी.एस. मालिक डी.आइ.जी. द्वारा सुचारू रूप से किया गया।

के.रि.पु. बल का राफ्टिंग अभियान



केवल महिलाओं के राफ्टिंग अभियान को महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) श्री एस.एम. कैरे ने श्रीनगर (गढ़वाल) से झंडी



अभियान दल के सदस्य

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने रोमांचक खेलों के अपने अभियान के अगले चरण में केवल महिलाओं द्वारा संचालित किए जाने वाले देश के पहले राफ्टिंग अभियान का आयोजन किया। इस अभियान की सदस्याओं को बल के महानिरीक्षक संभरण एवं प्रशिक्षण श्री एस.एम. कैरे ने 30 नवंबर, 1996 को श्रीनगर (गढ़वाल) से झंडी दिखा कर रवाना किया।

इस अभियान में श्रीनगर से ऋषिकेश तक की 105 किलोमीटर की दूरी अलकनंदा और गंगा नदियों से होते हुए पांच दिन में पूरी की गई। अभियान दल में दो राफ्ट शामिल हैं। प्रत्येक राफ्ट में आठ महिला सदस्य सवार थे।

अभियान के प्रथम चरण में 30 नवम्बर, 1996 को अभियान दल ने श्रीनगर से बागवान तक की 17 किलोमीटर की दूरी तय की। दूसरे चरण में 1 दिसम्बर, 1996 को बागवान से देवप्रयाग तक की 18 किलोमीटर की दूरी तय की गई तथा तीसरे चरण में वे कुदियाला पहुंचे। कुदियाला से शिवपुरी तक की 20 किलोमीटर की दूरी 3 दिसंबर, 96 को पूरी हुई तथा अभियान के अंतिम दिन वे शिवपुरी से 18 किलोमीटर की दूरी तय कर ऋषिकेश पहुंचे।

अभियान दल को रवाना करने से पूर्व उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए श्री कैरे ने बताया कि पिछले तीन सालों में के.रि.पु. बल द्वारा आयोजित यह चौथा रोमांचक अभियान है। के.रि.पु. बल में इन रोमांचके अभियानों की शुरूआत 1994 में सफलतापूर्वक संपन्न हुए अभियान गंगा सागर से हुयी। इसके बाद के.रि.पु. बल की

पर्वतारोहण अभियान की टीम ने गढ़वाल हिमालय की जोगिन-1 और जोगिन-3 पर्वत चोटियों पर विजय प्राप्त की। साथ ही सेना द्वारा आयोजित हिमेक्स कार रैली में भी बल की टीम ने भाग लिया। इस राफ्टिंग अभियान के आयोजन का उद्देश्य बल के सदस्यों में जोखिम लेने की भावना को तेज करना तथा आने वाली नयी चुनौतियों का सामना करने के लिए उन्हें तैयार करना है।

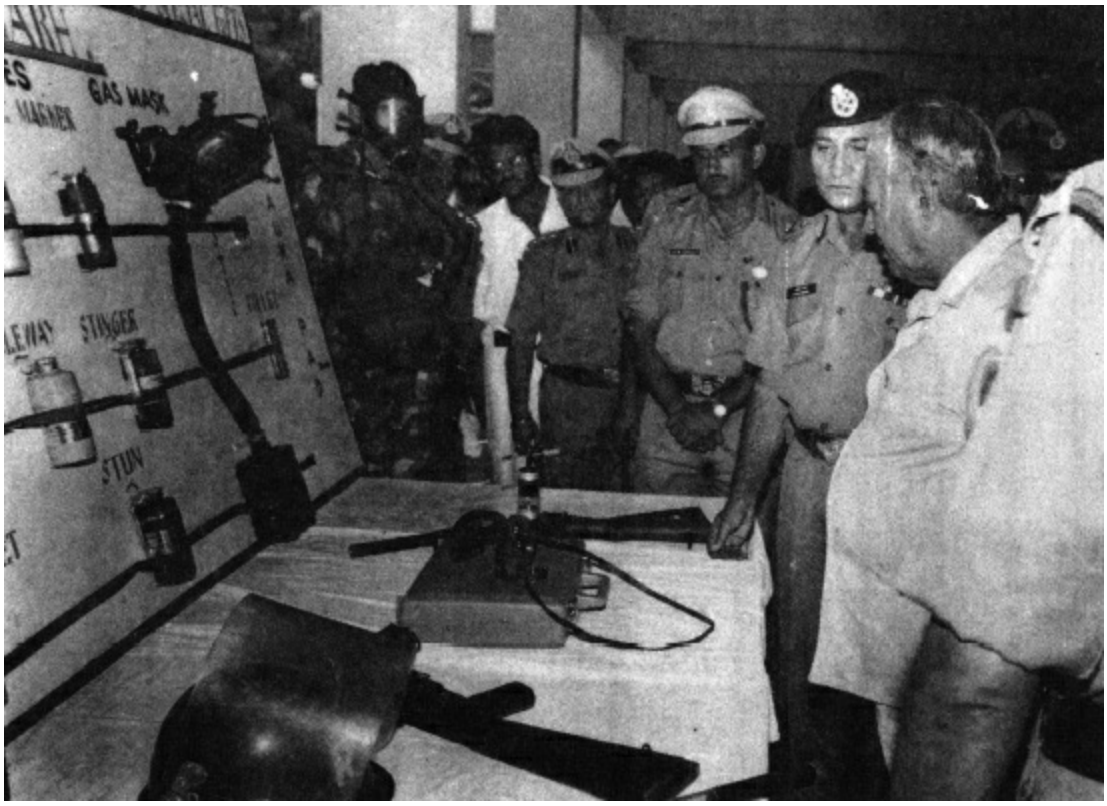
के.रि.पु. बल केंद्रीय सेक्टर के महानिरीक्षक श्री तिलक काक ने अभियान के शुभारम्भ के अवसर पर मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए इस पांच दिवसीय अभियान के विषय में विस्तार से बताया।

आर.ए.एफ. में प्रशिक्षण के उच्च स्तर को बनाए रखे - इंद्रजीत गुप्त



सम्मान गारद का निरीक्षण करते हुए गृह मंत्री श्री इंद्रजीत गुप्त

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री इंद्रजीत गुप्त ने साम्प्रदायिक शांति को बनाए रखने तथा साम्प्रदायिक स्थितियों एवं दंगों पर काबू पाने के लिए आर.ए.एफ. में अधिकारियों एवं जवानों के प्रशिक्षण के उच्च स्तर को बनाए रखने का आह्वान किया है।



आर.ए.एफ. द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों का निरीक्षण करते हुए गृह मंत्री

गृह मंत्री 26 अक्टूबर, 96 को ग्रुप केंद्र गांधी नगर में रैपिड एक्शन फोर्स की चौथी वर्षगांठ के अवसर पर अधिकारियों एवं जवानों को संबोधित करते हुए बोल रहे थे। अपने संक्षिप्त कार्यकाल के दौरान ही अभूतपूर्व ख्याति अर्जित करने पर आर.ए.एफ. को बधाई देते हुए श्री इंद्रजीत गुप्त ने कहा कि अपनी निष्पक्ष छवि के कारण आर.ए.एफ. ने अल्पसंख्यकों, कमजोर तबकों तथा महिलाओं का समान रूप में विश्वास अर्जित किया है। प्राकृतिक आपदाओं तथा दुर्घटनाओं आदि के दौरान आर.ए.एफ. द्वारा दी जाने वाली मानवीय तथा अन्य सामाजिक सेवाओं का जिक्र करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि इससे समाज में पुलिस और जनता के बीच की दूरी कम होगी, जिससे समाजिक स्थितियों में सुखद बदलाव आएगा। उन्होंने कहा कि कुछ राज्य आर.ए.एफ. की तर्ज पर खुद अपने दंगा विरोधी पुलिस बल खड़े कर रहे हैं। आर.ए.एफ. पहले ही कलकत्ता, गोवा, कर्नाटक तथा केरल में ऐसे पुलिस दलों को प्रशिक्षण प्रदान कर चुका है।

केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बलों के कार्मिकों तथा उनके परिवारों की समस्याओं का जिक्र करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि उनकी ओर समुचित ध्यान दिया जाएगा तथा आने वाले कुछ ही महीनों में सरकार इस संबंध में कुछ कदम उठाएगी।

इस मौके पर गृह मंत्री ने आर.ए.एफ. तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 28 कार्मिकों को राष्ट्रपति के सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक भी प्रदान किए। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिकों में डा. दुहेरी सहित नौ अधिकारी, 10 अधीनस्थ अधिकारी

तथा 9 अन्य कार्मिक शामिल हैं।



बल के एक कार्मिक को शौर्यवीरता का पुलिस पदक प्रदान करते हुए गृह मंत्री

इससे पूर्व बल के महानिदेशक श्री मुकुंद बिहारी कौशल ने गृह मंत्री का स्वागत करते हुए उनसे आग्रह किया कि वो उन राज्य सरकारों से आर.ए.एफ. की 5 बटालियनों को जमीन दिलाने का प्रयास करें जहां इन बटालियनों के पास अपनी जमीन नहीं है तथा वे टेंटों में रह रही हैं। उन्होंने गृह मंत्री से आग्रह किया कि आर.ए.एफ. द्वारा गावों को अंगीकृत कर उनके विकास, प्राकृतिक आपदाओं तथा अन्य आपदाओं जैसे प्लेग, डेंगू आदि के समय लोगों को चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराने के लिए लगाए जाने वाले कैम्पों आदि के लिए अतिरिक्त धन राशि की व्यवस्था कराने की कृपा करें।

इससे पूर्व बल के महानिदेशक श्री कौशल ने गांधी नगर टाउन हाल में गृह मंत्री की आगवानी की। आर.ए.एफ. के कार्मिकों ने गृह मंत्री के सम्मान में गार्ड आफ आनर भी दिया। आर.ए.एफ. के महिला व पुरूष कार्मिकों ने इस अवसर पर कराटे का भी प्रदर्शन किया।



इस मौके पर आर.ए.एफ. कार्मिकों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए

अन्त में आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री ए.ए. सिद्दीकी ने अथितियों के प्रति आभार प्रकट किया।

के.रि.पु. बल चिकित्सा शिविरों में 5000 का इलाज



के.रि.पु. बल द्वारा लगाए गए चिकित्सा शिविर का अवलोकन करते हुए बल के महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल

दिल्ली के विभिन्न इलाकों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा अक्टूबर के पहले हफ्ते में लगाए गए तीन चिकित्सा कैंपों में तीन दिनों में 5000 से अधिक रोगियों को नि:शुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी गई। इन शिविरों का आयोजन रेपिड एक्शन फोर्स की 102, 103 तथा 106 बटालियनों ने किया। कैंपों का आयोजन डेंग बखार से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों गोकुलपुरी, सुल्तानपुरी तथा महरौली में किया गया। बल के महानिदेशक एम.बी. कौशल ने इन कैंपों का दौरा कर रोगियों से बातचीत की।

कैंपो में आने वाले 5000 रोगियों में स्त्री पुरूष व बच्चे सभी शामिल थे। 5 अक्टूबर, 1996 से शुरू हुए इन कैंपों में आने वाले मरीजों को मुफ्त दवा और इलाज के अतिरिक्त डेंगू तथा अन्य बिमारियों के बचाव के तरीकों से भी अवगत कराया गया।

गोकुलपुरी में सर्वाधिक 2700 मरीजों को दवाएं दी गयी, जबकि सुलतानपुरी कैंप में 1200 तथा महरौली कैंप में 1000 से अधिक मरीज आए।

इन कैंपों में आने वाले मरीजों को एलोपैथिक तथा होम्योपैथिक दोनों ही तरह की पद्धतियों की उपचार सुविधाएं उपलब्ध करायी गयी। प्रत्येक कैंप में एक पुरूष व एक महिला एलोपैथिक डाक्टर के साथ चार होम्योपैथिक डाक्टर भी उपलब्ध थे। इन तीनों दिन ये कैंप जनता के लिए 8.30 बजे सुबह से शाम 5.30 बजे तक खुले थे जबकि आपातकालीन सेवाएं 24 घण्टे उपलब्ध थीं।

होम्योपैथी से संबंधित उपचार एवं दवाओं की व्यवस्था दिल्ली होम्यो मेडिकल एसोसिएशन के सहयोग से की गयी थी।

इन शिविरों के शुरू होने से पहले आर.ए.एफ. के जवानों ने इन शिविरों के आस-पास के स्थलों, सड़कों तथा गलियों की सफायी कर कीट नाशक दवाओं का छिड़काव किया। कैंप में आने वाले लोगों को रुके पानी को साफ करने तथा डेंगू से बचने के उपायों का इस्तेमाल करने के लिए कहा गया।

डेंगू के खिलाफ आर.ए.एफ. की सहायता

दिल्ली में फैली डेंगू महामारी के दौरान उसकी रोकथाम व नियंत्रण के लिये रैपिड ऐक्शन फोर्स (आर.ए.एफ.) ने स्थानीय प्रशासन को व्यापक सहायता उपलब्ध कराई। माह अक्टूबर, 1996 में आर.ए.एफ. ने स्थानीय प्रशासन को प्रभावित इलाकों के मच्छर मारने में सहायता के लिए छ: डी.सी.एम. टोएटा गाड़ियां तथा हर गाड़ी पर चार से पांच तक कार्मिक उपलब्ध कराये।

18 अक्टूबर, 96 को दिल्ली के छ: इलाकों कड़कड़डूमा, रोहिणी सैक्टर पांच, राजा गार्डन, सिविल लाइन (राजपुरा रोड़), ग्रीन पार्क, जल विहार के कुछ इलाकों में डेंगू मच्छर मारने का धुआं छोड़ा गया और इस महामारी से बचाव के बारे में पोस्टर लगाये, पर्चे बांटे और माईक पर महामारी से बचाव के तरीके बताये गये।

इसी प्रकार 17 अक्टूबर, 96 को आर.ए.एफ की गाड़ियों की सहायता से रोहिणी, सिविल लाइन, राजा गार्डन और जल विहार के कुछ मुहल्लों में डेंगू से बचाव के पर्चे बांटे गये, पोस्टर लगाये गये और माईक पर सावधानियों की जानकारी दी गई। ग्रीन पार्क के कुछ प्रभावित मुहल्लों में डी.डी.टी. और डेंगू विरोधी तेल का छिड़काव किया गया और मच्छर मारने का धुआं छोड़ा गया।

जोखिम निधि लाभ

माह अक्टूबर, 1996 में केन्द्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के 29 मामलों में कुल 29,24,875 रूपये देने स्वीकृत किए गए। इसी प्रकार अक्षमता के सात मामलों में कुल 78,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए।

इसी प्रकार जोखिम निधि "बी" स्पेशल कल्याण योजना के अधीन इस के 17 सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 5,95,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए।

माह अक्टूबर, 1996 में मृत्यु को प्राप्त हुए बल के कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अक्टूबर, 1996 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल गोविंद गोस्वामी (ग्रुप केंद्र मुजफ्फरपुर), हैड कांस्टेबल ए.बी. सिंह (99 बटा.), कांस्टेबल दिलीप नादगिरी (26 बटा.), कांस्टेबल सी. सैमुल (74 बटा.), ला.ना.

पांडुरंगप्पा (97 बटा.), ला.ना. रिवेन सिदाजा (ग्रुप केंद्र गांधी नगर), उपनिरीक्षक हुकुम चन्द (ग्रुप केन्द्र गाँधी नगर), कांस्टेबल सुरजीत थापा (9 बटा.), सहायक कमांडेट वी.बी.एस. रावत (नेपा प्रतिनियुक्ति पर), हैड कांस्टेबल माईपाल (67 बटा.), कांस्टेबल बांचा लाल (133 बटा.), इंस्पेक्टर (एम) इल्कम बरम (2 सिंग.), नायक केदारनाथ पांडे (5 बटा.), कांस्टेबल वेंकट जवाड़ी (29 बटा.), नायक/टेलर कमल गुरंग (ग्रुप केंद्र जमशेदपुर), सब इंस्पेक्टर जय प्रकाश शर्मा (132 बटा.), नायक हेमराज (61 बटा.), हैड कांस्टेबल अजित सिंह (38 बटा.), एस.एम. (ओ.एस.) एस.सी. मंडल (ग्रुप केंद्र जमशेदपुर), महिला कांस्टेबल लक्ष्मी कांता (88 बटा.),कांस्टेबल संजीव गांधी (113 बटा.), नायक/रे.आ. जी.एस. सैकिया (1 सिग.) तथा स.उ.नि. केवल किशन (ग्रुप केन्द्र नयी दिल्ली), इन के अतिरिक्त देर से मिले समाचार के अनुसार माह सितंबर, 1996 में आर.टी.सी-4 के सफाई कर्मचारी विष्णु कुमार तथा 46 बटा. के नायक पन्ना लाल भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

ज्ञान गंगा

लोगों का गुण व अवगुण ही देखते रहेंगे तो उनसे स्नेह करने का समय ही नहीं रह जायेगा।

-मदर टेरेसा

सफलता वह सीढ़ी है, जिस पर आप जेब में हाथ डालकर नहीं चढ़ सकते।

-एक अमरीकी कहावत

आप अपने लिये जिसे नापसंद करते हैं उसे मेरे लिये भी पसंद मत करो।

-स्पेनिश कहावत

हमारे हास्य में हमारी विजय भावना निहित होती है। जब जब हमारी श्रेष्ठता स्थापित होती है, तब तब हमें हंसी आती

-लैहंट

छटाक भर वैज्ञानिक विचार मन भर अज्ञानपूर्ण उत्साह से बढ़कर हैं।

-हैवर्ड

विचार की बात को न तो अति निर्धनता सुन सकती है, न अति अमीरी।

-फिल्डिंग

-संकलन

इंस्पेक्टर जयवीर सिंह-महानिदेशालय

मानवाधिकार

मानव से मानव तो मांगता है प्यार
मूल तत्व जीवन का ही है वही सार।
मानवीय मूल्यों की रक्षा ही होगी
मानव से मानव को अनुपम उपहार।

मां से मिली ममता, पिता से मिला पोषण
बहनों का स्नेह और बन्धु का उद्बोधन।
करूणा, दया, ममता है जीवन संयोजन ।
इन मानवीय मूल्यों का आश्रित है जीवन ।

नारी का रूप है जितना मनभावन
है अयन उस नर उतना ही पावन।
प्रकृति की रचना ही है नारायण
क्या कभी यह देगा क्रन्दन और रोदन।

जिन आदर्श मूल्यों से पूरित है मानव
फिर किस कारण बनता है वह दानव।
आज इन्हीं प्रश्नों से उलझा है मानव
कि किस प्रकार मानव कभी न बने दानव।

काम, क्रोध, लोभ, मोह है दानवाचार
इस पर ही आश्रित है आधुनिक जनाधार।
फिर कैसे पायेगा मानव, मानव का प्यार
वहीं समाप्त होता है मौलिक मानवाधार ।

हे तथाकथित उन्नत आधुनिक मानव
काम, क्रोध, लोभ, मोह ही है तब दानव।
इनको तुम त्यागो तभी रहोगे मानव
नही तो तेरा दानव कभी न बने मानव।

तेरी आधुनिकता करेगी तेरा संहार
प्राकृतिक मूल्यों को बना तुम कंठहार।
सुखी होगा विश्व जब पायेगा मूलाधार
यही होगा साश्वत नि:श्छल मानवाधिकार।

त्रिभुवन त्रिवेदी - कमाण्डेण्ट

स्टाफ आधिकारी पुलिस उप महानिरीक्षक
के.रि.पु. बल, कोहिमा, कार्यालय

आर.ए.एफ. के वीर जवान

जन मानस के रक्षक हैं, आर.ए.एफ. के वीर जवान,
मानव के प्रति दिव्य प्रेम है, नहीं रखते मन में अभिमान।
अतुल शक्ति है इनके तन में, सेवा भक्ति महान,
सन्देश प्यार का देते हैं, आर.ए. एफ. के ये वीर जवान।
हिन्दु मुस्लिम, सिक्ख ईसाई, हैं सब भारत मां की संतान,
जिनका मजहब मानवता है, चारों धर्मों के इंसान।
सौम्य सभ्यता के प्रतीक हैं, आर.ए.एफ. के ये वीर जवान।
आन के रक्षक ये हैं, मानवता का रखते हर पल ध्यान,
कबूतर जिसका है निशान, नीला ध्वज जिसकी पहचान।
करें न्योछावर अपने तन को, आर.ए.एफ. के ये वीर जवान।
राग, द्वेष और ऊंच-नीच का, नहीं ये रखते ध्यान,
बड़े चाव से मिल कर करते हैं, भोजन और जलपान।
सत्य अहिंसा के पथ पर चलते हैं, आर.ए.एफ. के ये वीर जवान,
उत्तर-दक्षिण पूरब-पश्चिम होता है, जिनका गुणगान,
इसलिए आज चतुर्दिक गूंज रहा है, आर.ए.एफ का नाम,
जन मानस के रक्षक हैं, आर.ए.एफ के ये वीर जवान।"

-कांस्टेबल नयन कमल द्विवेदी
101 आर.ए.एफ. बटालियन



राजधानी में के.रि.पु. बल द्वारा डेंगू के लिए लगाए गए कैंपो में भारी तादाद में लोग आए

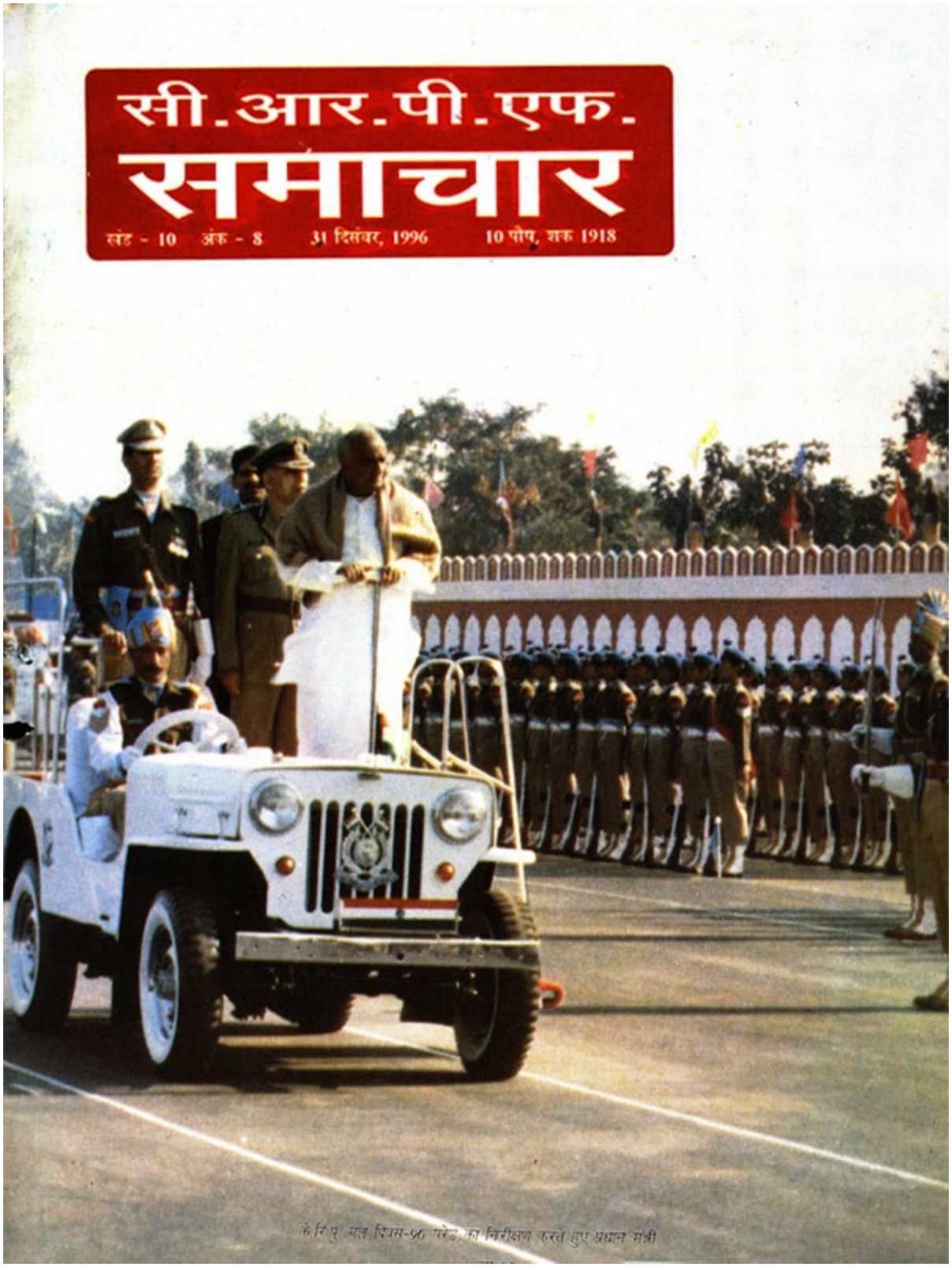
रजि. न. 4767/87



आर.ए.एफ. की वर्षगांठ के अवसर पर बल के अधिकारियों से परिचय प्राप्त करते हुए गृह मंत्री श्री इंद्रजीत गुप्त

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 10 अंक - 8 31 दिसंबर, 1996 10 पौष, शक 1918



के.रि.पु. बल दिवस-96 परेड का निरीक्षण करते हुए प्रधान मंत्री



के.रि.पु. बल वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन मे केंद्रीय गृह सचिव को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए महानिदेशक

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-10 अंक-8
31 दिसंबर, 1996
10 पौष, शक 1918

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो सेक्शन के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय-सूची



सम्पादकीय

के.रि.पु. बल बैंडो का प्रदर्शन

के.रि.पु. बल दिवस ’96

के.रि.पु. बल अधिकारियों का सम्मेलन

ओलंपिक में महिला वेट लिफ्टिंग शामिल -कुंजारानी प्रबल दावेदार

पल्स पोलियो अभियान में के.रि.पु. बल की सहायता

पल्स पोलियो का देशव्यापी अभियान

पाताराम - एक जीवंत मिसाल

पंजाब के सबक

सम्पादकीय

जाता हुआ वर्ष हमेशा अपने पीछे कुछ ऐसे निशान छोड़ जाता हैं, जो या तो आने वाले वर्षों के लिए एक सबक होते हैं या फिर प्रेरणा स्रोत। 1996 भी इसका अपवाद नहीं। परंपरा रही है कि जाते वर्ष के अंतिम छोर पर खड़े हो कर हम अपने पिछले पूरे साल पर एक नजर डालें, अपने साल भर के काम का आकलन करें और फिर उसके प्रकाश में आगामी वर्ष में प्रवेश करें।

दिसंबर का महीना हमारी वर्षगांठ का महिना भी हैं। इस वर्ष हम अपनी 57वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। यह मात्र एक वार्षिक उत्सव नहीं, संकल्प दिवस है। जो अब तक शहीद हुए हैं, उनकी अमर शहादत का स्मरण कर, उनसे प्रेरणा लेकर, उनके द्वारा स्थापित परंपरा को ऊंचा रखने और आगे ले जाने का संकल्प दोहराने का दिवस।

इस वर्ष 30 नवंबर, '96 तक मिली रिपोर्टों के अनुसार हमने देश भर में 889 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा इस दौरान हुयी मुठभेड़ों में 73 आतंकवादी मारे गए। बल के जवानों ने 520 घातक हथियार तथा 13738 गोली बारूद बरामद किया। इस दौरान कर्त्तव्य पर लड़ते हुये बल के 47 कार्मिक वीरगति को प्राप्त हुए तथा 177 गंभीर रूप से घायल। इस वर्ष बल के एक कार्मिक को राष्ट्रपति का शौर्यवीरता का पुलिस पदक, तीन को शौर्यवीरता के पुलिस पदक, नौ को विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक तथा 57 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किये गए। यह एक बड़ी उपलब्धि है।

पिछले एक वर्ष में हमारे जो साथी हमसे बिछुड़ गए हैं, उनकी याद में नम आंखों से, हमने जो उपलब्धियां हासिल की हैं उन पर गर्व से सीना ताने हुए, और हमारी कुर्बानियों के एवज में हमें जो तमगे मिले हैं-उस सम्मान से सिर उठाए हुए हम 1997 में प्रवेश कर रहे हैं। ईश्वरीय आलोक हमारा पथ प्रशस्त करे, हमें हमारे मकसद में कामयाबी हासिल हो, देश में अमन व शांति कायम हो, सेवा और शान्ति के अपने उद्देश्य वाक्य पर हम प्राणोपन्न से डटे रहें, नव वर्ष की पूर्व बेला पर हमारी यही मंगल कामना हैं।

के.रि.पु. बल बैंडों ने अपना प्रदर्शन किया

57वें के.रि.पु. बल दिवस से सबंधित समारोहों की शुरूआत करते हुए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के ब्रास और पाइप बैंडों ने 24 दिसंबर 1996 को 3 से 5 बजे तक इंडिया गेट और केंद्रीय पार्क क्नाट प्लेस में अपना प्रदर्शन किया।

56 सदस्यों वाले बैंड दल ने इन दोनों स्थानों पर अपने बैंड मास्टरों के नेतृत्व में कई धुनें बजायी। केंद्रीय पार्क क्नाट प्लेस में बैंड वादकों का नेतृत्व इंस्पेक्टर

राजकुमार कर रहे थे, जब कि इंडेया गेट पर बैंड का नेतृत्व इंस्पेक्टर पुरूषोत्तम राम ने किया।



क्नाट प्लेस में प्रदर्शन करता हुआ के.रि.पु. बैंड

प्रत्येक बैंड दल में 35 ब्रास बैंड वादक तथा 21 पाइप वादक थे। उन्होंने लोकप्रिय भारतीय तथा अंग्रेजी गानों की कुल मिला कर 20 धुनें बजायीं।

इंडिया गेट पर बैंड टीम का नेतृत्व कर रहे इंस्पेक्टर पुरूषोत्तम राम को पिछले 36 सालों से लगातार वार्षिक दिवस पर बैंड वादन का गौरव प्राप्त है। के.रि.पु. बल में ब्रास बैंड की स्थापना 1961 में तथा पाइप बैंड की स्थापना 1952 में की गयी थी।

इसी प्रकार के.रि.पु. बल बैंड की दो टुकड़ियों ने 26 दिसंबर, 96 को अशोक विहार तथा महरौली में बैंड वादन किया।



इंडिया गेट पर के.रि.पु. बल बैंड का प्रदर्शन

के.रि पु. बल दिवस-'96

प्रधानमंत्री द्वारा बल की भूमिका की प्रशंसा

प्रधान मंत्री श्री एच.डी.देवगौड़ा ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों की कर्तव्य निष्ठा और उनकी भूमिका की प्रशंसा की है।

प्रधान मंत्री 57वें के.रि.पु. बल दिवस के अवसर पर 28 दिसंबर, 96 को बल के ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में आयोजित परेड़ के अवसर पर जवानों और अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए बोल रहे थे। समारोह का आयोजन बल की 57वीं वर्षगांठ के अवसर पर किया गया। प्रधानमंत्री ने कहा कि के.रि.पु. बल केंद्रीय पुलिस बलों में सर्वाधिक बहुआयामीय फोर्स है तथा इसमें एक भूमिका से दूसरी भूमिका में तुरन्त जाने की अद्भुत क्षमता है। इसकी उपस्थिति मात्र से जनता तथा राज्य सरकारों में एक आश्वस्ति की भावना पैदा हो जाती है।



बल के वरिष्ठ अधिकारियों से परिचय प्राप्त करते हुए प्रधान मंत्री

श्री देवगौड़ा ने कहा कि अपनी भारी व्यस्तताओं के बावजूद इस बल ने खेलों के क्षेत्र में भारी योगदान दिया है। उन्होंने इस बात के प्रति संतोष प्रकट किया कि मानव अधिकारों की जानकारी को के.रि.पु. बल की ट्रेनिंग में शामिल कर लिया गया है। उन्होंने शानदार परेड के लिए बल के कार्मिकों को बधाई भी दी। प्रधानमंत्री ने इस अवसर बल की आवासीय जरूरतों (सेपेरेटेड फेमिली एकामोडेशन) के लिए 25 करोड़ रूपये की व्यवस्था करने की भी घोषणा की।

प्रधान मंत्री ने के.रि.पु. बल की तैनाती से संबंधित दिक्कतों को दूर किए जाने की जरूरतों पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमारे विभिन्नताओं से भरे समाज में हालांकि भिन्न भिन्न ड्यूटियों के लिए के.रि.पु. बल की भारी मांग रहती है, लेकिन फिर भी हमें इसकी तैनाती को कम करने की जरूरत है, ताकि इसके सदस्यों को आराम तथा प्रशिक्षण के लिए समय मिल सके।



परेड का निरीक्षण करते हुए प्रधान मंत्री

श्री देवगौड़ा ने कहा कि अत्यधिक गतिशीलता के कारण पैदा हुयी बल की गंभीर समस्याओं से वह अवगत हैं। इस समस्या पर प्राथमिकता के आधार पर विचार किया जाएगा ताकि इसका सुचारू ढंग से निराकरण किया जा सके। उन्होंने कहा कि सरकार बल के कार्मिकों के कल्याण के लिए दृढ़ संकल्प है।

प्रधान मंत्री ने कहा कि सरकार बल को उसकी आपरेशनल क्षमता बढ़ाने के लिए हर प्रकार की सुविधा प्रदान करेगी। बल के जो कार्मिक कर्तव्य पर लड़ते हुए शहीद हो गए है या जो विकलांग हो गये हैं उनके परिवारों के कल्याण के लिए प्रधान मंत्री ने के.रि.पु. बल कल्याण कोष में राष्ट्रीय सुरक्षा फंड से एक करोड़ रूपये का अनुदान प्रदान करने की घोषणा की।



पदक विजेताओं के साथ प्रधान मंत्री, गृह सचिव व महानिदेशक के.रि.पु. बल

इस अवसर पर प्रधान मंत्री ने बल के 13 कार्मिकों को शौर्यवीरता तथा विशिष्ट सेवाओं के राष्ट्रपति के पुलिस पदकों से सम्मानित किया। नायक शिव प्रकाश चौबे को शौर्यवीरता के राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया, जबकि तीन कार्मिकों को शौर्यवीरता का पुलिस पदक तथा नौ कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान किया गया। उन्होंने अद्वितीय प्रदर्शन के लिए बटालियनों को भी ट्राफियां प्रदान की। 101 आर.ए.एफ. बटालियन को ओवरआल बैस्ट बटालियन ट्राफी प्रदान की गयी। 27 बटालियन को जम्मू कशमीर स्थित सर्वश्रेष्ठ बटालियन तथा 114 बटालियन को उत्तरपूर्व में स्थित सर्वश्रेष्ठ बटालियन की ट्राफी प्रदान की गयी। 104 आर.ए.एफ. बटालियन को सर्वश्रेष्ठ कोस्ट एफेक्टिव तथा वित्तीय अनुशासन वाली बटालियन की ट्राफी प्रदान की गयी। ग्रुप केन्द्र बनतलाब, जम्मू को सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केंद्र की ट्राफी प्रदान की गयी।

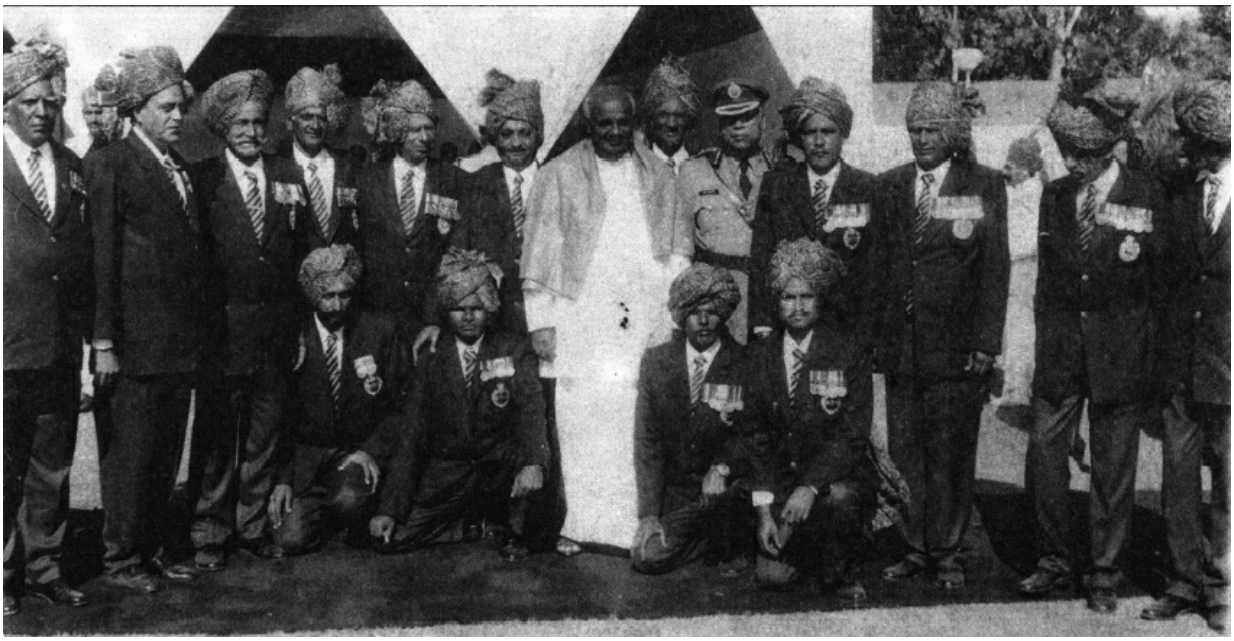


के.रि.पु. बल दिवस-*96* के अवसर पर एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए महानिदेशक

इससे पूर्व प्रधान मंत्री का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक श्री मुकुंद बिहारी कौशल ने कहा कि गतिशीलता और ग्रहणशीलता के.रि.पु. बल की दो सबसे बड़ी विशेषताएं हैं। उन्होंने बताया कि गत छ: वर्षों में के.रि.पु. बल के साथ हुयी विभिन्न मुठभेड़ों में 1700 देशद्रोही तत्व मारे गए तथा 10,244 को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने कहा कि बल की अत्याधिक गतिशीलता की प्रकृति को दृष्टि में रखते हुये इसके कार्मिकों के परिवारों के लिए पृथक आवसीय सुविधाओं की व्यवस्था होनी चाहिए।



उपस्थित समुदाय को संबोधित करते हुए प्रधान मंत्री



बल के गौरव-वीरता के सर्वोच्च पदक जीतने वाले बल के पूर्व कर्मियों के साथ प्रधान मंत्री

इससे पूर्व प्रधान मंत्री ने परेड का निरीक्षण किया तथा उसकी सलामी ली। परेड में आर.ए.एफ. व महिला बटालियन की टुकड़ियां शामिल थी जिन्होंने के.रि.पु. बल बैंड की धुनों पर आकर्षक व चुस्त परेड प्रस्तुत की। परेड में आर.ए.एफ., के.रि.पु. बल संचार विंग तथा जम्मू कशमीर की झांकियों के अतिरिक्त बल के राष्ट्रीय स्तर के अर्जुन अवार्ड विजेता खिलाड़ी और शौर्यवीरता के उच्च पदक जीतने वाले बल के

सेवानिवृत्त कार्मिक शामिल थे।

के.रि.पु. बल वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन



सम्मेलन को संबोधित करते हुए महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल

के.रि.पु. बल दिवस 1996 के अवसर पर सप्ताह भर चलने वाले कार्यक्रमों के अन्त में विज्ञान भवन नई दिल्ली में 29 दिसंबर, 96 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। बल के महानिदेशक श्री मुकुन्द कौशल ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस वार्षिक सम्मेलन में पूरे देश से आए बल के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री कौशल ने कहा कि 1996 के दौरान बल भारी रूप से व्यस्त रहा। पूरे साल बल के 90 प्रतिशत कार्मिक संचालन कार्यों में तैनात रहे। इस लगातार तैनाती के कारण प्रशिक्षण कार्यक्रम भी प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि

भविष्य में हर बटालियन को एक कंपनी को रोटेशनल प्रशिक्षण के लिए मुक्त रखा जाए। इससे बल की संचालन क्षमता में सुधार होगा।

सम्मेलन में संचालन, प्रशिक्षण तथा संभरण से जुड़े विषयों पर विस्तार से विचार हुआ।

ओलंपिक में महिला वेटलिफ्टिंग शामिल कुंजारानी प्रबल दावेदार

ओलंपिक 2000 खेलों में महिला वेटलिफ्टिंग के शामिल होने से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की महिला वेटलिफ्टर कुंजारानी तथा अन्य के लिए अगले ओलंपिक में देश के लिए पदक की संभावना को बढ़ा दिया है।



वर्ल्ड वेट लिफ्टिंग के मुख्य संपादक श्री जेनो बोस्कोविस्क ने इस निर्णय की सूचना देते हुए कहा है कि विश्व ओलंपिक संगठन ने अगले ओलंपिक में महिला भारतोल्लकों को प्रतियोगिता में भाग लेने की इजाजत दे दी हैं।

उल्लेखनीय हैं कि के.रि.पु. बल की कुंजारानी देवी ने अब तक विश्व प्रतियोगिता के 18 तथा एशियायी प्रतियोगिताओं के 42 पदक जीते हैं। इस फैसले से रोमांचित कुंजारानी ने आशा व्यक्त की है कि वह सिडनी में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला होंगी। 29 वर्षीय कुंजारानी मैनचेस्टर में 3 रजत पदक जीतने वाली पहली महिला थी। के.रि.पु. बल की एक अन्य महिला भारोत्तोलक नीलम लक्ष्मी 1995 के विश्व मुकाबले गुवानझाउ में 3 रजत पदक जीत चुकी हैं।

पल्स पोलियो अभियान में के.रि.पु. बल की सहायता



दिल्ली में एक शिशु को पल्स पोलियो ड्राप देते हुए बल के महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा द्रुत कार्रवाई बल (आर.ए.एफ.) ने 7 दिसंबर, 96 को अपने सामाजिक सेवा कार्यों के तहत देशभर में भारत सरकार के पल्स पोलियो अभियान में सहायता प्रदान की। यह सहायता रोटरी इन्टरनेशनल तथा अन्य उन संगठनों को दी गई जिन्होंने देशभर में पल्स पोलियो कैम्पों का आयोजन किया था।

पल्स पोलियो अभियान में के.रि.पु. बल तथा आर.ए.एफ. ने अपनी गाड़ियों और कार्मिकों को लगाकर सहायता उपलब्ध कराई।

दिल्ली के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में के.रि.पु. बल ने पोलियो निवारण अभियान में 30 गाड़ियां और 300 कार्मिकों ने पोलियो वैक्सीन केन्द्रों से ले जाकर विभिन्न बूथों तक पहुंचा दी। बल कार्मिकों ने पल्स पोलियो बूथों पर विभिन्न कार्यों में सहायता भी पहुंचाई। इसी प्रकार गाड़ियों और कार्मिकों के रूप में सहायता जम्मू-कशमीर और उत्तर पूर्वी राज्यों सहित देशभर में प्रदान की गई।

महानिदेशक के.रि.पु. बल श्री मुकुंद बिहारी कौशल तथा महानिरीक्षक, आर.ए.एफ. श्री ए.ए. सिद्दीकी खुद दिल्ली में आर.के. पुरम (सैक्टर-4) पोलियो कैम्प में गये और उन्होंने बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई।

दिल्ली में छ: केन्द्रों के तहत 250 से अधिक बूथों में आर.ए.एफ. की 20 गाड़ियों और 120 कार्मिकों ने सहायता कार्य किया। देशभर के सात राज्यों में 36 केन्द्रों के अंर्तगत कईसौ बूथों में भी इसी प्रकार आर.ए.एफ. ने अपनी सहायता उपलब्ध कराई।

पल्स पोलियो का देशव्यापी अभियान

सरकार द्वारा 7 दिसंबर '96 की देशव्यापी रूप से चलाए गए पल्स पोलियो अभियान में के.रि.पु. बल की पूरे देश में फैली युनिटों ने सक्रिय सहयोग दिया। इस देशव्यापी अभियान की एक चित्रमयी झलक हम अपने पाठकों के लिए दे रहें हैं।



रामबाग श्रीनगर में 2 बटालियन के कार्मिक बच्चों को पोलियो ड्राप देते हुए



ग्रुप केंद्र बनतालाब में अपर उप महानिरीक्षक श्री आर.के. शर्मा ने एक बच्चे को खुराक देकर अभियान की शुरूआत की



ईटानगर, अरूणाचल प्रदेशर में 6 बटालियन के कार्मिक अभियान में,हिस्सा लेते हुए



चंडीगढ़ में अधिकारियों की पत्नियों ने भी इस अभियान में भाग लिया



महानिरीक्षक (परिचालन) जम्मू कश्मीर श्री मिश्रा श्रीनगर स्थित 55 बटालियन स्थल पर अभियान के दौरान एक बच्चे को पोलियो ड्राप देते हुए



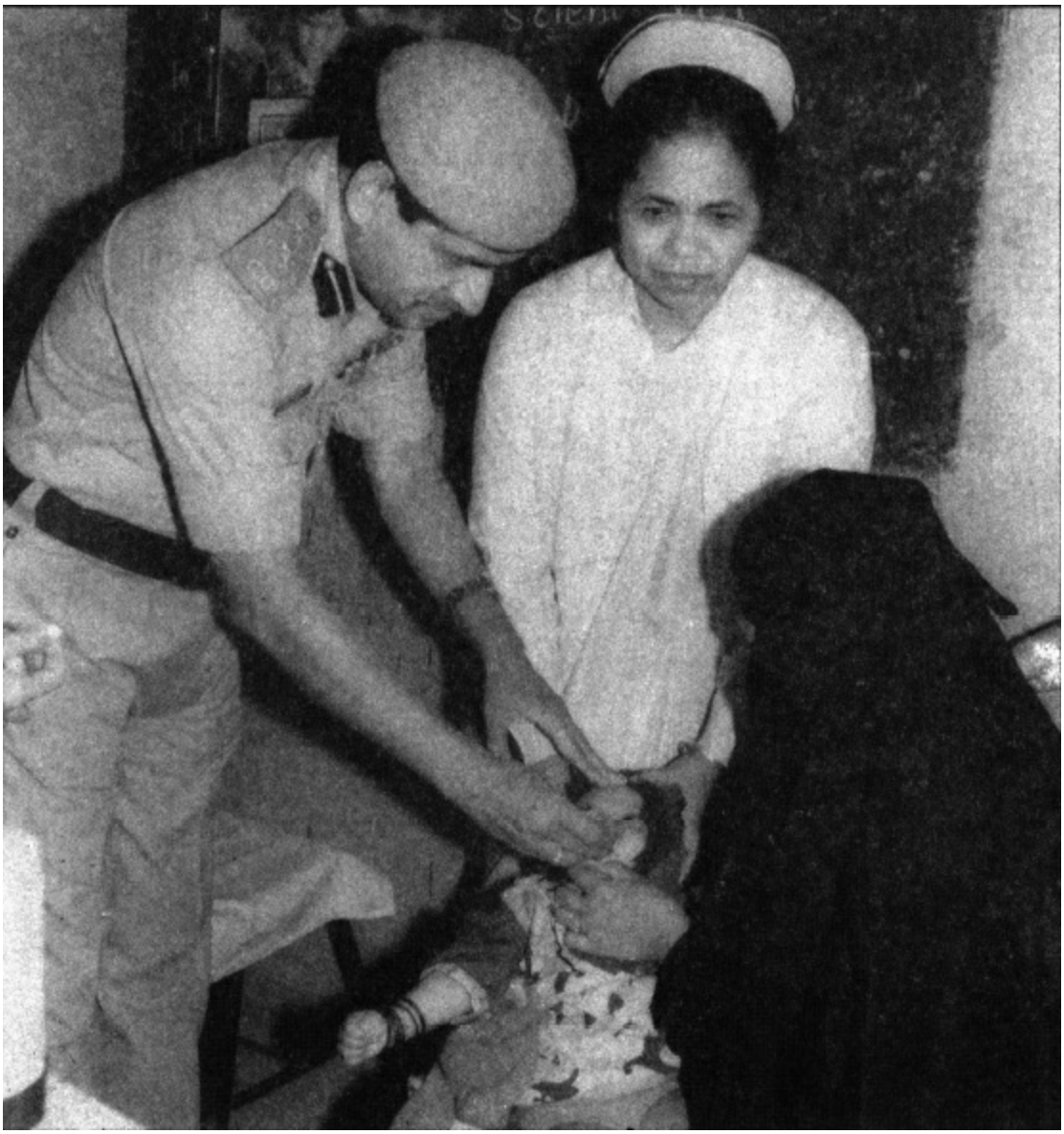
ग्रुप केंद्र गांधी नगर में भी बल द्वारा स्थापित केंद्रों में बच्चों को पोलियो ड्राप दिलवाने काफी बड़ी संख्या में लोग आए

माह नवंबर, 1996 में बल के मृत कार्मिक

के.रि.पु. बल के निम्न कार्मिक माह नवंबर, 1996 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नायक आरमर एस.वी. प्रोवत्कार (120 बटा.), नायक सुग्रीव पांडे (20 बटा.), कांस्टेबल मुहम्मद लतीफ (20 बटा.), कांस्टेबल सी. मनोज (55 बटा.), ला. नायक शाजी चाको (6 बटा.), वाशरमैन मनोज कुमार (117 बटा.), बारबर विरेंद्र राम (129

बटा.) तथा नामक राजेन्द्र सिंह (ग्रुप केन्द्र पिंजोर)।



बेस अस्पताल हैदराबाद में एक बच्चे को पोलियो ड्राप देते मुख्य चिकित्सा अधिकारी

जोखिम निधि लाभ

माह नवंबर '1996 में केंद्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के मामलों में कुल 18,38,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए। इसी प्रकार अक्षमता के छ: मामलों में 90,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए।

जोखिम निधि 'बी' स्पेशल कल्याण योजना के अंतर्गत इस माह कोई मामला नहीं आया।

पाता राम : एक जीवंत मिसाल

केसरपुरा, पोस्ट शिव गंज, जिला आबू, राजस्थान के लगभग 80 वर्षीय श्री पाता राम से मुलाकात अतीत के कई पृष्ठों को पलटती है। पाता राम के.रि.पु. बल के उन चंद कार्मिकों में से हैं, जो के.रि.पु. बल के जन्म से ही उसके साथ जुड़े हैं और अतीत की एक सजीव धरोहर के रूप में अपनी गाथा स्वयं है। उम्र के इतने लम्बे दौर में जिंदगी के हजारों उतार चढ़ाव देख चुकी उनकी बूढ़ी आंखों में अभी भी 1939 से ले कर 1960 तक की घटनाएं यों कौंध जाती हैं, जैसे वो कल की बात हों।

उन्हें याद हैं कि पहली बटालियन के गठन के बाद कैसे उन्होंने कमांडेट जे.एफ.पर्ट के नेतृत्व में सी.आर.पी. को एक पहचान दी। अपनी जिंदगी में उन्हें दो अंग्रेज अफसरों मिस्टर जे.एफ. पर्ट और मिस्टर लैपचुर के अधीन काम करने का मौका मिला और वो आज तक उन के व्यवहार, अनुशासन और काम करने के ढंग से प्रभावित हैं।

1 जनवरी, 1918 को जन्मे पाता राम कुछ समय मिनाकर सेना तथा स्टेट मिलेटी पलिस में रहने के बाद सी.आर. पी. के गठन के समय इस में कांस्टेबल के रूप में भर्ती हो गए। 1942 में खैरपुर मीर क्षेत्र में, जो अब पाकिस्तान में पड़ता है, हूरों के उत्पात को दबाने में सी.आर.पी. ने जो कौशल दिखाया उससे उसे एक पहचान मिली। इस अभियान में पाता राम शामिल थे।

1946 में जब पाता राम नायक पद पर पदोन्नत हो चुके थे, तो अजमेर में गंभीर बंग तथा भूदिया आदि चार खूखार डाकुओं का सामना करने वाली सी.आर.पी. पार्टी का नेतृत्व पाता राम ही कर रहे थे। इन चारो खूखार डाकुओं को जीवित गिरफ्तार करने के जांबाज कारनामे के लिए ब्रिटिश सरकार ने पाता राम को किंग्स पुलिस एंड फायर सर्विस मेडल फार गैंलटरी से सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान प्रदान करने के लिए माउंट आबू के रेजिडेंट मिस्टर लोथियन तथा इंदौर के रेजीडेंट आर.पावर खुद नीमच आए।



पाता राम

इस के बाद तो पाता राम देश के लगभग हर भाग में किसी न किसी वक्त तैनात रहे।

आजादी से पहले कलकत्ता में पुलिस विद्रोह के दौरान वह वहां गए। बम्बई में मराठा उपद्रव के दौरान पंडित नेहरू को मराठों द्वारा घेर लिए जाने के बाद, पाता राम और उन के साथी ही थे, जिन्होंने पंडित नेहरू को बचाया।

आजादी के बाद जूनागढ़ पर कब्जे के दौरान सरदार पटेल के साथ पाता राम और उसके साथी ही थे। पाता राम आज भी गर्व से उस दिन को याद करते हैं कि जब सरकार पटेल ने उनसे हाथ मिलाया और कहा कि अगर तुम लोग न होते, तो शायद जूनागढ़ हाथ से निकल जाता।

ऐसी न जाने कितनी घटनाएं, थोड़ी सी बात छिड़ने पर उन की आंखों मे कौंध जाती हैं। उनके पास अपने कारनामों की बातों का अनवरत चलने वाला खजाना है। डाकू मानसिंह, पुतली बाई जैसे डकैतों का सामना, आजादी से पहले और आजादी के बाद वह कहां कहां तैनात किये गए, और उन्होंने क्या क्या किया सब उन्हें याद है।

साथ ही उन्हें याद हैं कि वह 17 रूपये की तनख्वाह पर भर्ती हुए थे तथा 135 रूपये पर 1964 में सेवा निवृत्त हुए। इस दौरान उन्होंने 10 बटालियनें खड़ी करने में योगदान दिया और हर बटालियन में काम किया। शुरू में उन्हें मात्र 40 रूपये पेंशन मिलती थी, जो अब बढ़ कर 1000 रूपये हो गयी हैं। साथ ही उन्हें 100 रूपये मेडल के मिलते हैं। मगर यह अपर्याप्त हैं। उन्हें याद हैं कि जब उन्हें पदक मिला, तो आश्वासन दिया गया था कि उन्हें रहने के लिए जमीन दी जाएगी।

मगर उस जमीन को पाने की आशा अब उन की बूढी आंखों में धुंधलाने लगी हैं। वह भावुक हो कर बताते हैं कि अपने गांव से उन्होंने 18 आदमी सी.आर.पी. में भर्ती कराए थे। अब उन में से कोई भी बाकी नहीं हैं। लेकिन गांव का सब से बूढ़ा आदमी होने के बावजूद उन की आंखों में अभी भी जिंदगी को भरपूर जी लेने की अदम्य लालसा है और यही लालसा उन्हें उम्र के इस दौर में भी बल के 57वें वार्षिकोत्सव पर शिरकत के लिए निमंत्रण मिलने पर दिल्ली खींच लायी। दिल्ली में वार्षिक परेड के दौरान जिप्सी में सवार होन पर उन का उत्साह और चेहरे पर उमंग वही थी, जो कभी 1939-40 में पहली बार परेड में शामिल होते वक्त रही होगी।

–भेंट - अनिल गुप्ता

पंजाब के सबक

-भूदेव चक्रवर्ती

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में अपने सेवाकाल के दौरान मुझे पंजाब में काम करने का दो बार सौभाग्य प्राप्त हुआ। पहले 1987-88 में और फिर 1992 में। हम लोगों के लिए यह समय काफी कठिनाइयों तथा चुनौतियों से भरा था, क्योंकि निरंतर बढ़ रही आतंकवादी गतिविधियों पर काबू पाने की जिम्मेदारी हम पर थी। अत्यधिक कठिन परिस्थितियों में काम करते हुए भी हम के.रि.पु. बल अधिकारियों को अपनी ड्यूटी काफी अर्थपूर्ण लगती थी, तथा यहां के अनुभव हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण थे। हम सभी महसूस करते थे कि हमारे सामने एक महत्वपूर्ण मिशन हैं, जिसे हमने अपनी योग्यता के बल पर हासिल करना है। देश की एकता और अखंडता उस वक्त दांव पर लगी हुयी भी, और यह एक ऐसा मुद्दा था, जिस पर किसी भी तरह का समझौता संभव नहीं था।

पंजाब में जिस चीज ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया, वह थी यहां के लोगों की हिम्मत। विभिन्न विषमताओं के बावजूद यहां के लोगों ने जीवन के प्रति आस्था नहीं खोयी। आतंकवाद के चरम दिनों में भी यहां की भूमि पर साम्प्रदायिक सौहार्द, निश्चित ही निहित स्वार्थी तत्वों के मन में ईर्ष्या उत्पन्न करता होगा।

के.रि.पु बल तथा अन्य सुरक्षा बलों के सहयोग से पंजाब पुलिस ने आतंकवाद का प्रशंसनीय रूप से सामना किया। पंजाब में सामान्य स्थितियों को बहाल करने में पंजाब पुलिस की भूमिका यहां के नागरिकों से किसी भी मामले में कम नहीं थी जिन्होंने कि साहस पूर्वक आतंकवाद का सामना करते हुए मुंह तोड़ जवाब दिया।

मेरा ऐसा मानना हैं कि आतंकवाद या द्रोह की ऐसी समस्या से वह चाहे देश के किसी भी भाग में हो मानव अधिकारों को ध्यान में रखते हुए तथा मानव मूल्यों का पूरा सम्मान करते हुए सही ढंग से निबटना चाहिए। सुरक्षा बलों के कार्मिकों के मस्तिष्क में यह सर्वोपरि रहना चाहिए कि सामान्य आदमी को किसी भी सूरत में किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचे।

अपने पंजाब प्रवास के दौरान यहां के लोगों से बात कर मुझे अक्सर हार्दिक प्रसन्नता हुयी।

एक बार मैं कहीं एक कानफ्रेंस में शामिल होने जा रहा था। मैं अपनी कार में था, जबकि मेरे सुरक्षाकर्मी एक दूसरी गाड़ी में मेरे साथ थे। जैसा कि सामान्यत: पंजाब की सड़के अच्छी हैं, अत: हमारा सफर मजे से कट रहा था। अचानक में क्या देखता हूं मेरी कार में कुछ ही आगे स्कूल के बच्चों से भरा हुआ एक रिक्शा अत्यधिक बोझ के कारण टूट जाता है तथा बच्चे सड़क पर गिर जाते हैं। हमने एक अच्छे सैनिक की तरह कान्फ्रेंस में समय से पहुंचने की अपेक्षा तत्काल वहीं रूक कर बच्चों की मदद करना अधिक बेहतर समझा। बच्चे बूरी तरह डर गए थे। हमने उन्हें रिक्शे के नीचे से निकाला, तथा देखा कि उन्हें मामूली चोटें आयी हैं, मगर वो डर ज्यादा गए हैं। कुछ बच्चे बूरी तरह रो रहे थे। मैं ने कुछ बच्चों को अपनी कार में बैठाया तथा कुछ को सुरक्षाकर्मियों की गाड़ी में। यह हमारे लिए एक असामान्य मगर बेहद जरूरी मानवतावादी कार्य था। हम उन्हें मुख्य सड़क से दूर एक गांव में उनके स्कूल तक ले

गए। मैं स्कूल की मुख्य अध्यापिका से मिला और बच्चों को उनकी निगरानी में छोड़ दिया। हमारे व्यवहार के प्रति वह काफी कृतज्ञ महसूस कर रही थी। मगर मैं ने उसे विनम्रता पूर्वक कह दिया कि हमने ऐसा विशेष कुछ भी नहीं किया। इतना तो एक सामान्य नागरिक होने के नाते हम सभी को करना ही चाहिए।

मैं अपनी एक यूनिट के सदस्यों द्वारा किए गए रक्तदान को भी नहीं भूल सकता। इस यूनिट की एक टुकड़ी पर कुछ ही दिनों पहले एक घात लगायीं गयी थी, जिसमें कुछ जवान मारे गए थे। लेकिन बावजूद इसके यूनिट के कार्मिक रक्तदान कर रहे थे, ताकि पंजाब में किसी की वक्त पर जान बचायी जा सके।

लम्बे राष्ट्रपति शासन के बाद पंजाब में 1992 के जाडे में विधान सभा चुनाव हुए। इस दौरान पंजाब में अपनी तैनाती के कारण मुझे पंजाब के दूरस्थ गांवों को नजदीक से देखने का मौका मिला। मुझे लगा कि पंजाब के गांवों की जिंदगी अधिक नजदीक से गुंथी हुयी हैं। जिस तरह वहां बुजुर्गों का सम्मान किया जाता है, तथा औरतों की इज्जत की जाती हैं, वह देख कर मेरा मन प्रसन्न हो उठा। जब भी मैं किसी ग्रामीण के घर जाता था, मैंने यह आदत बना ली थी कि सबसे पहले परिवार के बुजुर्गों के पास जा कर उनके पांव छूता था और फिर बच्चों के साथ बात करने के बाद ही परिवार के मुखिया से मुखातिब होता था। मुझे लगा कि इस तरह की बातचीत हृदयों के बीच सेतु बनाने का काम करती थी।

चुनाव के बाद पंजाब में लोकप्रिय सरकार की स्थापना हुयी तथा समय के साथ साथ वहां शांति भी स्थापित हो गयी।

मुझे यह कहने में संकोच नहीं हैं कि पंजाब के लोगों ने हर तरह की मुसीबतों को पार करते हुए आतंकवाद के विरूद्ध जंग जीत ली। पंजाब पुलिस, के.रि.पु. बल तथा अन्य सुरक्षा बलों ने इस जंग में अपनी अपनी भूमिका बाखूबी निभायी। शायद पंजाब में आतंकवाद के विरूद्ध इस लड़ाई से सुरक्षा बल जो सबक ले सकते हैं, वह यह हैं कि उनका कार्य लोगों की मदद करना तथा उन्हें सहयोग देना हैं, और वे अपना कार्य अधिक कुशलता से तभी कर पाएंगे, यदि जनता में उनकी छवि अच्छी है।



30 नवंबर *'96* को श्रीनगर *(*गढ़वाल*)* से शुरू हुआ के.रि.पु. बल का महिला राफ्टिंग अभियान *4* दिसंबर *'96* को ऋषिकेश में पूरा हुआ


रजि. न. 4767/87